●वर्ष : 16 ●अंक : 225 ●मूल्य : 02 रूपया मात्र पृष्ठ : 08 RNI No. DELHIN/2008/23928

दैनिक लोकतंत्र की शान

लोकतंत्र का स्तंभ

दिल्ली से प्रकाशित

रविवार 08 दिसम्बर 2024

Mfg & mkt by.. ANGEN PHARMACEUTICALS (OPC) PRIVATE LIMITED

Distributorship ke liye contact Karen .
(9315755133 / ya email Karen)
angenpharmaceuticals@gmail.com

समाचार

किसानों के दिल्ली चलो विरोध मार्च पर बोले पंजाब के मंत्री, मांग केंद्र सरकार से संबंधित, राज्य से नहीं

नूना न्यूज एजेंसी।

पंजाब। की सामाजिक न्याय मंत्री बलजीत कौर ने शनिवार को किसानों के चल रहे 'दिल्ली चलो' विरोध मार्च के लिए केंद्र सरकार को जिम्मेदार ठहराते हुए इसकी आलोचना की और इस बात पर जोर दिया कि किसानों की मांग सीधे केंद्र में है, राज्य में नहीं। एएनआई से बात करते हुए कौर ने कहा, 'किसानों की सभी मांगें केंद्र सरकार से संबंधित हैं, राज्य सरकार से नहीं।' पंजाब के किसानों ने मुआवजे और न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के लिए कानूनी गारंटी की मांग को लेकर संभू सीमा पर विरोध प्रदर्शन की एक नई लहर शुरू कर दी है। बलजीत कौर ने अपने किसानों के समर्थन के लिए पंजाब के प्रयासों पर प्रकाश डाला और केंद्र सरकार से उनकी शिकायतों का समाधान करने का आह्वान किया। कौर ने कहा कि पंजाब एक कृषि समृद्ध राज्य है और केंद्र सरकार को किसानों की मांगों पर विचार करना चाहिए। पंजाब ने किसानों को मदद प्रदान करने की पूरी कोशिश की है। इससे पहले दिन में, भाजपा सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने कहा कि किसानों को अपनी जरूरतों को रखने के लिए कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान से मिलना चाहिए। खंडेलवाल ने कहा कि हम सभी जानते हैं कि हमारे देश में किसानों का सबसे ज्यादा सम्मान किसी ने किया है तो वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं। समय-समय पर पीएम मोदी और केंद्र सरकार ने कृषि क्षेत्र के विकास के लिए कई कदम उठाए हैं। अगर अब भी कुछ बाकी है तो किसानों को कृषि मंत्री और अन्य सरकारी अधिकारियों से मिलकर अपनी जरूरतें रखनी चाहिए। पंजाब के किसान नेता सरवन सिंह पंढेर ने शनिवार को कहा कि उन्हें अपने मुद्दों के समाधान के लिए बातचीत के लिए केंद्र से कोई संदेश नहीं मिला है और कहा कि 101 किसानों का एक समूह 8 दिसंबर को फिर से दिल्ली के लिए अपना मार्च शुरू करेगा। शुक्रवार को प्रदर्शनकारी किसानों ने अपना मार्च स्थगित कर दिया। पंजाब-हरियाणा सीमा पर उन्हें रोकने वाले सुरक्षाकर्मियों द्वारा छोड़े गए आंसू गैस के गोले के कारण उनमें से कुछ के घायल होने के बाद उन्होंने दिन भर राष्ट्रीय राजधानी तक पैदल मार्च किया। किसान न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के लिए कानूनी गारंटी समेत विभिन्न मांगों को लेकर दबाव बना रहे हैं।

हमारी संस्कृति में सेवा सबसे बड़ा धर्म, अस्था और उपासना से भी ऊंचा स्थान, पीएम मोदी का बयान

अहमदाबाद। में आयोजित कार्यकर्ता सुवर्ण महोत्सव को वर्चुअली संबोधित करते हुए पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि मैं भगवान स्वामी नारायण को नमन करता हूं- आज 103वीं जयंती है। उन्होंने आगे कहा कि जब यूक्रेन में युद्ध बढ़ने लगा तो भारत सरकार ने तुरंत वहां फंसे भारतीयों को निकालने का फैसला किया। इसके बाद बड़ी संख्या में भारतीय पोलैंड पहुंचने लगे। लेकिन चुनौती थी कि उस युद्ध के माहौल में पोलैंड पहुंचे भारतीयों को कैसे अधिक से अधिक मदद पहुंचाई जाए। मोदी ने आगे कहा कि उस समय मेरी BAPS के एक संत से बात हुई और मुझे लगता है रात के 12 या 1 बजे होंगे। मैंने उनसे अनुरोध किया कि बड़ी संख्या में पोलैंड पहुंच रहे भारतीयों की मदद के लिए मुझे आपके समर्थन की आवश्यकता है और मैंने देखा कि कैसे आपका संगठन रातोंरात पूरे यूरोप से बीएपीएस कार्यकर्ताओं को एक साथ लाया। इअढर की ये ताकत।

किसानों का आज फिर दिल्ली कूच : केंद्र से नहीं मिला बातचीत का न्योता

नूना न्यूज एजेंसी।

दिल्ली। फसलों पर एमएसपी की मांगों को लेकर 101 मरजीवड़े किसानों का जत्था रविवार दोपहर 12 बजे फिर से दिल्ली के लिए कूच करेगा। शंभू बॉर्डर पर शनिवार शाम को पत्रकार वार्ता में किसान नेता सरवण सिंह पंधेर ने कहा कि शनिवार का दिन उन्होंने केंद्र से बातचीत के लिए रखा था, लेकिन उन्हें कोई न्योता नहीं मिला। केंद्रीय मंत्री व नेता अलग-अलग मंचों पर किसानों से बातचीत की बात कह रहे हैं लेकिन किसी ने भी आगे आकर इसका प्रयास नहीं किया। इसी वजह से उन्होंने फिर से पैदल दिल्ली मार्च का फैसला किया है। पंधेर ने कहा कि उनका मार्च पूरी तरह शांतिपूर्ण और अनुशासन में ही रहेगा। किसानों के पास न पहले हथियार थे और न अब हैं।

हरियाणा में भारी सुरक्षाबल की तैनाती

›› केंद्र का किसान विरोधी चेहरा हो चुका बेनकाब

पंधेर ने कहा- भाजपा नेता कहते थे कि अगर किसानों ने मांगों को लेकर बात करनी है, तो पैदल क्यों नहीं आते हैं। अब किसान पैदल देश की राजधानी जाना चाहते हैं तो उन्हें क्यों नहीं जाने दिया जा रहा। इससे केंद्र का किसान विरोधी चेहरा बेनकाब हो गया है। इस मौके पर पंधेर ने केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज चौहान की ओर से एमएसपी को लेकर दिए जा रहे बयानों को गुमराहपूर्ण बताया। कहा कि किसान फसलों पर एमएसपी की कानूनी गारंटी मांग रहे हैं। सरकार अगर देश को परंपरागत फसली चक्र से बाहर निकालना चाहती है, तो इस मांग को पूरा करना जरूरी है। इससे जमीनी पानी के स्तर में भी सुधार होगा।

››› जान हथेली पर रखकर आगे बढ़ेंगे

पंधेर ने कहा कि रविवार के दिल्ली कूच को लेकर किसान पूरी तरह से उत्साहित हैं। किसान अपनी जान हथेली पर रखकर आगे बढ़ेंगे। हरियाणा पुलिस के जबर का जवाब सब्र के साथ दिया जाएगा। पंधेर ने बताया कि उधर किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल का भी आमरण अनशन खनौरी बॉर्डर पर जारी है। सेहत में कुछ गिरावट जरूर आई है, लेकिन उनके हौंसले बुलंद हैं। किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल ने कहा है कि वे डरने वाले नहीं हैं। जीवन की आखिरी सांस तक लड़ाई लड़ी जाएगी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जान से मारने की धमकी

›› मुंबई पुलिस को मिला मैसेज, जांच शुरू

नूना न्यूज एजेंसी।

मुंबई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जान से मारने की धमकी दी गई। मुंबई पुलिस को शनिवार को व्हाट्सएप पर यह मैसेज मिला। मैसेज मिलने के बाद पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। जांच में सामने आया है कि पीएम को जान से मारने की धमकी देने वाला मैसेज राजस्थान के अजमेर से भेजा गया था।

मैसेज भेजने वाले संदिग्ध की तलाश में पुलिस टीम को अजमेर भेजा गया है।

पुलिस ने बताया कि मुंबई ट्रैफिक पुलिस की हेल्पलाइन के व्हाट्सएप नंबर पर कुछ घंटे पहले यह संदेश भेजा गया। इसमें कहा गया कि दो आईएसआई एजेंटों और पीएम मोदी को निशाना बनाने के लिए बम ब्लास्ट करने की साजिश की जा रही है। जांचकताओं को संदेह है कि संदेश भेजने वाला मानसिक रूप से परेशान व्यक्ति है या शराब के नशे में उसने संदेश भेजा है। पुलिस ने मामले में एफआईआर दर्ज कर ली है। मुंबई ट्रैफिक पुलिस की हेल्पलाइन पर पहले भी ऐसे धमकी भरे संदेश मिल चुके हैं। इससे पहले 27 नवंबर को मुंबई पुलिस कंट्रोल रूम में फोन करके पीएम मोदी को नुकसान पहुंचाने की धमकी दी गई थी। कॉल का पता पश्चिमी उपनगरों के अंबोली से लगाया गया और इसके बाद मामला दर्ज किया गया। मुंबई पुलिस की एक टीम ने महिला कॉलर का पता लगाया और उसे पूछताछ के लिए हिरासत में ले लिया था। जांच के बाद महिला मानसिक रूप से अस्थिर पाई गई और कॉल को 'शरारत' के तौर पर पाया गया। अधिकारी ने बताया कि महिला का कोई पिछला आपराधिक रिकॉर्ड नहीं है।

सलमान खान को जान से मारने की धमकी का संदेश भी मिला था

मुंबई ट्रैफिक पुलिस की व्हाट्सएप हेल्पलाइन पर 7 नवंबर को कई संदेश आए, जिसमें कहा गया था कि संदेश भेजने वाला बिश्नोई गिरोह का सदस्य है। इस संदेश में चेतावनी दी गई थी कि अगर सलमान खान ने पांच करोड़ रुपये नहीं दिए तो उनकी हत्या कर दी जाएगी। भेजने वाले ने चेतावनी दी कि वह 'मैं सिकंदर हूं' गीत के लेखक को भी मार देगा। हालांकि पुलिस ने सक्रियता दिखाते हुए आरोपी को पकड़ लिया था।

ज्वलंत मुद्दा

सम्पादकीय

देवेंद्र फडणवीस भाजपा के लिए चाणक्य बन चमक रहे हैं

महाराष्ट्र में सरकार गठन की राजनीति में दस दिन की सघन वाताओं और खासी नाटकीयता के बाद आखिर अंधेरा छंट गया और देवेंद्र फडणवीस तीसरी बार महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बनने जा रहे हैं। फडणवीस का मुख्यमंत्री बनना न केवल महाराष्ट्र बल्कि देश की राजनीति को एक नई दिशा एवं दृष्टि देगा। क्योंकि फडणवीस ने अपने राजनीतिक कौशल से न केवल नये मानक गढ़े हैं बल्कि सकारात्मक राजनीति को नये आयाम दिये हैं। हार का कारण स्वयं को मानने एवं जीत का श्रेय पार्टी एवं सहयोगी दलों को देने की विराट सोच रखने वाले फडणवीस को अब भाजपा के शीर्ष नेताओं में शुमार किया जाने लगा है। फडणवीस ने राजनीति के चाणक्यों के चक्रव्यूहों को कुछ ऐसा भेदा कि लोग उन्हें आधुनिक अभिमन्यु भी कहने लगे। बात सही भी है फडणवीस अब किसी चक्रव्यूह में फंसते नहीं बल्कि उसे भेदकर बाहर निकलते हैं। सामने कोई भी हो शह और मात के खेल में उनकी जीत अब गारंटी बन चुकी है। वे भाजपा के लिए चाणक्य हैं तो विपक्ष के लिए अबूझ पहेली। पिछले एक दशक से महाराष्ट्र की राजनीति उनके ही इर्द-गिर्द घूम रही है। ऐसे कद्दावर राजनेता के नेतृत्व में निश्चित ही अगली पारी सफल होने वाली है। बावजूद इसके विशाल बहुमत वाली इस सरकार के मुखिया के तौर पर फडणवीस की यह पारी किसी भी रूप में कम चुनौतीपूर्ण नहीं है। फिर भी महाराष्ट्र को राजनीतिक स्थिरता और विकास के नए दौर में ले जाने की जिम्मेदारी निभाते हुए वह हर चुनौती के पार जायेंगे, लोगों ने उनकी पार्टी और सहयोगी दलों पर जो भरोसा जताया है, महायुति सरकार उनकी उम्मीदें पूरी करके एक नये इतिहास का सृजन करेंगी, इसमें कोई शंका दूर तक नजर नहीं आती। तीसरी बार मुख्यमंत्री का ताज पहनने वाले देवेंद्र फडणवीस ने प्रखर राजनेता, अजातशत्रु, दूरदर्शी नायक एवं महाराष्ट्र-निमार्ता के रूप में न केवल देश के लोगों का दिल जीता है, बल्कि विरोधियों के दिल में भी जगह बनाकर, अमिट यादों को जन-जन के हृदय में स्थापित कर अनेक राजनीतिक कीर्तिमान स्थापित किये हैं। फडणवीस यह नाम महाराष्ट्र राजनीतिक इतिहास का एक ऐसा स्वर्णिम पृष्ठ है, जिससे एक सशक्त जननायक, स्वप्नदर्शी राजनायक, आदर्श चिन्तक, नये महाराष्ट्र के निमार्ता, कुशल प्रशासक के साथ-साथ राजनीति को एक खास रंग देने की महक उठती है। उनके व्यक्तित्व के इतने रूप हैं, इतने आयाम हैं, इतने रंग हैं, इतने दृष्टिकोण हैं, जिनमें वे व्यक्ति और नायक हैं, प्रशासक और राजनेता हैं, प्रबुद्ध और प्रधान है, वक्ता और नेता हैं, शासक एवं लोकतंत्र उन्नायक हैं।

SYED ZAKI HAIDER
(EDITOR / PUBLISHER CUM MANAGING DIRECTOR
OF NAI UMMEED NEWS AGENCY
MOBILE NO. 9911371802
EMAIL SYEDZAKIHAIDER786@GMAIL.COM

ईडी ने अटैच की प्रमोटर्स की 388 करोड़ की संपत्ति

अब तक 2295 करोड़ की प्रॉपर्टी कुर्क

नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने महादेव ऑनलाइन सट्टेबाजी मामले में चल रही मनी लॉन्ड्रिंग जांच में लगभग 388 करोड़ रुपये की नई संपत्ति जब्त की है। जांच में छत्तीसगढ़ के उच्च पदस्थ राजनेताओं और नौकरशाहों के साथ कथित संबंधों का खुलासा हुआ है। कुर्क की गई संपत्तियों में चल और अचल दोनों संपत्तियां शामिल हैं। इनमें मॉरीशस स्थित मेसर्स टानो इन्वेस्टमेंट अपॉर्चुनिटीज फंड द्वारा किया गया निवेश शामिल है, जो विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (एफपीआई) और विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) के माध्यम से दुबई स्थित हवाला ऑपरेटर हरि शंकर टिबरेवाल से जुड़ा हुआ है। इसमें कहा गया है कि अचल संपत्तियां छत्तीसगढ़, मुंबई और मध्य प्रदेश में स्थित हैं और सट्टेबाजी ऐप के प्रमोटरों, संचालकों और उनके सहयोगियों के नाम पर हैं। धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत 5 दिसंबर को एक अनंतिम कुर्की आदेश जारी किया गया था। अब तक, ईडी ने जांच के तहत 2,295.61 करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त, जब्त या जब्त कर ली है। जांच के परिणामस्वरूप 11 लोगों की गिरफ्तारी हुई और चार आरोपपत्र दाखिल किए गए। संघीय एजेंसी ने पहले दावा किया है कि महादेव ऑनलाइन सट्टेबाजी (एमओबी) ऐप की उसकी जांच में छत्तीसगढ़ के कई उच्च पदस्थ राजनेताओं और नौकरशाहों के लिंक उजागर हुए हैं। ऐप के प्रमुख प्रमोटर, सौरभ चंद्राकर और रवि उप्पल भी राज्य से हैं। ईडी के अनुसार, ऐप एक व्यापक सिंडिकेट है जो उपयोगकताओं को नामांकित

करके, उपयोगकर्ता आईडी बनाकर और बेनामी बैंक खातों के एक जटिल नेटवर्क के माध्यम से धन शोधन कर-के अवैध ऑनलाइन सट्टेबाजी की सुविधा देता है। ईडी ने टिबरेवाल पर लॉन्ड्रिंग गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का आरोप लगाया है और उनकी कथित संलिप्तता की जांच जारी है। एजेंसी ने एमओबी ऐप के व्यवस्थित संचालन पर प्रकाश डाला है, जिसमें पता लगाने से बचने के लिए स्तरित लेनदेन और अपतटीय संस्थाओं का उपयोग शामिल है।

हाईकोर्ट ने केरल सरकार को लगाई फटकार, पूछा-

भूस्खलन पीड़ितों के लिए राहत कोष वितरण में देरी क्यों

›› 'राहत कोष का सही तरीके से नहीं हो रहा प्रबंधन'

हाईकोर्ट ने यह भी टिप्पणी की कि ऑडिट प्रक्रिया ठीक से नहीं की जा रही है और कोष (फंड) का सही तरीके से प्रबंधन नहीं हो रहा है। कोर्ट ने राज्य सरकार और राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एसडीएमए) को आदेश दिया कि वे राहत कोष के सही आंकड़े पेश करे। कोर्ट ने केरल सरकार से कहा कि आगामी गुरुवार तक वह 677 करोड़ रुपये के राज्य आपदा प्रतिक्रिया कोष (एसडीआरएफ) से पुनर्वास के लिए आवंटित राशि, खर्च की गई राशि के आंकड़े कोर्ट में पेश करे।

नूना न्यूज एजेंसी।

केरल। हाईकोर्ट ने शनिवार को राज्य सरकार और उसके आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एसडीएमए) की

फटकार लगाई। कोर्ट ने कहा कि वायनाड में भूस्खलन प्रभावित क्षेत्रों में पुनर्वास के लिए जो राहत कोष का आंकड़ा राज्य सरकार ने पेश किया, वह असंगत है। जस्टिस ए.के. जयशंकरन नांबियार और जस्टिस मोहम्मद निआस सी.पी की बेंच ने सवाल किया कि राहत कोष के वितरण में महीनों का समय क्यों लग रहा है और यह स्थिति अब एक नई समस्या बन रही है।

›› 'दूसरों को दोषी ठहराना बंद करे राज्य सरकार'

सुनवाई के दौरान बेंच ने राज्य सरकार से यह भी पूछा कि वह दूसरों को दोषी ठहराना बंद करे और आपदा पीड़ित लोगों का अपमान न करे। कोर्ट का यह आदेश वायनाड जिले के तीन गांवों में जुलाई में आए भूस्खलन के बाद राहत और पुनर्वास योजनाओं के संदर्भ में आया। भूस्खलन में 200 से अधिक लोगों की जान चली गई थी। हाईकोर्ट ने इस मामले की सुनवाई के दौरान राज्य सरकार से पूछा कि आपदा से पहले राहत कोष में कितनी राशि थी, इसमें से कितनी राशि उपयोग के उपलब्ध है और केंद्र की ओर से दी गई मदद का कितना हिस्सा अब तक खर्च किया गया है।

कोर्ट ने कहा कि जब केंद्र से मदद मांगी जा रही हो, तो राज्य सरकार को सही आंकड़े पेश करने चाहिए।

महाराष्ट्र डिप्टी सीएम अजित पवार की संपत्तियां इनकम टैक्स से मुक्त

दिल्ली की बेनामी ट्रिब्यूनल का ऑर्डर

नूना न्यूज एजेंसी।

मुंबई। महाराष्ट्र डिप्टी सीएम अजित पवार को बड़ी राहत मिली है. अब उनकी संपत्तियां इनकम टैक्स से मुक्त कर दी गई है. दिल्ली की बेनामी ट्रिब्यूनल का ऑर्डर आया है. उनकी सीज संपत्ति को फ्री कर दिया गया है। आपको बता दें कि अजित पवार बेटे पार्थ पवार और पत्नी सुमित्रा पवार की संपत्ति इनकम टैक्स ने सीज की थी. इस मामले में फैसला आना अजित पवार और उनकी फैमिली के लिए काफी राहतभरा होगा।

2021 में की गई थी संपत्ति सीज

महाराष्ट्र में महायुति सरकार के उपमुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के एक दिन बाद एनसीपी प्रमुख अजित पवार को शुक्रवार को बेनामी संपत्ति से जुड़े एक मामले में बड़ी राहत की खबर मिली. दिल्ली की बेनामी संपत्ति ट्रिब्यूनल ने आयकर विभाग द्वारा सीज उनकी संपत्ति मुक्त करने का आदेश दिया है. जानकारी के मुताबिक, साल 2021 में आयकर विभाग ने बेनामी संपत्ति के मामले में अजित पवार, उनके बेटे पार्थ पवार और पत्नी सुमित्रा पवार की संपत्ति सीज की थी।

आयकर विभाग ने किया था क्या दावा

विभाग ने 7 अक्टूबर 2021 को विभिन्न कंपनियों पर छापेमारी के दौरान कुछ कागजात बरामद किए थे. उसका दावा था कि ये कागजात अजित परिवार और उनके परिवार की बेनामी संपत्तियों के थे. बेनामी रोकथाम अपीलीय न्यायाधीकरण ने इन आरोपों को खारिज कर दिया था. इसके बाद आयकर विभाग ने न्यायाधीकरण के फैसले के खिलाफ अपील

की थी जिसे न्यायाधीकरण ने खारिज कर दिया। महाराष्ट्र में एक बार फिर भाजपा के नेतृत्व में महायुति की सरकार बनी है. भाजपा के दिग्गज नेता देवेंद्र फडणवीस ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली जबकि उनके साथ अजित पवार और शिवसेना नेता एकनाथ शिंदे ने उपमुख्यमंत्री के रूप में शपथ ग्रहण की।

सुखबीर बादल पर गोली चलाने वाले का हो सम्मान : केंद्रीय मंत्री रवनीत बिट्टूरवनीत सिंह बिट्टू

नूना न्यूज एजेंसी।

नई दिल्ली। पंजाब के पूर्व उपमुख्यमंत्री सुखबीर सिंह बादल पर हमले की केंद्रीय राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ने कड़ी निंदा की है. साथ ही उन्होंने इस हमले को लेकर कहा कि शिरोमणि अकाली दल को नारायण सिंह चौड़ा का सम्मान करना चाहिए. उन्होंने जत्थेदार साहिबों से अपील की कि वे अकाल तख्त साहिब के बगल में बने म्यूजियम में नारायण सिंह चौड़ा की तस्वीर लगाकर उन्हें सम्मानित करें। बिट्टू ने कहा कि सुखबीर सिंह बादल पर यह हमला तब हुआ जब उन्होंने गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी की. उन्होंने कहा कि सुखबीर सिंह बादल ने खुद बेअदबी की बात स्वीकार की तो नारायण सिंह चौड़ा ने भावुक होकर उन पर गोली चला दी, जो उनसे चूक गई और दीवार में जा लगी। बिट्टू ने कहा कि नारायण सिंह चौड़ा 'राष्ट्र के रत्न' हैं और उनके जैसे व?यक्ति की तस्वीरें अकाल तख्त साहिब से जुड़े म्यूजियम में लगाई जाएं. रवनीत सिंह बिट्टू ने तंज कसते हुए कहा कि जिस तरह बेअंत सिंह के हत्यारे को बिक्रम

सिंह मजीठिया को गले लगा चुके हैं, उसी तरह अब नारायण सिंह चौड़ा को भी गले लगाना चाहिए।

SGPC उठाए मामले का खर्च : बिट्टू

बिट्टू ने कहा कि नारायण सिंह चौड़ा ने गुरु की भावना से सुखबीर सिंह बादल पर पर गोली चलाई है. इसलिए उनके खिलाफ कोई मामला दर्ज नहीं किया जाना चाहिए और यदि दर्ज भी है तो एसजीपीसी को मामले का सारा खर्च अदा कर चौड़ा को बरी करवाना चाहिए।

स्वर्ण मंदिर के बाहर हुआ था हमला

गौरतलब है कि स्वर्ण मंदिर में अपने प्रायश्चित के दूसरे दिन चार दिसंबर को पूर्व आतंकी नारायण सिंह चौड़ा ने उन पर गोली चला दी थी, जिसमें बादल बाल-बाल बच गए. सादे कपड़ों में मौजूद पुलिसकर्मियों ने आरोपी को पकड़ लिया और बाद में उसे गिरफ्तार कर लिया गया. हमले के वक्त बादल स्वर्ण मंदिर के गेट के पास सेवा दे रहे थे। बादल सिखों की सर्वोच्च संस्था अकाल तख्त द्वारा सुनाई गई धार्मिक सजा काट रहे हैं. यह सजा पंजाब में 2007 से 2017 तक शिरोमणि अकाली दल और उसकी सरकार द्वारा की गई 'गलतियों' के लिए दी गई है।

यूपी: गोरखपुर में भीषण सड़क हादसे में 5 की मौत, 3 गंभीर रूप से घायल

गोरखपुर। उत्तर प्रदेश के गोरखपुर के कैंट थानाक्षेत्र के मोहद्दीपुर नहर पुल के पास मंगलवार रात भीषण सड़क हादसे में 5 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई. तीन बाइकों की आपस में हुई जोरदार टक्कर में 3 पुरुष और 2 बच्चों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया. जबकि 3 अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए. हादसा उस समय हुआ, जब मृतक एक मांगलिक कार्यक्रम से वापस लौट रहे थे. घायलों को तुरंत जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनकी हालत गंभीर बताई जा रही है। घटना की जानकारी मिलते ही जिलाधिकारी और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने अस्पताल पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया. प्रारंभिक जांच में बताया गया कि तीनों बाइक सवार तेज रफ्तार में थे, जिसके कारण यह हादसा हुआ. पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

पीपुल्स फॉर द एथिकल ट्रीटमैंट ऑफ एनिमल्स (पेटा) इंडिया और आश्रय फाउंडेशन के समर्थक जानवरों के मुखौटे पहने हुए हैं और उनके हाथ में ह्यक्रूरता के लिए मजबूत दंडह्ल लिखा हुआ संकेत है, जो दंड में वृद्धि की वकालत करते हैं। राजधानी में शुक्रवार को जंतर-मंतर पर पशु क्रूरता।

नरेगा श्रमिकों ने काम के अधिकार को बरकरार रखने के लिए शुक्रवार को राजधानी में जंतर मंगर पर विरोध प्रदर्शन किया।

इंडियन बेवरेज एसो. कॉन्कलेव हुआ आयोजित

नई दिल्ली, दिसंबर : इंडियन बेवरेज एसोसिएशन (आईबीए) के बहुप्रतीक्षित, नेशनल बेवरेज कॉन्कलेव के दूसरे संस्करण में भारतीय पेय उद्योग, विनियामक और सरकार ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उत्पादों, नियमों और नीतियों को विकसित करने के लिए करीबी से मिलजुल कर काम करना होगा। नई दिल्ली के आईटीसी मौर्य होटल में एसोसिएशन ने भारत को वैश्विक पेय प्रसंस्करण केंद्र बनाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा कि भारत में बेवरेज सेक्टर ईकोसिस्टम पर चर्चा करने में मदद मिली। इस कॉन्कलेव ने भारतीय पेय पदार्थों को वैश्विक बाजार में अलग पहचान दिलाने में मदद हेतु सभी संबंधित पक्षों द्वारा आगे की कार्रवाई के लिए भी माहौल तैयार किया है।

इस अवसर पर आईबीए के अध्यक्ष एसआर गोयनका ने कहा, भारत पेय प्रसंस्करण उद्योग में खुद को विश्व लीडर के रूप में स्थापित करने के लिए अपार अवसरों के साथ एक बाजार ने 2022 में 32 बिलियन डॉलर का उत्पादन किया और 2027 तक 87 बिलियन डॉलर तक बढ़ने का अनुमान है। एक प्रमुख पेय उत्पादक होने के बावजूद, भारत वर्तमान में पेय निर्यात में 66वें स्थान पर है। हालांकि सरकार एमएसएमई की बुनियादी ढाँचे की जरूरतों को सक्रियता से हल कर रही है, किंतु फिर भी सूक्ष्म और अनौपचारिक क्षेत्रों का समर्थन करना एक चुनौती बनी हुई है।

कॉन्सुलेव में बोलते हुए, मुख्य अतिथि, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के सचिव डॉ. सुब्रत गुप्ता ने कहा, वैश्विक गैर-अल्कोहल पेय अहम मोड़ पर है। गैर अल्कोहल बेवरेज सेक्टर तेजी से विस्तार कर रहा है और हमारी अर्थव्यवस्था में एक योगदान महत्वपूर्ण है। आईबीए के महासचिव जेपी मीणा ने कहा, आईबीए के राष्ट्रीय पेय कॉन्सूलेव 2.0 2024 ने इंडस्ट्री के स्टेकहोल्डरों को एकजुट होने और पेय क्षेत्र के भविष्य को आकार देने के लिए एक बेहतरीन मंच प्रदान किया है। हम विविध क्षेत्रों के प्रतिभागियों ने जो मजबूत जुड़ाव और प्रतिबद्धता दिखाई है उस से हम उत्साहित हैं।

आईबीए के दूसरे राष्ट्रीय पेय कॉन्कूलेव की सफलता इसमें शामिल सभी लोगों की लगन और सहयोगात्मक भावना का प्रमाण है। इस आयोजन ने उद्योग में एक आदर्श बदलाव को चिह्नित किया, जो 2030 तक भारत को वैश्विक पेय प्रसंस्करण केंद्र के रूप में स्थापित करने के आईबीए के दृष्टिकोण पर आधारित है। इस सम्मेलन में मुख्यातिथि थे डॉ. सुब्रत गुप्ता, सचिव, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार; श्री मिनहाज आलम (आईएएस), अतिरिक्त सचिव और सीवीओ, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय, श्री पी सी किशन (आईएएस), संयुक्त सचिव-विपणन, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय और श्रीमती सीमा अरोड़ा (आईआरएस), प्रधान महानिदेशक, जीएसटी महानिदेशालय वित्त मंत्रालय। उद्योग जगत के दिग्गजों में शामिल थे:- श्री एंजेलो जॉर्ज, सीईओ, बिसलेरी इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड, श्री सौरभ मुंजाल, सीईओ और सह-संस्थापक, आर्किअन फूड्स प्राइवेट लिमिटेड (लाहौरी जीरा); श्री विशाल शाह, संस्थापक और एमडी, स्ट्रटोरिया फूड्स एंड बेवरेजेस सहित अन्य प्रमुख लोग शामिल हुए।

राष्ट्र मंदिर-विश्व रामायण आश्रम का मंगल प्रवेश महोत्सव

■ आध्यात्मिकता और समाज सेवा का संगम: राष्ट्र मंदिर आश्रम की शुरुआत, धर्म, संस्कृति और एकता का प्रतीक बनेगा राष्ट्र मंदिर : अजय भाई जी

नई दिल्ली, दिसंबर : राष्ट्र मंदिर-विश्व रामायण आश्रम के मंगल प्रवेश के शुभ अवसर पर त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया है। यह आयोजन राष्ट्र के वीरों, वीरांगनाओं, संतों, सैनिकों और महापुरुषों को समर्पित है, जो राष्ट्रवादी भावना और आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत हैं। महोत्सव का उद्घाटन 6 दिसंबर को हुआ और यह आयोजन 8 दिसंबर तक चलेगा। इस महोत्सव का आयोजन राष्ट्र मंदिर-विश्व रामायण आश्रम, दिल्ली के नंगली पूना क्षेत्र में किया गया है। आयोजन का समय दोपहर 3 बजे से लेकर रात 7 बजे तक रखा गया है।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता के प्रति लोगों की जागरूकता बढ़ाना है। इस अवसर पर श्रद्धेय अजय भाई, जो कि राष्ट्र मंदिर-विश्व रामायण आश्रम के संस्थापक हैं, प्रवचन भी दिया।

अजय भाई ने कहा, 'हमारा राष्ट्र महान है और हमारी संस्कृति को सहेजने की जिम्मेदारी हम सभी की है। आज इस शुभ अवसर पर हम राष्ट्र मंदिर के उद्घाटन के साथ एक नई शुरु आत कर रहे हैं, जो भारतीय संस्कृति, धर्म और आध्यात्मिकता के मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है। यह मंदिर न केवल एक धार्मिक स्थल होगा, बल्कि यह एक प्रेरणा स्थल बनेगा, जहाँ से राष्ट्र की सेवा, राष्ट्रीय एकता और समाज की भलाई के लिए दिशा निर्देश प्राप्त होंगे।'

उन्होंने यह भी कहा कि, 'हमारी संस्कृति और धार्मिक मान्यताएँ हमें न केवल आत्मिक शांति प्रदान करती हैं, बल्कि समाज में सद्भाव, प्रेम और भाईचारे की भावना भी उत्पन्न करती हैं। राष्ट्र मंदिर विश्व रामायण आश्रम का उद्देश्य एक ऐसी जगह बनाना है, जहां लोग न केवल आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करें, बल्कि राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को समझें और उसे निभाने के लिए प्रेरित हों।'

राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण और रखरखाव की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए नई रेटिंग प्रणाली

नई दिल्ली, दिसम्बर : राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) ने राष्ट्रीय राजमार्ग विकास और रखरखाव में लगे कंसेशनर्स की प्रदर्शन गुणवत्ता का मूल्यांकन करने और जवाबदेही बढ़ाने के लिए एक व्यापक रेटिंग प्रणाली लागू की है। इस रेटिंग प्रणाली के तहत कंसेशनर्स का हर छह महीने में मूल्यांकन किया जाएगा, और यह रेटिंग एनएचएआई की वैबसाइट और सोशल मीडिया पर उपलब्ध होगी। रेटिंग की प्रक्रिया पैवमेंट कंडीशन इंडेक्स (पीसीआई) और एनएचएआई वन एप्प पर दर्ज दोष सुधार अनुपालन पर आधारित होगी। इसमें 80 फीसदी वेटेज पीसीआई को और 20 फीसदी वेटेज एनएचएआई वन ऐप पर दर्ज 95 से अधिक दोषों के डिजिटल निगरानी और सुधार अनुपालन को दिया जाएगा। पीसीआई एक वैज्ञानिक मापदंड है जो 0 से 100 के बीच होता है, और यह सड़क की स्थिति को ह्यउत्कृष्टह्ल से ह्यअसफलह्ल तक दर्शाता है।डेटा का मूल्यांकन लेजर क्रैक मेजरमेंट सिस्टम जैसी नवीनतम तकनीकों और नेटवर्क सर्वे व्हीकल के माध्यम से किया जाएगा। एनएचएआई की केंद्रीय टीम की निगरानी में इन सर्वेक्षणों को अंजाम दिया जाएगा।

बख्ता खेड़ा के स्कूल का किया निरीक्षण

दिसम्बर : क्षेत्र के बख्ता खेड़ा गांव के राजकीय स्कूल का खंड शिक्षा अधिकारी प्रदीप दहिया ने निरीक्षण किया। खंड शिक्षा अधिकारी ने स्कूल के सोंदर्यकरण पर जोर दिया। खंड शिक्षा अधिकारी प्रदीप दहिया ने बताया कि बच्चों के शिक्षा के स्तर की जांच की गई। सभी छात्रों ने पुछे गए सवालों के सही जवाब दिया। स्कूल में बच्चों को दी गई सभी सुविधाएं भी निरीक्षण के दौरान उतम पाई गई। खंड शिक्षा अधिकारी प्रदीप दहिया ने कहा कि बच्चों के शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिए बच्चों को सोशल मीडिया से दुर रहकर मेहनत करनी चाहिए। शिक्षा के साथ साथ खेल में छात्रों को रूचि लेनी चाहिए। शिक्षा के साथ खेल के क्षेत्र में मेहनत करने से भी परिवार और गांव और क्षेत्र का नाम रोशन किया जा सकता है।

आवासीय और औद्योगिक उपयोग के लिए उन्नत ऊर्जा समाधान, देश में पावर सॉल्यूशंस में नई क्रांति की शुरुआत

नई दिल्ली, दिसम्बर : भारत में ऊर्जा समाधान के क्षेत्र में अग्रणी, ईस्टमैन ऑटो एंड पॉवर ने अपने इन्वर्टर बैटरी पोर्टफोलियो का विस्तार करते हुए 170 से अधिक स्टॉक कीपिंग यूनिट्स (एसकेयू) के साथ नई रेंज लॉन्च की है। इसमें ईस्टमैन ब्रांड के तहत सौ से अधिक और अड्डों ब्रांड के तहत सत्तर से अधिक नए मॉडल शामिल हैं। इस विस्तार के साथ ईस्टमैन भारतीय इन्वर्टर बैटरी बाजार में सबसे बड़ा पोर्टफोलियो पेश करने वाली कंपनी बन गई है। सौ एएच से लेकर भारत में पहली बार पेश की गई चार सौ एएच तक की बैटरियों के साथ, यह रेंज आवासीय, वाणिज्यिक और औद्योगिक क्षेत्रों की सभी ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करती है। ईस्टमैन ने अपनी नई रेंज के साथ 3 महीने से लेकर 240 महीने (20 साल) तक की वॉरंटी की पेशकश करते हुए उत्पादों की गुणवत्ता और विश्वसनीयता को नया मानक दिया है। प्रीमियम सीरीज में चार सौ एएच की इनोवेटिव बैटरियों के साथ 250 एएच से चार सौ एएच तक के मॉडल शामिल हैं, जो मजबूत और भरोसेमंद पावर बैकअप की जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, कंपनी ने अपने उत्पादों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है,बजट के अनुकूल स्मार्ट सीरीज, किफायती और टिकाऊ रैगुलर सीरीज, और उच्च प्रदर्शन वाली प्रीमियम सीरीज।

यह नई रेंज अड्डों ब्रांड के तहत भी उपलब्ध है। इस विस्तार के साथ, ईस्टमैन ने भारतीय इन्वर्टर बैटरी बाजार में अपनी स्थिति को और मजबूत करते हुए ग्राहकों की हर जरूरत का समाधान प्रदान किया है।

नयी दिल्ली जिले में सौ दिनों तक चलेगा टी.बी.मुक्त अभियान।

नयी दिल्ली। 7 दिसंबर 2024 (एजेंसी)। नयी दिल्ली जिले में सौ दिनों तक चलने वाले टी.बी.मुक्त अभियान का आज शुभारंभ हुआ। इस मौके पर टी.बी. रोग की जांच से उपयुक्त दो चलंत वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। एनडीएमसी चेस्ट क्लिनिक गोल मार्केट में आयोजित एक कार्यक्रम में एमसीडी में कार्यरत सहायक आयुक्त अश्वनी कुमार ने इसका उद्घाटन किया। अध्यक्षता क्लिनिक के प्रमुख डॉ. मृगांक बोरा ने की। डॉ.बोरा ने कहा कि नयी दिल्ली जिले में सौ दिनों तक चलने वाले इस अभियान के दौरान टी.बी. रोगियों की पहचान की जाएगी एवं उपचार किया जाएगा। वर्तमान में जिले में 21 सौ टी.बी.रोगियों का इलाज चल रहा है। एल.एस.

"सर्वेक्षण" के नाम पर धार्मिक स्थलों की सुरक्षा कानून के साथ छेड़छाड़ बंद की जाए : मलिक मोअतसिम खान, उपाध्यक्ष, जमात-ए-इस्लामी हिंद।

सामाजिक कार्यकर्ताओं के उत्पीड़न और संभल हिंसा के खिलाफ हर न्यायप्रिय नागरिक को आवाज उठानी चाहिए।

दिल्ली। में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए मलिक मोअतासिम खान, उपाध्यक्ष, जमात-ए-इस्लामी हिंद ने कहा कि "सभी इबादतगाहों के 15 अगस्त, 1947 की यथास्थिति सुनिश्चित करके सांप्रदायिक तनाव को रोकने के इरादे से उपासना स्थल अधिनियम, 1991 को अधिनियमित किया गया था। इस महत्वपूर्ण कानून का उद्देश्य सांप्रदायिक सद्भाव को बनाए रखना तथा इबादतगाहों पर ऐतिहासिक दावों को लेकर विभिन्न विवादों को बढ़ने से रोकना था। कानून के स्पष्ट प्रावधानों के बावजूद, हम मस्जिदों, दरगाहों और अन्य धार्मिक स्थलों के बारे में झूठे, निराधार और राजनीति से प्रेरित दावे देखते रहते हैं। दुर्भाग्यवश, ये मनगढ़ंत दावे अदालतों में दायर याचिकाओं में अपना रास्ता खोज लेते हैं, और कुछ मामलों में इन शरारती याचिकाओं को खारिज करने के बजाय, कभी-कभी अदालतें

इन मुस्लिम इबादतगाहों का सर्वेक्षण या अध्ययन करने की अनुमति दे देती हैं। इससे उपासना स्थल अधिनियम की मूल भावना कमजोर होती है तथा अनावश्यक विवाद, सांप्रदायिक अशांति और यहां तक कि हिंसा भी बढ़ती है। जमाअत-ए-इस्लामी हिंद इस विक्षुब्ध करने वाली प्रवृत्ति से बेहद चिंतित है और मांग करती है कि पूजा स्थल अधिनियम को अक्षरशः और उसकी भावना से लागू किया जाना चाहिए। अदालतों को ऐसी दुर्भावनापूर्ण याचिकाओं को खारिज करना चाहिए जिनका उद्देश्य सांप्रदायिक सद्भाव को बिगाड़ना हो। वास्तव में, छिपे हुए राजनीतिक और व्यावसायिक एजेंडे के साथ ऐसी याचिकाएं दायर करने वाले लोगों और संगठनों पर भारी जुमार्ना लगाकर उन्हें दंडित किया जाना चाहिए। समाज में अशांति पैदा करने वाले मामलों पर न्यायिक संसाधनों को बर्बाद नहीं किया जाना चाहिए। ऐसी गतिविधियों की अनुमति देने से दावों और प्रतिदावों के मार्ग खुलने का खतरा है, जिससे समुदायों के बीच स्थायी खाई पैदा हो सकती है और अराजकता पैदा हो सकती है। वोट बैंक की राजनीति के लिए इतिहास को पलटना या भावनात्मक मुद्दों को उठाना संविधान में निहित न्याय और समानता के सिद्धांतों को कमजोर करता है।

बीजेपी की वशिंग मशीन चालू है, मोदी के साथ आओ- दाग मिटाओ

गुवाहाटी। बीजेपी वाशिंग मशीन से धुले नेताः हिमंत बिस्वा सरमा में हजारों करोड़ रुपए के जलापूर्ति घोटाले में आरोपी थे। जब वो कांग्रेस में थे, तब भाजपा ने उनके खिलाफ एक श्वेत पत्र निकाला था। लेकिन आज वो असम के मुख्यमंत्री हैं। मोदी और शाह के खासमखास हैं। नारायण राणे - इनके खिलाफ CBI/ED ने कई मामले दर्ज किए हैं। बीजेपी में शामिल होते ही इनके दाग धुल गए, मोदी ने केंद्र में मंत्री बनाया। अबकी बार दोनों बेटों को भी वशिंग मशीन ने टिकट देकर चुनाव लड़वाया। छगन भुजबल - 2016 में एऊने महाराष्ट्र सदन घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग केस में छगन भुजबल को गिरफ्तार किया था। बाद में शरद पवार का साथ छोड़कर भाजपा के साथ आने के बाद भुजबल, उनके

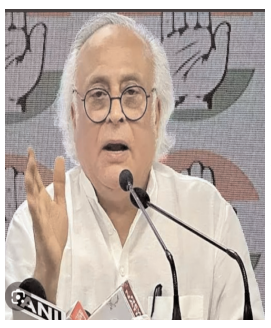

रिश्तेदारों और फर्मों के खिलाफ बेनामी संपत्ति मामले में हो रही कार्रवाई बंद हो गई। अशोक चव्हाण - भाजपा ने इन पर आदर्श हाउसिंग सोसाइटी घोटाले का आरोप लगाया। ये भाजपा में शामिल हो गए। जांच भी बंद हो गई और अब मोदी ने उन्हें महाराष्ट्र से राज्यसभा भेजा है। प्रफुल्ल पटेल - बीजेपी ने प्रफुल्ल पटेल पर 3000 करोड़ रुपए का हवाई जहाज घोटाले के आरोप लगाए थे। ये इखढ गठबंधन में शामिल हो गए, केस बंद हो गए बीजेपी और की मदद से दोबारा राज्यसभा चले गए। सुवेंदु अधिकारी - जब ये TMC में थे, तब इनके ऊपर हजारों करोड़ रुपए के शारदा चिट फंड घोटाले में शामिल होने का आरोप था। रोज ED,CBI का छापा पड़ता था। बाद में इन्होंने बीजेपी ज्वाइन कर ली। सारे केस बंद हो गए, आज ये बंगाल में नेता विपपक्ष हैं। इनके अलावा नवीन जिंदल, मुकुल रॉय, मिथुन चक्रवर्ती, सोवन चटर्जी, वायएस चौधरी, जगन रेड्डी, जितेंद्र तिवारी, हार्दिक पटेल जैसे सैंकड़ों नाम हैं, जो बीजेपी की वाशिंग मशीन में धुलकर बेदाग हो गये हैं। इसलिए अब बीजेपी का नया नारा है- मोदी के साथ आओ- अपने सारे दाग मिटाओ और खूब पैसा कमाओ।

--- मान्यवर ---

– डॉ.जया शुक्ला

वह मान्यवर हैं,
सारे ही मान्यों में वरीय,
आप मानें न मानें उन्हें सम्मानित,
स्वयंको तो वह मानते हैं ऐसा!
पुकार कर इसकी घोषणा भी करते हैं;
अपनी मान्यता दिखाएँगे ही वह,
आँखों में उँगली घुसा कर आपके ॥

कुछ बातोंको कल कहतेथे अमान्य वह,
मानते भी थे कुछ चीजों को अस्पर्श्य,
पर आज तो तिथि बदली हुई है,
स्वयं को सर्वमान्य सिद्ध उन्हें करना है,
सबोंको खड़ा करेंगे अपनी ही पंक्तिमें,
हुआ करें वह पूरे विरोधाभासी परस्पर!
आखिर वह मान्यवर हैं,
हर मान्यता का ही वरण उन्हें करना है।

क्या कहा, आप उनकी पंक्तिसे निकलेंगे?
जाएँगे कहाँ, प्रथम पंक्ति तो यही है !
प्रथम व्यक्तिहै यहाँ हर क्षेत्र का,
भ्रष्ट, हत्यारा, देशद्रोही, मात्र शब्द हैं ;
पत्थर भी पूजें तो देव बन जाते हैं,
यह तो फिर भी हैं मानव के चोले में ॥

आप कहते हैं, इनका आसन हिलाएँगे?
आप अपने सहस्त्रबाहु उगाएँगे?
महोदय, सहस्त्रबाहु का पुनर्जन्म वह ही हैं,
हिलते आसन को पकड़ेंगे सौ हाथों से,
आपकी बाहुओं को छाँट छाँट काटेंगे,
रक्त की नदियों से तर्पण करवाएँगे !

इनके तरकस में अभी अनगिनत वाण हैं,
तरह तरह की आतिशबाज़ियाँ दिखाएँगे,
राष्ट्रहित का नारा दे, दुश्मनों को बुलाएँगे,
माम्यवरकी मान्यताएँ उनकोभी तो मान्यहैं,

न रहे आपके पैरों-नीचे की जमीन,
इनकी मान्यताएँ तो त्रिशंकु हैं,
आसन इनका अधर में भी लटकेगा,
खड़े रहने को अवश्य मिलेगा आपको,
मजबूत सा एक ताजे शवों का पुल।
आप न निकलें मान्यवर की पंर्ति से !!

धार्मिक सहिष्णुता और मानवता की अहमियत पर चर्चा, भारत में विविधता और एकता के बीच संतुलन का संदेश

नई दिल्ली, दिसम्बर : बढ़ते सामाजिक तनाव और राजनीतिक जटिलताओं के इस दौर में प्रसिद्ध आध्यात्मिक नेता डा. विनोद स्वर्ण गुरु ने एकता और सद्भाव का संदेश देते हुए राष्ट्रीय विकास के लिए करुणा, मानवता और सहिष्णुता को आवश्यक बताया। राजधानी में एक सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने धार्मिक स्थलों के विवाद और समाज में बढ़ती असहमति पर चर्चा की।

गुरुजी ने जोर देकर कहा कि धर्म और आस्था को मानवता को जोड़ने का माध्यम होना चाहिए, न कि विभाजन का कारण।

उन्होंने स्पष्ट किया कि भारत की विविधता ही उसकी वैश्विक आकांक्षाओं की नींव है और समावेशिता के बिना विकास और नवाचार संभव नहीं। डॉ. स्वर्ण गुरु ने तर्कसंगत और अंधविश्वास-मुक्त आध्यात्मिकता का प्रतिनिधित्व करते हुए आधुनिक और प्रगतिशील दृष्टिकोण पेश किया। उनकी संस्था स्पिरिचुअल सोल्स मानसिक स्वास्थ्य, नशा मुक्ति और सामुदायिक विवादों के समाधान पर कार्यरत है।

एक आदिवासी मां और पिछड़े वर्ग के पिता के पुत्र के रूप में जन्मे डॉ. स्वर्ण गुरु का जीवन विविधता और संघर्ष का प्रतीक है। उनके विचार परंपरा और आधुनिकता का संतुलित मिश्रण प्रस्तुत करते हैं। सामाजिक समरसता और अहिंसा के माध्यम से देश के नागरिकों और नेताओं को एकजुट होकर कार्य करने की प्रेरणा दी।

अर्थव्यवस्था में युवाओं की भूमिका अहम : कपिल देव अग्रवाल

लखनऊ, दिसंबर : उत्तर प्रदेश सरकार में कौशल विकास मंत्री कपिल देव अग्रवाल ने उत्तर भारत स्किल कनेक्ट सम्मेलन में युवाओं को हुनरमंद बनाने में दिया जोर देते हुए कहा कि योगी सरकार युवाओं को स्वरोजगार और स्टार्टअप्स के लिए प्रोत्साहित कर रही है। मुख्यातिथि के रूप में उत्तर भारत स्किल कनेक्ट सम्मेलन में बोलते हुए व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमशीलता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कपिल देव अग्रवाल ने कहा देश और प्रदेश की अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने में हुनरमंद युवाओं की अहम भूमिका है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में युवाओं को विभिन्न कौशल विकास योजनाओं से जोड़ने का काम किया जा रहा है। कपिल देव अग्रवाल ने कहा कि योगी सरकार ने बड़ी कंपनियों जैसे टाटा, रेमंड, महिंद्रा और मारुति के साथ साझेदारी की है, ताकि युवाओं को व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित किया जा सके और उन्हें रोजगार के बेहतर अवसर प्रदान किए जा सकें। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि उद्योगों और कौशल विकास संस्थानों के बीच मजबूत साझेदारी ही भविष्य में युवाओं को सही दिशा में ले जा सकती है। मंत्री अग्रवाल ने कहा कि योगी सरकार युवाओं को स्वरोजगार और स्टार्टअप्स के लिए प्रोत्साहित कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में कई योजनाओं के तहत युवाओं को स्टार्टअप्स शुरू करने के लिए आर्थिक सहायता, प्रशिक्षण और तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया जा रहा है।

उन्होंने यह भी बताया कि युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार कौशल विकास के माध्यम से उन्हें नवीनतम तकनीकों और उद्योगों की मांग के अनुरूप प्रशिक्षित कर रही है। सम्मेलन में उद्योग जगत और कौशल विकास के बीच साझेदारी को मजबूत करने के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई। प्रतिनिधियों ने कहा कि उद्योगों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को समय-समय पर अपडेट करना जरूरी है। इसके अलावा, युवाओं के लिए ऐसे पाठ्यक्रम तैयार किए जाएंगे जो उन्हें न केवल रोजगार के लिए तैयार करें, बल्कि स्वरोजगार और स्टार्टअप्स के लिए भी प्रेरित करें। इस महत्वपूर्ण आयोजन में कौशल विकास और उद्योग जगत से जुड़े कई प्रमुख प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

बदलाव के लिए शिक्षित युवाओं को राजनीति में आना चाहिए : मुख्यमंत्री आतिशी

दिल्ली। की मुख्यमंत्री आतिशी ने छात्रों से राजनीति में सक्रिय रूप से शामिल होने का आग्रह किया और सबसे बुरे किस्म के लोगों के हाथों में महत्वपूर्ण निर्णय न छोड़े जाने के प्रति आगाह किया। दिल्ली के सेंट स्टीफन कॉलेज के स्थापना दिवस समारोह में आतिशी ने उन दिनों को याद किया जब वह छात्रा थीं और बताया कि कैसे राजनीति को निकृष्ट कार्य बताकर करियर विकल्प के तौर पर खारिज कर दिया जाता था। एक बयान के अनुसार, उन्होंने कहा, दो दशक से भी ज्यादा पहले की बात है जब मैं यहां छात्रा थी। उस समय बदलाव लाने का विचार सिर्फ दान-पुण्य या सामाजिक कार्यों तक सीमित था। राजनीति तक पहुंच पाना मुश्किल था। उन्होंने बताया कि राजनीति में शामिल न होने से शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण फैसले दूसरों के हाथों में चले जाते हैं। आतिशी ने जोर देते हुए कहा, जब शिक्षित, अच्छा इरादा रखने वाले युवा राजनीति से दूर रहते हैं तो हम अपने जीवन के सबसे महत्वपूर्ण निर्णय गलत लोगों को लेने देते हैं। उन्होंने कहा, भारत का भविष्य हमारे हाथ में है। राजनीति और लोकतंत्र से जुड़ें।इसमें शामिल हुए बिना हम बदलाव की उम्मीद नहीं कर सकते।

भारतीय किसान संघ की पौरारा में हुई मासिक पंचायत

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर/रहरा। शनिवार को भारतीय किसान संघ अमरोहा की एक मासिक पंचायत का आयोजन गंगेश्वरी विकासखंड के गांव पोरारा में हरिओम प्रकाश आदर्श किसान जूनियर हाई स्कूल में किसानो की विभिन्न समस्याओं को लेकर आयोजित की गई, बैठक में मुख्यमंत्री के नाम संबोधित एक ज्ञापन खंड विकास अधिकारी कार्यालय पर दिया जिसमें मुख्य मांगों मे पोरारा घाट से आहार घाट तक पक्के पुल का निर्माण किए जाने तथा बिजली विभाग के मीटर रीडरो द्वारा घरेलू बिलों में अत्यधिक बिल निकालकर उपभोक्ताओं की जेब पर डाका डाला जा रहा है तथा फाल्ट होने पर लाइनमैन फाल्ट सही करने व लाइन जोड़ने के एवज में रुपए की मांग करता है जिसे तत्काल रोका जाए, वही पोरारा गांव से रहरा, भावली, गंगेश्वरी, मोहम्मदाबाद आदि मार्गो का शीघ्र अति शीघ्र निर्माण किया जाए, साथ ही पूर्ति विभाग द्वारा पत्र राशन कार्ड धारकों के राशन कार्ड में से काटे गए यूनिटों को जांच करा कर दोबारा से जोड़ा जाए, वही पोरारा क्षेत्र में लगभग 3000 से अधिक संख्या में आवारा पशु घूम रहे हैं जिन्हें पड़कर गौशाला में भिजवाया जाए, साथ ही एक अन्य मांग के अनुसार पोरारा गांव में बदल हो रही सड़कों की वजह से जल भराव की समस्या उत्पन्न हो रही है अतः गांव की समस्त जलभरा बाली सड़के सही कराई जाए इन्हीं मांगों को लेकर मुख्यमंत्री के नाम संबोधित ज्ञापन सोपा गया, इस मौके पर मुख्य रूप से भारतीय किसान संघ के जिला अध्यक्ष चंद्र प्रकाश शर्मा, उपाध्यक्ष शिवचंद सिंह सैनी, ब्लॉक अध्यक्ष दिव्यांशु यादव, खंड मंत्री वीर सिंह, प्रहलाद सिंह सैनी, ओमपाल सिंह, बॉबी कुमार, जयप्रकाश शर्मा, लक्ष्मी नारायण गिरी, प्रेम शंकर, सतवीर सिंह, गोलू कश्यप, सतवीर सिंह, सतपाल सिंह, चरण सिंह, मास्टर लख्मीचंद, डॉक्टर रामशरण, राजेश्वर सिंह, दयाल सिंह, डॉक्टर हेम सिंह आदि मौजूद रहे।

राष्ट्रीय मानव अधिकार एवं आरटीआई परिषद की मासिक समीक्षा बैठक हुई संपन्न

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। शनिवार को नगर के रहरा संभल बायपास मार्ग पर सोनालिका ट्रैक्टर की एजेंसी पर राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं आरटीआई परिषद की एक मासिक समीक्षा बैठक राष्ट्रीय अध्यक्ष दीनदयाल यादव के नेतृत्व में संपन्न हुई, बैठक में राष्ट्रीय मानव अधिकार एवं आईटीआई परिषद का प्रथम स्थापना दिवस मनाया गया, इस मौके पर राष्ट्रीय अध्यक्ष दीनदयाल यादव ने सभी पदाधिकारी एवं कार्यकताओं को संगठन के प्रथम स्थापना दिवस पर शुभकामनाएं दी,बैठक में कार्यकताओं ने अपने-अपने विचार रखें जिसमें वक्ताओं ने संगठन के बिसतार पर चर्चा की तथा भ्रष्टाचार के खिलाफ अधिक से अधिक आरटीआई लगाने की अपील की गई, तथा बैठक में समय से आने की सभी से अपील की गई, इस मौके पर संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष दीनदयाल यादव एडवोकेट ने कहा कि हमारा संगठन प्रत्येक उस व्यक्ति के साथ खड़ा है जो समाज में निम्न स्थान रखता है हमारा संगठन हमेशा भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़ता रहेगा, संगठन का उद्देश्य भ्रष्टाचार पर प्रहार आरटीआई के माध्यम से करना है, इस मौके पर मुख्य रूप से राष्ट्रीय अध्यक्ष दीनदयाल यादव एडवोकेट, राष्ट्रीय प्रवक्ता टेकचंद सिंह एडवोकेट, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रमोद कुमार शर्मा, एवं अमरोहा जिला अध्यक्ष अनुपम त्यागी, संजय चौहान, नीरज शर्मा, गोविंद कौशिक, नेमपाल सिंह, सीमा यादव, संजय चौहान, धनेश्वरी, शंकर सिंह, नीरज शर्मा, रणवीर सिंह यादव, नेत्रपाल सैनी, आरती, पश्चिम बंगाल के प्रदेश अध्यक्ष अली अहमद सैफी, राष्ट्रीय सह मीडिया प्रभारी प्रवीण अग्रवाल आदि सहित दर्जनों कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी कर मौजूद रहे ।

भाकियू बी आर एस एस की बैठक में गन्ना मूल्य 450 / प्रति कुंतल घोषित किए जाने की उठी मांग

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। शनिवार को भारतीय किसान यूनियन बी आर एस एस की एक मीटिंग नगलिया मुंशी में ब्लाक अध्यक्ष शौसिंह के आवास पर आयोजित की गयी जिसकी अध्यक्षता दिलीप सिंह ने की एवं संचालन राष्ट्रीय सलाहकार उदयवीर सिंह ने किया, बैठक में संगठन का विस्तार किया गया तथा नए सदस्य जोड़े गए, संगठन के विस्तार के साथ संगठन ने सरकार से मांग की कि गन्ना पेराई सत्र चलें लगभग 40 दिन बीत चुके हैं मगर उत्तर प्रदेश सरकार ने गन्ने का मूल्य घोषित नहीं किया है जबकि पड़ोसी राज्यों में पंजाब व हरियाणा में 401/400 रुपए का रेट है, संगठन ने मुख्यमंत्री से गन्ने का मूल्य 450 रुपए/कुंतल की मांग करते हुए जल्द जल्द गन्ना मूल्य घोषित किया जाए ताकि किसान का भला हो सके, इस मौके पर मुख्य रूप से उदयवीर सिंह राष्ट्रीय सलाहकार, सुनील कुमार तहसील प्रभारी,नौसिहं ब्लॉक अध्यक्ष, अमिचंद जिला उपाध्यक्ष, साहिब सिंह, हरकेश सिंह, प्रीतमसिंह, महेंद्र सिंह, रघुवीर सिंह, राजवीर सिंह, जसवंत सिंह,चमन सिंह,मां, रुपचंद, वीर सिंह, टीकम सिंह आदि मौजूद रहे।

राष्ट्रीय मानव अधिकार एवं आरटीआई परिषद की मासिक समीक्षा बैठक हुई संपन्न

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। शनिवार को नगर के रहरा संभल बायपास मार्ग पर सोनालिका ट्रैक्टर की एजेंसी पर राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं आरटीआई परिषद की एक मासिक समीक्षा बैठक राष्ट्रीय अध्यक्ष दीनदयाल यादव के नेतृत्व में संपन्न हुई, बैठक में राष्ट्रीय मानव अधिकार एवं आईटीआई परिषद का प्रथम स्थापना दिवस मनाया गया, इस मौके पर राष्ट्रीय अध्यक्ष दीनदयाल यादव ने सभी पदाधिकारी एवं कार्यकताओं को संगठन के प्रथम स्थापना दिवस पर शुभकामनाएं दी,बैठक में कार्यकताओं ने अपने-अपने विचार रखें जिसमें वक्ताओं ने संगठन के बिसतार पर चर्चा की तथा भ्रष्टाचार के खिलाफ अधिक से अधिक आरटीआई लगाने की अपील की गई, तथा बैठक में समय से आने की सभी से अपील की गई, इस मौके पर संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष दीनदयाल यादव एडवोकेट ने कहा कि हमारा संगठन प्रत्येक उस व्यक्ति के साथ खड़ा है जो समाज में निम्न स्थान रखता है हमारा संगठन हमेशा भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़ता रहेगा, संगठन का उद्देश्य भ्रष्टाचार पर प्रहार आरटीआई के माध्यम से करना है, इस मौके पर मुख्य रूप से राष्ट्रीय अध्यक्ष दीनदयाल यादव एडवोकेट, राष्ट्रीय प्रवक्ता टेकचंद सिंह एडवोकेट, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रमोद कुमार शर्मा, एवं अमरोहा जिला अध्यक्ष अनुपम त्यागी, संजय चौहान, नीरज शर्मा, गोविंद कौशिक, नेमपाल सिंह, सीमा यादव, संजय चौहान, धनेश्वरी, शंकर सिंह, नीरज शर्मा, रणवीर सिंह यादव, नेत्रपाल सैनी, आरती, पश्चिम बंगाल के प्रदेश अध्यक्ष अली अहमद सैफी, राष्ट्रीय सह मीडिया प्रभारी प्रवीण अग्रवाल आदि सहित दर्जनों कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी कर मौजूद रहे।

आज निकलेगी विशाल शौर्य यात्रा, तैयारी पूर्ण प्रशासन ने किया यात्रा रुड का निरीक्षण

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। आज यानी रविवार को नगर में विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल द्वारा भव्य शौर्य यात्रा निकाली जा रही है जिसकी तैयारी विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल द्वारा कर ली गई है, एवं प्रशासन ने भी यात्रा रोड का निरीक्षण किया, विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल द्वारा शौर्य यात्रा का आयोजन नगर के सुखदेवी इंटर कॉलेज से किया जा रहा है जो आज नगर के सुखदेवी इंटर कॉलेज से प्रारंभ होकर मोहल्ला लालबाग, रहरा रोड, मेंन बाजार से होती हुई अमरोहा अड्डे पर जाकर संपन्न होगी, वहीं प्रशासन द्वारा मुस्लिम बाहुल्य इलाके लाल बाग में शौर्य यात्रा निकाले जाने को लेकर खास व्यवस्था की है, प्रशासन ने चप्पा चप्पा पर पुलिस का पहरा लगाया है तथा प्रशासन ने दोनों ही समुदायों के समस्त लोगों को सख्त हिदायत दी है कि कोई भी किसी प्रकार की शरारती हरकत नहीं करेगा अन्यथा प्रशासन उस से शक्ति से निपटेगा, बताते चलें की शनिवार की देर रात्रि में एसडीएम सुनीता कुमारी, सी ओ दीप कुमार पंत एवं प्रभारी निरीक्षक रविंद्र प्रताप सिंह ने शौर्य यात्रा वाले रोड का निरीक्षण किया था।

भारतीय मंदिरों और पुराणों की महिमा तथा कारीगरी को दर्शा रहा शिवालय पार्क

प्रयागराज, 7 दिसंबर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को प्रयागराज नगर निगम द्वारा नैनी के अरैल में बनवाए जा रहे शिवालय पार्क का निरीक्षण किया। पार्क का जायजा लेते हुए मुख्यमंत्री ने निर्माण कार्यों को समय पर पूरा करने का निर्देश दिया। शिवालय पार्क महादेव को समर्पित एक भव्य स्थल है, जो भारतीय मंदिरों और पुराणों की महिमा तथा कारीगरी को दर्शाता है। 11 एक-ड़ के क्षेत्र में फैला यह पार्क विविधताओं से भरपूर है, जिसमें कला, प्रकृति और मनोरंजन का संगम देखने को मिलेगा। महाकुम्भ की शोभा को बढ़ाने हेतु निमार्णाधीन इस पार्क का निर्माण 14 करोड़ रुपए की लागत से किया गया है।

निर्माण कार्य में वेस्ट मटीरियल का किया जा रहा उपयोग

शिवालय पार्क को भारत के मानचित्र के आकार में डिजाइन किया गया है, जिसमें सभी प्रमुख मंदिर उनके मूल स्थानों पर ही बनाए गए हैं, ताकि आगन्तुक तीर्थ यात्रा का अनुभव कर सकें। पार्क में तुलसी वन और संजीवनी वन भी बनाया गया है। बच्चों के लिए अलग जोन बनाया जा रहा है। इसके अलावा पार्क के अंदर फूड कोर्ट और रेस्त्रां भी बनाया जा रहा है । शिवालय थीम पार्क को तैयार कराने में सबसे खास बात है कि इसमें अधिकतर वेस्ट मटीरियल का प्रयोग किया जा रहा है। इसके निर्माण कार्य में जुटी कंपनी जेड टेक इंडिया लिमिटेड के पास ही तीन साल तक इसके रख रखाव की जिम्मेदारी रहेगी।

इन मंदिरों का प्रतिरूप करवाया जा रहा है तैयार

सोमनाथ मंदिर (गिर सोमनाथ, गुजरात)
मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर (श्रीशैलम, आंध्र प्रदेश)
महाकालेश्वर मंदिर (उज्जैन, मध्य प्रदेश)
ओकारेश्वर मंदिर (खंडवा, मध्य प्रदेश)
बैद्यनाथ मंदिर (देवघर, झारखंड)
भीमाशंकर मंदिर (भीमाशंकर, महाराष्ट्र)
रामनाथस्वामी मंदिर (रामेश्वरम, तमिलनाडु)
नागेश्वर मंदिर (द्वारका, गुजरात)
काशी विश्वनाथ मंदिर (वाराणसी, उत्तर प्रदेश)
त्र्यंबकेश्वर मंदिर। नासिक, महाराष्ट्र
केदारनाथ मंदिर (रुद्रप्रयाग, उत्तराखंड
घृष्णेश्वर मंदिर (औरंगाबाद, महाराष्ट्र)

महत्वपूर्ण शिव मंदिर

बैजनाथ मंदिर - बैजनाथ, हिमाचल प्रदेश
पशुपतिनाथ मंदिर - काठमांडू, नेपाल
लिंगराज मंदिर - भुवनेश्वर, ओडिशा
वीरभद्र मंदिर - लेपाक्षी, आंध्र प्रदेश
शोर मंदिर - महाबलीपुरम, तमिलनाडु

खुन खुन जी कालेज में युवा मेले कलरव का आयोजन

मुख्य अतिथि के रूप में समाज सेविका नम्रता पाठक ने फीता काटकर तथा दीप प्रज्वलन कर मेले का किया शुभारंभ

लोकतंत्र की शान /देवेंद्र शर्मा

लखनऊ। चौक स्थित खुन खुन जी गर्ल्स महाविद्यालय में युवा मेले कलरव के साथ एलुमिनी मीट आयोजित हुआ, जिसमे मुख्य अतिथि के रूप मे समाज सेविका नम्रता पाठक एवं विशिष्ट अतिथि महाविद्यालय की उप प्रबंधक एवं लायंस क्लब वसुंधरा की अध्यक्षा श्रीमती अनीता अग्रवाल ने अपनी उपस्थिति से सभी का हौसला बढ़ाया कमुख्य अथिति एवं विशिष्ट अतिथि ने सर्वप्रथम फीता काटकर तथा दीप प्रज्वलन कर मेले का शुभारंभ किया मेले में छात्राओं द्वारा बहुत से आकर्षक एवं मनोरंजक स्टॉल को लगाया गया जिसमें पानी पूरी, चाट, भेलपूरी, सिंघाड़े, धनिया आलू, फ्राइड राइस आदि थे, मेले में रंग भरने का कार्य मेहंदी काउंटर, सेल्फी प्वाइंट, रंगारंग कार्यक्रम के लिए डांस फ्लोर आदि का भरपूर आनंद लिया क मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि श्रीमती नम्रता पाठक जी ने मेले के प्रत्येक स्टॉल पर जाकर बच्चों के साथ बातचीत की और उनकी बनाई गई चीजों को स्वाद लेकर बच्चों का प्रोत्साहन बढ़ाया, सेल्फी पॉइंट पर उन्होंने सेल्फी खिंचवाई और मेहंदी काउंटर पर मेहंदी भी लगवाई। अंत में उन्होंने मेले में प्रतिभाग करने वाले बच्चों को सर्टिफिकेट एवं मैडल दिए, तथा छात्राओं को संबोधित करते हुए उन्होंने उनकी नारी शक्ति से उन्हें परिचित कराकर प्रोत्साहित किया छात्राओं के द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की तथा महाविद्यालय को एक ओपन जिम दिलवाने का भरोसा दिलाया। युवा महोत्सव के साथ "पुरातन छात्र समागम ", "शिक्षक अभिभावक बैठक का आयोजन किया गया। पुरातन छात्र समागम मे भारत सरकार मंत्रालय से सम्बध्द प्राची शुक्ला, प्रो माधुरी यादव, प्रो आरती कनौजिया, लोक गायिका अंजलि खन्ना, डॉ राजेश कुमारी, कवियत्री गीता खन्ना आदि के साथ लगभग 60 पुरातन छात्राए सम्मिलित हुई। महाविद्यालय की बहुत सी पुरानी छात्राए जो आज उच्च पदों पर कार्यरत है सभी ने महाविद्यालय में अपने सफर को और अपनी पुरानी यादों को साझा किया, एल्यूमिनी मीट के अतिथियों ने ही महाविद्यालय की विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता छात्राओं को तथा अंतर-विद्यालयी प्रतियोगिताओं में विजयी छात्राओं को सर्टिफिकेट और मेडल प्रदान किए। युवा मेले के आयोजन में डॉ प्रीति सिंधी, डॉ अपर्णा, प्रो बीना यादव, डॉ सुनीता यादव, डॉ सुप्रिया सिंह के साथ महाविद्यालय के समस्त शिक्षक एवं शिक्षणेतर स्टाफ ने भरपूर सहयोग दिया। प्राचार्या द्वारा चार्टर्ड एकाउंटेड श्री राजीव शुक्ला, श्री निरंजन शर्मा जी के साथ सभी अतिथियों, स्टाफ एवं छात्राओं का आभार व्यक्त किया। संपूर्ण युवा महोत्सव कलरव का आयोजन महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो.अंशु केडिया जी के निर्देशन एवं समस्त शिक्षिकाओं के सहयोग से संपन्न हुआ।

पुलिस जितनी सतर्क होगी, आम आदमी उतना सुरक्षित होगा: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

प्रयागराज, 7 दिसंबर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पीएम मोदी के आगमन से पूर्व प्रयागराज में महाकुम्भ की तैयारियों का जायजा लिया और साथ ही महाकुम्भ मेला क्षेत्र में बनी पुलिस लाइन का उद्घाटन भी किया। इस दौरान सीएम योगी ने महाकुम्भ के लिए तैनात पुलिसकर्मियों की प्रशिक्षण कार्यशाला को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि महाकुम्भ 2025 उत्तर प्रदेश के लिए एक शानदार अवसर है। इस महाकुम्भ में देश ही नहीं, दुनिया भर से करोड़ों लोग हिस्सा लेने आ रहे हैं। विगत सात वर्षों में उत्तर प्रदेश पुलिस ने अपना परसेप्शन बदला है। आज यूपी पुलिस को अपराधियों, माफिया और देश द्रोहियों के लिए एक काल माना जाता है, जबकि श्रद्धालु, पर्यटकों और आम लोगों के लिए वह मित्र पुलिस की भूमिका में नजर आती है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि पुलिस जितनी सतर्क होगी, आम आदमी उतना सुरक्षित होगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शनिवार को महाकुम्भ मेला क्षेत्र में बने पुलिस लाइन में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने कहा कि कुम्भ- 2019 में 24 करोड़ श्रद्धालु आए थे, जिन्होंने स्वच्छता, सुव्यवस्था के साथ उत्तर प्रदेश पुलिस के व्यवहार की तारीफ की। इससे दुनिया के सामने उत्तर प्रदेश की छवि बेहतर हुई। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि प्रयागराज महाकुम्भ को भव्य, दिव्य और डिजिटल बनाने की दृष्टि से उसकी सुरक्षा, स्वच्छता और सुव्यवस्था में उत्तर प्रदेश पुलिस की भूमिका महत्वपूर्ण है। महाकुम्भ-2025 में चालीस करोड़ तीर्थयात्री प्रयाग में आएंगे। यह आपके लिए दुनिया के सामने उत्तर प्रदेश पुलिस की छवि को बेहतरीन तरीके से प्रस्तुत करने का सुअवसर है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि 2017 के पहले उत्तर प्रदेश की जनता का विश्वास डगमगाया हुआ था, दुनिया के लोगों में उत्तर प्रदेश को लेकर नकारात्मक भाव था और यहां की पुलिस का मनोबल गिरा हुआ था। पुलिस के डेढ़ लाख के पद खाली थी। भरे नहीं जा रहे थे क्योंकि उस समय की सरकार की नीयत खराब थी। उन्होंने कहा कि डबल इंजन सरकार में पीआरवी 112 के रिस्पॉन्स टाइम को कम किया गया, अच्छी ट्रेनिंग की सुविधा दी गई, पुलिस को आधुनिक तकनीक से जोड़ा गया, भर्ती प्रकिया को आगे बढ़ाते हुए एक लाख 54 हजार पदों को भरा गया। बीस सालों से रुके हुए पदोन्नति के कार्य को आगे बढ़ाया गया। उन्होंने कहा कि आज उत्तर प्रदेश पुलिस देश में स्मार्ट पुलिस के रूप में जानी जा रही है।

'ब्रांड प्रयागराज' को 'ग्लोबल' बनाने का बड़ा अवसर है महाकुम्भ 2025: मुख्यमंत्री

प्रयागराज, 07 दिसंबर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने 'प्रयागराज महाकुम्भ-2025 'ब्रांड प्रयागराज' को 'ग्लोबल' बनाने का बड़ा अवसर बताया है। उन्होंने कहा कि कुम्भ 2019 ने पूरी दुनिया में प्रयागराज की अच्छी छवि बनाई है। अब एक बार फिर अवसर आया है। पूरी दुनिया से लोग प्रयागराज आने की तैयारी कर रहे हैं, इसलिए महाकुम्भ यहां के जनप्रतिनिधियों और कार्यकताओं के साथ-साथ प्रयागराजवासियों के लिए भी 'अतिथि देवो भवः' का भाव प्रदर्शित करने का बेहतरीन मंच है। प्रयागराज को इसका लाभ उठाना चाहिए।

शनिवार को प्रयागराज में स्थानीय जनप्रतिनिधियों से संवाद करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में इस बार अभूतपूर्व 'दिव्य-भव्य-डिजिटल' महाकुम्भ का आयोजन होने जा रहा है। 12 वर्ष के अंतराल के उपरांत इस वर्ष आयोजित होने जा रहा प्रयागराज महाकुम्भ अब तक के सभी

कुम्भ पर्वों के सापेक्ष कहीं अधिक दिव्य और भव्य होगा। मानवता की यह अमूर्त सांस्कृतिक विरासत पूरी दुनिया को सनातन भारतीय संस्कृति की गौरवशाली परंपरा, विविधतापूर्ण सामाजिक परिवेश और लोक आस्था का साक्षात्कार कराएगी। महाकुम्भ के सफल आयोजन के दृष्टिगत प्रयागराज के जनप्रतिनिधियों और स्थानीय जनता का सहयोग सबसे महत्वपूर्ण होगा। आगामी 13 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के प्रयागराज आगमन पर ऐतिहासिक अभिनंदन होगा। स्थानीय जनप्रतिनिधियों से संवाद करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री जी की जनसभा में बड़ी संख्या में आमजन की भागीदारी होगी, ऐसे में सभी जनप्रतिनिधियों को व्यवस्था बनाने में सहयोग करना होगा। जो लोग आएं, वह कार्यक्रम की समाप्ति के उपरांत सुरक्षित अपने गंतव्य तक पहुंच जाएं, इसमें सभी लोग स्थानीय प्रशासन का सहयोग करें। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि प्रधानमंत्री जी के आगमन से पूर्व 10 से 12 दिसंबर तक पूरे प्रयागराज में विशेष स्वच्छता अभियान चलाया जाए। सभी जनप्रतिनिधि स्वयं इसमें रुचि लेकर आमजन को सहभागिता के लिए प्रोत्साहित करें।

बेटी और उसके सम्मान की रक्षा डबल इंजन सरकार का लक्ष्य: सीएम योगी

वाराणसी, 7 दिसंबरः मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पीएम मोदी द्वारा 2014 में देश की बागडोर संभालने के बाद जिस नए भारत का निर्माण हुआ, उसमें महिलाओं के लिए सम्मानजनक स्थान बनाया गया। पीएम मोदी ने 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' से जो कार्यक्रम प्रारंभ किया, उसके जरिए देश के अंदर प्रत्येक क्षेत्र में बेटियों द्वारा प्रतिभा का प्रदर्शन करके खुद को साबित किया जा रहा है। बेटियों का संरक्षण हर हाल में हो, उन्हें बचाया-पढ़ाया जा सके। सीएम ने कहा कि पीएम मोदी के नेतृत्व में डबल इंजन की भाजपा सरकार का संकल्प है कि हर हाल में बेटी और उसके सम्मान की रक्षा करना है। साथ ही 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम को बेटी के सुरक्षा, सम्मान व स्वावलंबन के साथ जोड़ना है और इसी के तहत सामूहिक विवाह का ऐतिहासिक कार्यक्रम हो रहा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शनिवार को मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के अंतर्गत पिंडरा के नेशनल इंटर कॉलेज में आयोजित 401 जोड़ों के विवाह समारोह में उपस्थित हुए। सीएम ने नवदंपति को मंगलमय जीवन की शुभकामना देते हुए उन पर पुष्पवर्षा भी की।

हर घर में शौचालय निर्माण नारी गरिमा और पीएम-सीएम आवास नारी गौरव का प्रतीक

सीएम योगी ने कहा कि बेटियां जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नेतृत्व दे सकती हैं और इसी के लिए हर घर में शौचालय निर्माण नारी गरिमा का प्रतीक बना। पीएम-सीएम आवास योजना नारी गौरव का प्रतीक बना। धुएं से मुक्त करने के लिए उज्ज्वला योजना का फ्री कनेक्शन बहन-बेटियों की आंखों के साथ-साथ फेफड़ों की सुरक्षा का बड़ा कदम था। देश में 10 करोड़ और यूपी में इससे लगभग दो करोड़ परिवार लाभान्वित हुए।

आयोजन दे रहा संदेश- हम सब मिलकर सामाजिक कुरीति पर कर सकते हैं जोरदार प्रहार

सीएम योगी ने कहा कि यह आयोजन संदेश दे रहा है कि हम सब सामूहिक रूप से मिलकर सामाजिक कुरीति पर जोरदार प्रहार कर सकते हैं। यह कार्यक्रम इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि वैवाहिक बंधन में जुड़ रहे 401 वर-वधू का संकल्प महान, अभिनंदनीय, सराहनीय है। इन्होंने बाल विवाह और दहेज मुक्त विवाह के खिलाफ आवाज उठाकर कहा कि दहेज मुक्त वैवाहिक बंधन से जुड़कर खुद को पितृऋण व मातृऋण से उद्धृण करेंगे। कई बार दहेज रूपी दानव अनेक परिवारों के सामने संकट खड़ा करता है। कई बार दर्दनाक समाचार सुनने को मिलता है कि दहेज न देने के कारण वैवाहिक कार्यक्रम निरस्त हो जाते हैं। बेटियों का विवाह तय नहीं हो पाता है। ऐसे में उन सबसे अलग हटकर मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के माध्यम से यह प्रयास प्रारंभ हुआ है। जिन युवाओं ने इस कार्यक्रम से खुद को जोड़ा है, वे और उनके अभिभावक अभिनंदन के पात्र हैं।

सीएम योगी ने श्रद्धालुओं के लिए महाकुंभ क्षेत्र में किया 25,000 बेड के सार्वजनिक आश्रय स्थल की शुरूआत

प्रयागराज, 7 दिसंबर। महाकुंभ 2025 को दिव्य और भव्य बनाने के उद्देश्य से योगी सरकार तीर्थयात्रियों की सुविधाओं को प्राथमिकता देते हुए हरसंभव प्रयास कर रही है। योगी सरकार सर्दी के कठोर मौसम में श्रद्धालुओं के ठहराव और उनकी सुरक्षा के लिए का पूरा ध्यान रख रही है। इसी के मद्देनजर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को मेला क्षेत्र में 250 बेड की क्षमता वाले 100 सार्वजनिक आश्रय स्थलों का उद्घाटन किया। इसके साथ ही, इसके साथ ही, महाकुंभ मेला क्षेत्र में कंप्यूटरीकृत खोया-पाया केंद्र की भी शुरूआत की गई।

सीएम योगी ने कहा कि महाकुंभ जैसे भव्य आयोजन के दौरान तीर्थयात्रियों और आगंतुकों की भारी संख्या को देखते हुए सार्वजनिक आश्रय स्थलों की आवश्यकता महत्वपूर्ण होती है। परंपरागत रूप से तीर्थयात्री और साधु-संत खुले स्थानों या परिसंचरण क्षेत्रों में समय बिताते हैं, जिससे सर्द मौसम में उनके लिए कई समस्याएं उत्पन्न होती हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए, सरकार ने 25,000 बेड की कुल क्षमता वाले सार्वजनिक आश्रय स्थलों की व्यवस्था की है। इन आश्रय स्थलों का उद्देश्य तीर्थयात्रियों को न केवल आरामदायक और सुरक्षित ठहराव प्रदान करना है, बल्कि उनकी यात्रा को सुलभ और सुविधाजनक भी बनाना है।

आधुनिक सुविधाओं से लैस हैं सभी आश्रय स्थल

महाकुंभ के लिए तैयार किए गए सार्वजनिक आश्रय स्थलों को अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस किया गया है। इनमें प्रत्येक आश्रय स्थल पर 250 बेड की क्षमता होगी। बेड के साथ गद्दे, तकिए और साफ चादरें उपलब्ध कराई जाएंगी। पुरुष और महिलाओं के लिए अलग-अलग शौचालय और स्नानघर की व्यवस्था की गई है। इन आश्रय स्थलों में नियमित सफाई, जिसमें चादरों का परिवर्तन शामिल है, सुनिश्चित की गई है। इसके अलावा, स्वच्छ पेयजल और चौबीस घंटे (24ग7) सुरक्षा के प्रबंध किए गए हैं। इन सुविधाओं का उपयोग श्रद्धालु नाममात्र शुल्क पर कर सकेंगे, जिससे महाकुंभ में सभी वर्गों के लोगों को ठहरने का विकल्प मिलेगा।

हरियाणा

मुख्यमंत्री ने सशस्त्र सेना झंडा दिवस कोष में दिया योगदान, प्रदेशवासियों से योगदान देने का किया आह्वान

सशस्त्र सेना झंडा दिवस पर अंशदान देकर हो रही गर्व की अनुभूति : नायब सिंह सैनी

मुख्यमंत्री चंडीगढ़ में सशस्त्र सेना झंडा दिवस पर ऑनलाइन माध्यम से कोष में अंशदान करते हुए।

चंडीगढ़, दिसंबर : हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने सशस्त्र सेना झंडा दिवस पर जल, थल और नभ के शूरवीरों को नमन करते हुए कहा कि सैनिक विपरित परिस्थितियों में अपने पराक्रम से देश की सीमाओं को सुरक्षित रखते हैं। हम सभी देश पर प्राण न्योछावर करने वाले पराक्रमी योद्धाओं के प्रति कृतज्ञ हैं। मुख्यमंत्री ने अपने निवास स्थान संत कबीर कुटीर पर सशस्त्र सेना झंडा दिवस कोष में ऑनलाइन अंशदान दिया। मुख्यमंत्री ने सभी प्रदेशवासियों से आहवान किया कि वे सशस्त्र सेना झंडा दिवस कोष में उदारता व स्वेच्छा से योगदान दें ताकि इस योगदान से देश सेवा करते हुए शहीद हुए सैनिकों या शारीरिक रूप से अशक्त हो जाने वाले बहादुर सैनिकों के आश्रितों के पुनर्वास और कल्याण में सहयोग हो सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि सशस्त्र सेना झंडा दिवस पर अंशदान देकर उन्हें गर्व की अनुभूति हुई है।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की अध्यक्षता में हुई एचपीपीसी और एचपीडब्ल्यूपीसी की बैठक

हरियाणा के मुख्यमंत्री ने 1329 करोड़ रुपए के कॉन्ट्रैक्ट और वस्तुओं की खरीद को दी मंजूरी

- सीएम बोले, विभिन्न बोलीदाताओं से नेगोसिएशन के बाद 38 करोड़ रुपए से अधिक की हुई बचत
- पीएमश्री और समग्र शिक्षा योजनाओं के तहत में 801 सरकारी स्कूलों में स्थापित होगी आईसीटी लैब्स

हरियाणा के मुख्यमंत्री चंडीगढ़ में हाई पावर परचेज कमेटी और हाई पावर वर्क्स परचेज कमेटी की बैठक की अध्यक्षता करते हुए।

चंडीगढ़, दिसंबर : हरियाणा में सार्वजनिक परिवहन सेवा को सुदृढ़ करते हुए हरियाणा रोडवेज के बेड़े में जल्द ही 650 नई बसें शामिल की जाएंगी। इनमें 150 ऐसी और 450 नॉन ऐसी बसें शामिल हैं। इन बसों की खरीद पर लगभग 300 करोड़ रुपए से अधिक की लागत आएगी। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की अध्यक्षता में हुई उच्चाधिकार प्राप्त क्रय समिति (एचपीपीसी) में इस संबंध में मंजूरी प्रदान की गई है। उच्चाधिकार प्राप्त क्रय समिति (एचपीपीसी), विभागीय उच्चाधिकार प्राप्त क्रय समिति (डीएचपीपीसी) और हाई पॉवर्ड वर्क्स परचेज कमेटी (एचपीडब्ल्यूपीसी) की बैठक में कुल मिलाकर 1329 करोड़ रुपए के कॉन्ट्रैक्ट और विभिन्न वस्तुओं की खरीद को मंजूरी दी गई। बैठक में विभिन्न बोलीदाताओं से नेगोसिएशन के बाद दरें तय करके 38 करोड़ रुपए से अधिक की बचत की गई है। बैठक में कैबिनेट मंत्री अनिल विज, महिपाल ढांडा, विपुल गोयल, श्याम सिंह राणा, रणबीर गंगवा और श्रुति चौधरी उपस्थित रहे।

इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स भी हुए मंजूर : बैठक में ग्रेटर फरीदाबाद में सैक्टर 75 से 89 तक विभिन्न मास्टर रोड की विशेष मरम्मत के कार्य को भी मंजूरी दी गई। इस पर लगभग 29 करोड़ रुपए की लागत आएगी। लगभग 36 करोड़ रुपए की लागत से करनाल के सैक्टर-37 में एचएसआईआईडीसी में बुनियादी सुविधाओं और आईएमटी रोहतक के सैक्टर-33-बी, फेज-दो में नवनिर्मित क्षेत्र में बुनियादी सुविधाओं के विकास कार्यों को भी स्वीकृति दी गई। इस पर लगभग 16 करोड़ रुपए की लागत आएगी। बैठक में लगभग 3.92 करोड़ रुपए की लागत से पुलिस विभाग के लिए एफएसएल मधुबन करनाल और गुरुग्राम के लिए 02 जेनेटिक एनालाइजर/ऑटोमेटेड डीएनए सीक्वेंसर सहित अन्य उपकरणों की खरीद को भी मंजूरी दी गई। इसके अलावा 14 सीसीटीएनएस प्रशिक्षण प्रयोगशालाओं के लिए 430 कंप्यूटर सिस्टम की खरीद को भी स्वीकृति दी गई। बैठक में हरियाणा विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड के आपातकालीन बहाली प्रणाली (ईआरएस) के 02 सेटों की खरीद, 400 केवी वोल्टेज तक ईएचवी ट्रांसमिशन लाइनों और सबस्टेशनों की लाइव लाइन रखरखाव और संबंधित हॉटलाइन उपकरणों के 04 सेटों की खरीद, विभिन्न ट्रांसफार्मरों की खरीद को भी मंजूरी प्रदान की गई। बैठक में मुख्यमंत्री के मुख्य प्रधान सचिव राजेश खुल्लर, गृह विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा, वित्त विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव अनुराग रस्तोगी और मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव अरूण कुमार गुप्ता सहित संबंधित विभागों के प्रशासनिक सचिव उपस्थित रहे।

हरियाणा रोडवेज के बेड़े में शामिल होंगी 650 नई बसें

बैठक में पीएमश्री योजना और समग्र शिक्षा योजना के तहत 801 सरकारी स्कूलों में 04 प्रकार की आईसीटी लैब्स की स्थापना करने को भी मंजूरी प्रदान की गई। इन पर लगभग 50 करोड़ रुपए की लागत आएगी। इसके अलावा 33 करोड़ रुपए की लागत से राज्य के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में निपुण कार्यक्रम के तहत कक्षा पहली से पांचवीं तक के विद्यार्थियों के लिए शिक्षण अधिगम उपकरण संग्रह की खरीद के लिए भी मंजूरी प्रदान की गई।

जलापूर्ति परियोजनाओं को मिली मंजूरी

बैठक में 15.80 करोड़ रुपए की लागत से महेंद्रगढ़ शहर में वाटर वर्क्स और बूस्टिंग स्टेशनों पर मौजूदा संरचनाओं का विस्तार और नवीनीकरण, करनाल में 19.50 करोड़ रुपए रुपए की लागत से 04 गांवों बल्लाह, फफड़ाना, गोली और मनपुरा में जलापूर्ति सुविधा उपलब्ध कराने, गांव बल्लाह में सीवरेज सुविधा उपलब्ध कराने व सीवेज उपचार संयंत्र के निर्माण की परियोजना को भी स्वीकृति प्रदान की गई। इसके अलावा 17.15 करोड़ रुपए की लागत से बावल टाउन में जलापूर्ति के लिए पाइप लाइन बिछाने, वाटर टैंक, बूस्टिंग स्टेशन बनाने सहित जलापूर्ति योजना (खेड़ा मुरार में जल संयंत्र) के विस्तार और 93 करोड़ रुपए की लागत से जगाधरी, यमुनानगर शहर के औद्योगिक वेस्ट के लिए ट्रीटमेंट के लिए 19.50 एमएलडी क्षमता के एसटीपी के निर्माण को भी मंजूरी प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त लगभग 14 करोड़ रुपए की लागत से सिरसा में आरडी 19800-आर घग्गर नदी से आरडी 0 से 26000 तक सुल्तानपुरिया खरीफ चैनल 02 के निर्माण कार्य के लिए भी मंजूरी दी गई। इससे विभिन्न गांवों को सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध हो सकेगा।

9 से 11 दिसंबर 2024 तक डॉ. मंगलसेन सभागार में भव्य ढंग से होगा आयोजन, नजर आएगा अध्यात्म, कला एवं संस्कृति का अद्भुत संगम: उपायुक्त।

9 दिसंबर को हवन यज्ञ व श्रीमद्भगवत गीता की आरती से कार्यक्रम का शुभारंभ, विधानसभा के अध्यक्ष हरविंद्र कल्याण बतौर मुख्य अतिथि करेंगे शिरकत उपायुक्त उत्तम सिंह ने बताया कि 9 दिसंबर को हवन यज्ञ व श्रीमद्भगवत गीता की आरती से कार्यक्रम का शुभारंभ होगा। हरियाणा विधानसभा के अध्यक्ष व घरौंडा विधायक हरविंद्र कल्याण बतौर मुख्य अतिथि शिरकत करेंगे और हवन यज्ञ में आहुति डालेंगे तथा प्रदर्शनी का उद्घाटन एवं अवलोकन करेंगे। उन्होंने बताया कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में प्रकाश पब्लिक स्कूल के छात्रों द्वारा सरस्वती वंदना की जाएगी और भांगड़ा नृत्य प्रस्तुत किया जाएगा। कार्यक्रम में हरियाणवी लोक कलाकार ईश्वर शर्मा पार्टी और तनु शर्मा पार्टी अपनी-अपनी प्रस्तुति देंगे।

करनाल पर्विंदर कौर

करनाल। उपायुक्त उत्तम सिंह ने बताया कि जिला स्तरीय गीता जयंती महोत्सव का आयोजन 9 दिसंबर से 11 दिसंबर 2024 तक प्रातः 9 बजे से दोपहर 2 बजे तक डॉ. मंगलसेन सभागार में भव्य ढंग से किया जाएगा जिसमें अध्यात्म, कला एवं संस्कृति का अद्भुत संगम नजर आएगा। उन्होंने बताया कि इस तीन दिवसीय महोत्सव से संबंधित लगभग सभी तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। स्कूली बच्चों तथा लोक कलाकारों द्वारा भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं पर आधारित मनमोहक व आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी जाएगी।

10 दिसंबर को गीता सेमिनार व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन, बतौर मुख्य अतिथि करनाल के विधायक जगमोहन आनंद तथा नीलोखेड़ी के विधायक भगवान दास कबीरपंथी करेंगे शिरकत उपायुक्त उत्तम सिंह ने बताया कि 10 दिसंबर को कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर करनाल के विधायक जगमोहन आन?

गीत व संगीत करता है सब प्रकार चिंताएं व दुख दर्द दूर -किरन चड्ढा

करनाल सुखविंदर सोही

करनाल। चाहत कराओके एकेडमी द्वारा कल रविवार 8 दिसंबर को दोपहर 2 बजे स्थानीय अटल पार्क में म्यूजिक का रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में कोई भी प्रतिभागी अपनी गीत संगीत एवं डांस की निशुल्क प्रस्तुति का प्रदर्शन कर सकता है। इस कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को चाहत कराओके एकेडमी द्वारा मेडल व प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम के आयोजक विनोद वर्मा ने बताया कि चाहत कराओके एकेडमी का मुख्य उद्देश्य उभरते कलाकारों की प्रतिभाओं को मंच पर प्रस्तुति देना है। चाहत कराओके एके-डमी की टीम मैनेजर किरण चड्ढा ने कहा कि संगीत में व्यक्ति को भावनात्मक और मानसिक रूप से स्वस्थ करने के बहुत अच्छे गुण होते हैं। संगीत ध्यान का एक रूप है। संगीत बनाते या सुनते समय व्यक्ति अपनी सारी चिंताएँ, दुख और दर्द भूल जाता

है। लेकिन, अच्छे संगीत की सराहना करने के लिए हमें अपने संगीत के स्वाद को विकसित करने की आवश्यकता है। कोई गीत गाने के बाद हमें राहत महसूस होगी, मन को अच्छा लगेगा। ऐसा भी देखा गया है कि इससे शरीर में किसी समस्या को कम या दूर करने में भी मदद मिलती है। उन्होंने सभी संगीत प्रेमियों से आग्रह किया कि आप सभी इस कार्यक्रम में आकर अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए अपने मन में छुपे भावों को नई दिशा देने का काम करें।

हरियाणा के मुख्यमंत्री ने बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए 4549.19 लाख रुपए की दी मंजूरी

- बरवाला, कैथल और कालांवाली में सीवरेज, सड़क और अपशिष्ट जल परियोजनाओं के साथ शहरी विकास को मिलेगा बढ़ावा

चंडीगढ़, दिसंबर : हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने बरवाला, कैथल और कालांवाली कस्बों में बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए प्रशासनिक मंजूरी दे दी है। इन परियोजनाओं पर 4549.19 लाख रुपए खर्च होंगे। यह राशि सीवरेज प्रणाली को बढ़ाने, सड़कों को दुरुस्त करने और आवश्यक शहरी सुविधाओं पर खर्च की जाएगी। प्रवक्ता ने बताया कि इन परियोजनाओं का लक्ष्य शहरवासियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है।

बरवाला कस्बे में सीवर लाइन की होगी सफाई

बरवाला शहर में वर्तमान सीवरेज बुनियादी ढांचे में सुधार किया जाएगा। शहर में सीवर लाइनों को साफ करने के लिए उन्नत सुपर सेक्शन डी-सिल्टिंग मशीनों का उपयोग किया जाएगा। यह आधुनिक सफाई पद्धति सीवर प्रणाली की दक्षता में सुधार करेगी, रुकावटों को रोकेगी और समग्र स्वच्छता को बढ़ाएगी। इस सफाई परियोजना के लिए 412.02 लाख रुपए की स्वीकृति की गई है।

कैथल शहर में सड़कों की होगी मरम्मत

कैथल शहर में सीवर सिस्टम की स्थापना से प्रभावित क्षेत्रों में सड़कों की मरम्मत की जाएगी। यह परियोजना सुरक्षित और सुचारू परिवहन सुनिश्चित करने, सीवरेज कार्य के दौरान क्षतिग्रस्त हुई सड़कों के हिस्सों की मरम्मत पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य सड़क की स्थिति के संबंध में जनता की शिकायतों का समाधान करना है। सड़कों के जीर्णोद्धार कार्य के लिए 773.34 लाख रुपए आवंटित किए गए हैं।

बरवाला कस्बे में बिछाई जाएगी सीवरेज लाइन

बरवाला शहर के चिन्हित क्षेत्रों में बिना ढकी गलियों में सीवरेज लाइनें स्थापित करने के लिए परियोजना को मंजूरी दी गई है। इस पर 470.04 लाख रुपए खर्च होंगे। वार्ड 1, वार्ड 2, वार्ड 8, वार्ड 10 और वार्ड 16 सहित कई वार्डों सीवरेज का विस्तार किया जाएगा। जिससे अपशिष्ट जल प्रबंधन होगा और शहर के एक बड़े हिस्से को लाभ होगा।

कालांवाली कस्बे में पाइप लाइन परियोजना को मंजूरी

कालांवाली टाउन में, उच्च-घनत्व पॉलीथीन (एचडीपीई) पाइप का उपयोग करके राइजिंग मेन की स्थापना के लिए एक प्रमुख परियोजना को मंजूरी दी गई है। यह पाइपलाइन मौजूदा 9.50 एमएलडी सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) को गांव फगू के पास रूरी घग्गर ड्रेन से जोड़ेगी। इस परियोजना से पर्यावरण और सार्वजनिक स्वास्थ्य मानकों का पालन करते हुए अपशिष्ट जल प्रबंधन में उल्लेखनीय सुधार होने की उम्मीद है। 2893.93 लाख रुपए की लागत वाली यह परियोजना स्वीकृत की गई है।

पंचायत मंत्री कृष्ण लाल पंवार ने मोर माजरा गांव में राजकीय आयुर्वेदिक औषधालय की चारदीवारी का किया शिलान्यास

आर्य कन्या गुरुकुल मोर माजरा में 16 लाख रुपये की लागत से बनने वाली वाहन पार्किंग का भी किया शिलान्यास

असंध/करनाल पर्विंदर कौर

करनाल। प्रदेश के विकास एवं पंचायत तथा खनन, भूविज्ञान मंत्री शनिवार को असंध उपमंडल के मोर माजरा गांव में पहुंचे। इस दौरान गांव में स्थित आर्य कन्या गुरुकुल की प्रबंधक कमेटी के पदाधिकारियों व ग्रामीणों ने उनका पूरी गर्मजोशी के साथ स्वागत किया। विकास एवं पंचायत मंत्री कृष्ण लाल पंवार ने बतौर मुख्य अतिथि गांव के राजकीय आयुर्वेदिक औषधालय की 21 लाख रुपए की लागत से बनने वाली चारदीवारी का शिलान्यास किया। इसी कड़ी में आर्य कन्या गुरुकुल मोर माजरा में 16 लाख रुपये की लागत से बनने वाली वाहन पार्किंग का भी शिलान्यास किया। इस दौरान उनके साथ विशिष्ट अतिथि के तौर पर असंध के विधायक योगेंद्र राणा भी मौजूद रहे। उक्त परियोजनाओं का शिलान्यास करने उपरांत मंत्री कृष्ण लाल पंवार ने कार्यक्रम में उपस्थित ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश के किसी भी गांव में विकास कार्यों में कोई भी कसर नहीं छोड़ी जायेगी। पूरी पारदर्शिता के साथ हर गांव, हर क्षेत्र में बिना भेदभाव के समान रूप से भाजपा की सरकार पिछले 10 वर्षों से कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि आर्य कन्या गुरुकुल पिछले लंबे समय से कन्याओं को शिक्षा देकर अपनी विशेष पहचान देश भर में बना रहा है। वह भी समय-समय पर इस शैक्षणिक संस्थान में अपना सहयोग देते आ रहे हैं। आर्य कन्या गुरुकुल में शिक्षा के साथ-साथ यहां की लड़कियों ने खेलों में भी अपनी विशेष पहचान बनाई है। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के तौर पर पहुंचे

असंध के विधायक योगेंद्र राणा ने अपने संबोधन में कहा कि उन्हें भी विशेष

शंभू बॉर्डर पर 4 घंटे का...

नेता सरवन सिंह पंधेर ने कहा कि किसानों के घायल होने के बाद प्रदर्शनकारियों ने शुक्रवार को दिल्ली की ओर अपना पैदल मार्च स्थगित कर दिया। उन्होंने कहा कि घायल किसानों को अस्पताल ले जाया गया।

पंधेर ने कहा, 'कुछ किसानों के घायल होने के मद्देनजर हमने आज के लिए जत्था वापस बुला लिया है।' उन्होंने कहा कि सुरक्षा कर्मियों की ओर से आंसू गैस के गोले जाने के बाद 8 किसान घायल हो गए। इनमें से 1 का कान का पर्दा फट गया। उन्होंने कहा कि किसानों का जत्था शनिवार को नहीं बल्कि रविवार को दिल्ली की ओर कूच करेगा। इस बीच, एसकेएम नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल ने शुक्रवार को खनौरी सीमा बिंदु पर अपना आमरण अनशन जारी रखा। संयुक्त किसान मोर्चा (गैर-राजनीतिक) और किसान मजदूर मोर्चा के बैनर तले एकत्र हुए किसान मांग कर रहे हैं कि केंद्र उन्हें एमएसपी के लिए कानूनी गारंटी दे। सुरक्षा बलों द्वारा दिल्ली की ओर मार्च करने से रोके जाने के बाद वे 13 फरवरी से पंजाब और हरियाणा के बीच शंभू और खनौरी बॉर्डर पर डेरा डाले हुए हैं। किसान एमएसपी के अलावा कर्ज माफी, किसानों एवं खेत मजदूरों के लिए पैंशन और बिजली दरों में बढ़ौतरी न करने की मांग कर रहे हैं।

राज्यसभा में सिंघवी की...

पर दावा करेगा, लेकिन अभी तक किसी ने दावा नहीं किया है। उन्होंने कहा, 'क्या यह अर्थव्यवस्था की उस स्थिति को दर्शाता है जिसमें लोग (नोटों की गड्डी को) भूल सकते हैं।' इसके बाद इस मुद्दे पर सदन में कुछ देर हंगामा भी हुआ और इसकी शुरुआत सत्ता पक्ष के सदस्यों की ओर से की गई।

उड़ानों को खतरा : दिल्ली में दर्ज 16 मामले NIA को सौंपे जाने की संभावना

नई दिल्ली, दिसंबर : विभिन्न विमानन कंपनियों की दिल्ली से संचालित होने वाली उड़ानों को खतरे के संबंध में दर्ज कम से कम 16 मामले राष्ट्रीय जांच एजैंसी (एनआईए) को सौंपे जाने की संभावना है। आधिकारिक सूत्रों ने शुक्रवार को कहा, समझा जाता है कि दिल्ली पुलिस ने नगर की सरकार के गृह विभाग को पत्र लिखकर इन मामलों को एनआईए को सौंपने के लिए कहा है और इसे अंतिम मंजूरी के लिए केंद्रीय गृह मंत्रालय के पास भेजा जाएगा।

एक आधिकारिक सूत्र ने कहा, 'यह मामला राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा है और इससे अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव जुड़ा है। ये सभी 16 मामले नागर विमानन सुरक्षा विधिविरुद्ध कार्य दमन अधिनियम के साथ ही 'बीएनएस' की धाराओं के साथ दर्ज किए गए हैं और इनकी गहन जांच की आवश्यकता है।' अक्तूबर के अंतिम 2 सप्ताह में, 510 से अधिक घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों को बम की धमकियां मिलीं, जो बाद में झूठी निकलीं। ऐसी धमकी से देश भर में विमानन कंपनियों के लिए परिचालन और आर्थिक संकट पैदा हो गया। ज्यादातर धमकियां सोशल मीडिया के माध्यम से दी गईं। पुलिस सूत्रों ने कहा कि दिल्ली से संचालित 150 से अधिक घरेलू या अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों को मिली धमकियों को लेकर 16 मामले दर्ज किए गए हैं।

भाजपा वाले कुछ भी कहें, राहुल गांधी के लिए देश से बढ़कर कुछ नहीं : प्रियंका गांधी

नई दिल्ली, दिसंबर : कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने भाजपा द्वारा लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को 'देशद्रोही' कहे जाने पर शुक्रवार को कहा कि सत्तारूढ़ दल के लोग कुछ भी कहें, उन्हें फर्क नहीं पड़ता क्योंकि उनके भाई के लिए देश से बढ़कर कुछ नहीं है।

उन्होंने कहा कि जो लोग देश की आजादी के लिए 13 साल जेल में काटने वाले पंडित जवाहर लाल नेहरू और पाकिस्तान के 2 टुकड़े करने वाली इंदिरा गांधी को 'देशद्रोही' कह सकते हैं, उनके लिए राहुल गांधी के लिए इस शब्द का इस्तेमाल करना कोई नई बात नहीं है। प्रियंका गांधी ने संसद परिसर में संवाददाताओं से कहा, 'मुझे मेरे भाई पर बहुत गर्व है, उनके लिए देश से बढ़कर कुछ नहीं है। उन्होंने देश की एकता के लिए 8,000 किलोमीटर की यात्रा की जिसमें से 4,000 किलोमीटर की पदयात्रा थी।' प्रियंका गांधी ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा, 'ये लोग कुछ भी कहते रहें, फर्क नहीं पड़ता।' भाजपा प्रवक्ता संबित पात्रा ने वीरवार को एक संवाददाता सम्मेलन में आरोप लगाया था कि लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी भारत को अस्थिर करने का प्रयास कर रही खोजी मीडिया समेत अंतर्राष्ट्रीय ताकतों के साथ संबंध रखते हैं और वह देशद्रोही हैं।

महिला गृह रक्षकों को 180 दिन का मातृत्व अवकाश मिलेगा : सुक्खू

शिमला, दिसंबर। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने महिला गृह रक्षकों को 180 दिन का मातृत्व अवकाश प्रदान करने की घोषणा की है। इसके अलावा उन्होंने प्रदेश के बाहर तैनाती के दौरान गृह रक्षकों के दैनिक भत्ते को 60 रु पए से बढ़ाकर 500 रु पए करने का भी ऐलान किया है। इसके लिए अगले बजट में प्रावधान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार गृह रक्षा बल को मजबूज करने के लिए 700 रिक्त पदों को भरेंगी। इसके अतिरिक्त, पालमपुर और कांगड़ा इकाई परिसर में एसडीआरएफ मुख्यालय के निर्माण और संचार प्रणाली को मजबूत करने के लिए धन आवंटित किया जाएगा। उन्होंने लोगों की सुविधा के लिए एसडीआरएफ नियंत्रण कक्ष में नए दूरभाष नम्बर स्वीकृत करने की भी घोषणा की। मुख्यमंत्री ने आपदा प्रबंधन की क्षमता में सुधार करने के लिए सभी जिला मुख्यालयों पर ड्रोन स्टेशन स्थापित करने की भी घोषणा की। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने शुक्र वार को शिमला के रजि मैदान में हिमाचल प्रदेश गृह रक्षा एवं नागरिक सुरक्षा के 62वें राज्य स्तरीय राइजिंग डे कार्यक्र म की अध्यक्षता की। इस वर्ष पहली बार राज्यस्तरीय समारोह का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम के दौरान कमाण्डर विनय कुमार के नेतृत्व में 17 टुकिडयां परेड में शामिल हुई। प्लाटून कमांडर लता राही के नेतृत्व में महिला टुकड़ी दल, संबांति कमांडर के नेतृत्व में प्रदेश के विभिन्न जिलों की टुकिडयों ने परेड का शानदार प्रदर्शन किया। गृह रक्षा जवानों द्वारा बैटल मार्चपास्ट और गृह रक्षा बैंड के द्वारा संगीत में प्रस्तुति भी दी गई। सुरिक्षत हिमाचल थीम पर गृह रक्षा के जवानों ने आपदा प्रबंधन तकनीक को प्रदिर्शत किया।

मुख्यमंत्री ने आपदा के कुशल प्रबंधन में गृह रक्षा एवं नागरिक सुरक्षा कर्मियों के समर्थन कार्यों और प्रतिबद्धता की सराहना की। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार राज्य आपदा प्रबंधन बल के आधुनिकीकरण के लिए प्रतिबद्ध है और इसके लिए आधुनिक उपकरण और पर्याप्त धनराशि आवंटित करने की दिशा मे कार्य किया जा रहा है। वर्तमान में एनडीआरएफ के पास 5 किलोग्राम की क्षमता तक वजन उठाने में सक्षम ड्रोन है और आपदा के प्रबंधन की दिशा में अधिक क्षमता वाले ड्रोन की आपूर्ति भी सुनिश्चित की जाएगी।

गृह रक्षा राइजिंग डे के अवसर पर अपनी शुभकामनाएं देते हुए मुख्यमंत्री ने गृह रक्षकों, अिग्नशमन विभाग के कर्मियों और एसडीआरएफ के अतुलनीय कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि प्रदेश ने विनाशकारी आपदा के दंश को झेला है जिसमें जानमाल का अत्याधिक नुक्सान हुआ था। उन्होंने स्वयं ग्राउंड जीरो में रह कर राहत एवं बचाव कार्यों का जायजा लिया और सभी के सहयोग से 75 हजार पर्यटकों को सुरिक्षत स्थान पर पहुंचाना सुनिश्चित किया, जिनमें लाहौल-स्पीति के चन्द्रताल में फंसे 300 पर्यटक भी शामिल थे। उन्होंने कहा कि आपदा के प्रबंधन में राजस्व मंत्री जगत सिंह नेगी और विधायक संजय अवस्थी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आपदा की स्थिति के दौरान अधिक से अधिक जन भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए आज से 6 जनवरी, 2025 तक राज्य स्तरीय आपदा प्रबंधन जागरूकता अभियान आरम्भ किया जाएगा और इसे जनभागीदारी से सफल बनाना सुनिश्चित किया जाएगा।

आबकारी नीति : धन शोधन मामले में केजरीवाल की याचिका पर अदालत का सुनवाई की तारीख आगे बढ़ाने से इंकार

नई दिल्ली, दिसंबर : दिल्ली हाईकोर्ट ने शुक्रवार को आम आदमी पार्टी (आप) के प्रमुख अरविंद केजरीवाल की उस याचिका पर सुनवाई की तारीख आगे बढ़ाने से इंकार कर दिया, जिसमें उन्होंने धन शोधन के एक मामले में उनके खिलाफ दायर आरोपपत्र पर संज्ञान लेने के निचली अदालत के आदेश को चुनौती दी थी। जस्टिस मनोज कुमार ओहरी ने कहा, 'मामले की सुनवाई उसी तारीख (20 दिसंबर) को होगी। मेरे पास सुनवाई के लिए और भी मामले हैं।'

केजरीवाल ने अपनी याचिका के संबंध में सुनवाई की तारीख 20 दिसंबर से आगे बढ़ाने का अनुरोध किया था। अदालत द्वारा सुनवाई की तारीख बदलने से इंकार करने के बाद केजरीवाल के वकील ने अनुरोध किया कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को याचिका पर उसके जवाब की प्रति अग्रिम रूप से उपलब्ध कराने का निर्देश दिया जाए। अदालत ने ईडी के वकील से कहा, 'आपने जो भी मामला दर्ज किया है, उसे उन्हें भी दे दीजिए।' हाईकोर्ट ने 21 नवंबर को धन शोधन मामले में केजरीवाल के खिलाफ निचली अदालत की कार्यवाही पर फिलहाल रोक लगाने से इंकार कर दिया था। हाईकोर्ट ने दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री की याचिका पर ईडी को नोटिस जारी कर जवाब मांगा था।

पति ने अपनी पत्नी और उसके आशिक को कुल्हाड़ी से काट कर उतारा मौत के घाट

■ उरई

कुठोद थाना क्षेत्र के अन्तर्गत ग्राम टिकरी मुस्तकिल मे गुरूवार रात करीब 10-11 बजे डबल मर्डर से पूरे गाँव मे सनसनी फैल गई,सूचना पाकर पुलिस फोर्स दलबल के साथ घटना स्थल पर पहुंच कर अपराधी को हिरासत मे ले लिया, साथ ही उस के कब्जे से हत्या में प्रयुक्त कुल्हाड़ी भी बरामद कर ली।

टिकरी निवासी कुंवर सिंह उर्फ ललोल की पत्नी आरती अवैध सम्बन्ध टिकावली निवासी छविनाथ उर्फ छक्की से काफी दिनो से चल रहा था, जिसकी खबर कुंवर सिंह को किसी तरह से मिली, कुंवर सिंह सूरत मे पानी पूडी का काम करता था, उसकी पत्नी के चाल-चलन की बजह से उसे समाज मे काफी बार नीचा भी देखना पडा था,उसके सगे सम्बन्धी से लेकर उसके परिवार बाले भी उससे संबन्ध नही रखते थे, जिसके कारण अत्याधिक तनाव मे रहता था, थोडे दिन पहिले पत्नी के सम्बन्धो की बजह से ही गाँव के एक व्यक्ति से झगडा हो गया था, कुंवर सिंह ने उस व्यक्ति की मार पीट कर दी थी,उस व्यक्ति ने कुंवर सिंह के खिलाफ थाने मे एफ.आई. आर की थी, उसके बाद कुंवर सिंह दुबारा सूरत चला गया था, इसी का फायदा उठाकर आरती और छक्की सिंह निडर होकर खुले मे रंगरलिया मनाने लगे थे, छक्की शराब का भी बहुत बडा आदी था,गुरूवार की रात को भी शराब के अत्याधिक नशे की हालत मे हो कर आरती के यहा गया था, उधर कुंवर सिंह को पहिले से ही शक था, जिसके कारण वह रात को 11 बजे के लगभग अपने घर की छत को फांद कर घर मे गया जहा उसने आरती और छक्की सिंह को आपत्तिजनक हालत मे देख कर अपना आप खो दिया और दोनो लोगो पर कुल्हाड़ी से कई बार किये जिससे आरती और छक्की सिंह दोनो लोगो की मौके पर मौत हो गई, कुंवर सिंह मौके पर ही बैठा रहा जिसे बाद मे पुलिस ने कुंवर सिंह और घटना मे प्रयोग की गई कुल्हाड़ी को अपने हिरासत मे ले लिया, आरती और कुंवर सिंह के दो छोटे छोटे पुत्र प्रान्शू और दीपांश जिनकी उम्र 10 बर्ष और 8 बर्ष है एवंम कुंवर सिंह की एक विधवा बूडी मां काफी सदमे मे है, आरती की थोडी सी ना समझी मे पूरा घर तास के पत्तो की तरह बिखर गया बच्चो के सर से मां बाप का साया ऊठ गया।

17 दिसम्बर को होगा पेंशनर्स दिवस का आयोजन

उरई। वरिष्ठ कोषाधिकारी आनन्द कुमार सिंह ने बताया कि राज्य सरकार के पेंशनरों की विभिन्न समस्याओं की जनपद स्तर पर सुनवाई व निराकरण हेतु प्रतिवर्ष 17 दिसम्बर को पेंशनर्स दिवस का आयोजन जनपद स्तर पर करने का निर्णय राज्य सरकार द्वारा लिया गया है। इसी क्रम में जनपद जालौन में 17 दिसम्बर 2024 को जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जनपद कोषागार उरई के प्रांगण में अपरान्ह 12 बजे से पेंशनर्स दिवस का आयोजन किया जायेगा। आयोजन का समन्वय वरिष्ठ कोषाधिकारी जालौन स्थान उरई द्वारा किया जायेगा। आयोजन में जनपद के समस्त कार्यालयाध्यक्ष भी प्रतिभाग करेंगे।

संक्षिप्त समाचार

सांप के काटने से महिला की हालत बिगड़ी, गम्भीर हालत में किया रिफर

कालपी -उरई । बीती देर रात को जहरीले सांप के काटने से 38 वर्षीय महिला की हालत खराब हो गई, पीड़िता के पति ने बेहोशी की हालत में महिला को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कालपी में भर्ती कराया। प्राप्त जानकारी के अनुसार चुर्खी थाना क्षेत्र के ग्राम गोराकला निवासी महावीर की पत्नी अंशु को घर में जहरीले सांप ने काट लिया, जिससे महिला की हालत बिगड़ने लगी। पति महावीर ने अपनी पत्नी को बेहोशी की हालत में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कालपी में भर्ती कराया। मध्य रात को इमरजेंसी ड्यूटी में तैनात चिकित्सक डॉ. गोपाल जी द्विवेदी तथा चीफ फार्मेसिस्ट वीरेंद्र कुमार ने महिला का प्राथमिक उपचार किया। जहां हालत गंभीर होने पर चिकित्सक ने महिला को जिला चिकित्सालय उरई के लिए रिफर कर दिया।

एसडीएम ने गिट्टी लदे ट्रक पकड़े

कोंच। उपजिलाधिकारी ने गिट्टी से लोड 2 ट्रक जरूरी कागजात न होने पर पकड़ लिए।उपजिलाधिकारी ज्योति सिंह ने सुबह क्षेत्र भ्रमण के दौरान कोंच-पिंडारी सड़क मार्ग से गिट्टी लादकर निकल रहे 2 ट्रक पकड़ लिए। चालक द्वारा मौके पर आवश्यक प्रपत्र प्रस्तुत न करने पर एसडीएम ने दोनों ट्रक कोतवाली कोंच पुलिस के सुपुर्द कर दिए। एसडीएम ने बताया कि मामले की जानकारी संबंधित विभाग को दे दी गयी है जिसके बाद उचित कार्यवाही अमल में लाई जाएगी।

मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने वारंटी को दबोचा

कोंच। खेड़ा चौकी प्रभारी संतराम कुशवाहा ने मुखबिर की सूचना पर शुक्रवार की सुबह मुहल्ला जयप्रकाश नगर निवासी वारंटी रहीश पुत्र कमालुउद्दीन को उसके भाई के घर से पकड़ लिया। पुलिस द्वारा उसे न्यायालय में पेश कर दिया गया। बताया जा रहा है कि रहीश के खिलाफ वर्ष 1991 में धारा 380, 411 के तहत कोतवाली में मामला दर्ज कराया गया था। तारीखों पर गैरहाजिर होने के चलते न्यायालय द्वारा उसका वारंट जारी कर दिया गया था। इतने सालों तक पुलिस की गिरफ्त में रहीश के न आ पाने को लेकर बताया गया है कि रहीस की माँ ने मुहम्मद हफीज से शादी की थी जिनकी संतान रहीस है। हफीज की मृत्यु के पश्चात मां ने कमालुद्दीन से शादी कर ली थी जिसके बाद रहीस ने आवश्यक दस्तावेजों में अपने पिता का नाम मुहम्मद हफीज ना दर्ज कराकर पिता का नाम कमालुद्दीन दर्ज करा लिया था और पहचान छिपाकर मध्य प्रदेश में रह रहा था।

निःशुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविर 8 दिसंबर को

कोंच। नि:शुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविर का आयोजन 8 दिसंबर रविवार को सुबह 10 से दोपहर 2 बजे तक विमल नेत्र परीक्षण केंद्र पुरानी स्टेट बैंक के पास डॉ. चंदेरिया के बगल कोंच में आयोजित किया जाएगा। केंद्र संचालक नेत्र परीक्षक कुलदीप सिंह ने लोगों से शिविर का लाभ लेने का आग्रह करते हुए कहा है कि आधार कार्ड, राशन कार्ड, आयुष्मान कार्ड एवं मोबाइल नंबर लाना अनिवार्य है। जिनके पास आयुष्मान कार्ड नहीं है वह आधार व राशन कार्ड की फोटो कॉपी लेकर आएं। मरीज कैंप में भर्ती होने की तैयारी के साथ आएं। अस्पताल के वाहन से उनको नारी समर्था साईं आई हॉस्पिटल कानपुर ले जाया जाएगा एवं ऑपरेशन के बाद लाकर यहीं छोड़ा जाएगा।

एसडीएम ने बीज की दुकानों का निरीक्षण कर सैंपल भरे

■ कोंच

उपजिलाधिकारी ने बीज़ की दुकानों का निरीक्षण कर सैंपल भरे।एसडीएम ज्योति सिंह और जिला कृषि अधिकारी गौरव यादव ने नगर में नदीगाँव रोड पर खुली बीज़ की 2 अलग अलग दुकानों सहित कैलिया में खुली एक दुकान पर जाकर जांच करते हुए दुकान से सम्बन्धित प्रपत्र जांचे। दुकान पर बिक्री के लिए रखे बीज़ की गुणवत्ता को परखने के लिए जिला कृषि अधिकारी ने गेंहू सहित लिक्विड दवा का सैंपल जांच हेतु भरा। एसडीएम ने बताया कि बीज़ की दुकानों पर उपलब्ध बीज़ की गुणवत्ता को परखने के लिए सैंपल भरकर जांच हेतु भेजा जा रहा है।यदि किसी प्रकार की जांच में कमी पाई गई तो संबंधित के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

रनवां गांव में निकाली गयी भव्य कलश यात्रा

जालौन-उरई। तहसील क्षेत्र के ग्राम रनवां में 371वां नौ कुंडीय श्रराम महायज्ञ व श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया जा रहा है। जिसके पहले दिन भव्य कलश यात्रा निकाली गई। श्रीराम जानकी मंदिर रनवां में परिसर में नौ कुंडीय श्रीराम महायज्ञ एवं श्रीमद भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। आयोजन के पहले दिन श्रृद्धालु भक्त ों ने कलश यात्रा में शामिल होकर कलश यात्रा को भव्य और आकर्षित बना दिया। महामंडलेश्वर 1008 निर्भय दास त्यागी दूधाधारी महाराज व कथावाचक पंडित रमा शास्त्री के नेतृत्व में गांव की विभिन्न गलियों से होकर कलश यात्रा गांव के सभी मंदिरों पर पहुंची। जहां से कलशों में जल भरा गया। बैंड बाजों की धुन पर बज रहे भक्ति गीतों पर श्रृद्धालुओं ने जमकर ठुमके लगाए। कथावाचक पंडित रमा शास्त्री ने कलश यात्रा के बाद श्रोताओं को पहले दिन की भागवत कथा का गूढ़ रहस्य श्रोताओं को श्रवण कराया। बताया कि भागवत कथा को सुनने से हृदय पवित्र हो जाता है। पूर्व युगों में जो पुण्य सैंकडों वर्ष की साधना से मिलता था, वह कलियुग में ईश्वर नाम के स्मरण और ध्यान से मिल जाता है। जरूरत है तो बस सच्चे हृदय ईश्वर का ध्यान करने की। कहा कि अपने घरों में गो पालन अवश्य करें और उसकी सेवा करें। कलश यात्रा के वापस यज्ञ स्थल पर पहुंचने पर यज्ञाचार्य आचार्य ने हवन व आहूतियां दिलाईं। कार्य म में यज्ञपति अरविंद निरंजन, ममता देवी, राम बाबू पटेल मुखिया प्रधान, बब्लू महाराज, बन्टी सिंह, राहुल पटेल, मनु पटेल, सौरभ, मोनू पटेल समेत बड़ी संख्या में भक्त मौजूद रहे।

बिहार: पश्चिम चंपारण का 52 वीं जिला स्थापना दिवस पर छात्र-छात्राओं ने लिया सामाजिक कुरीतियों से मुक्ति का संकल्प।

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)

बेतिया। पश्चिम चंपारण जिले के विभिन्न समाजिक संगठनों के संयुक्त तत्वधान में में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों, बुद्धिजीवियों एवं छात्र छात्राओं ने भाग लिया। इस अवसर पर सर्वप्रथम राष्ट्रपिता महात्मा गांधी,कस्तूरबा गांधी, चंपारण के विभूतियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए पश्चिम चंपारण कला मंच की संयोजक शाहीन परवीन , अंतरराष्ट्रीय पीस एम्बेसडर सह सचिव सत्याग्रह रिसर्च फाउंडेशन डॉ एजाज अहमद अधिवक्ता , पश्चिम चंपारण जिला की स्थापना में अतुल्य योगदान देने वाले विभूतियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए बेतिया पश्चिम चंपारण जिले के इतिहास पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला । इस अवसर पर डॉ0 एजाज अहमद ने कहा कि 01 दिसंबर 1971 को बिहार के तिरहुत प्रमंडल के चंपारण को पश्चिम चंपारण एवं पूर्वी चंपारण में नए जिले के रूप में स्थापित किया गया । 08 नवंबर 1972 को जिले को विस्तृत रूप प्रदान की गई । पश्चिम चंपारण एवं पूर्वी चंपारण जिला अस्तित्व में आ गया लेकिन मूलभूत सुविधाओं को उपलब्ध कराने में लगभग 5 वर्ष लग गए और 1976 में पूर्ण रूप से कार्य करना आरंभ कर दिया । इस अवसर पर डॉ एजाज अहमद अधिवक्ता डा अमानुल हक डॉ नीरज गुप्ता, सामाजिक कार्यकर्ता नवेंदु चतुवेर्दी एवं राजकीय बालिका मध्य विद्यालय की प्रधान अध्यापिका कुमारी नंदा ने संयुक्त रूप से पौधारोपण करते हुए कहा कि चंपा के पेड़ों जंगलों एवं प्राकृतिक सुंदरता से आच्छादित है, बेतिया पश्चिम चंपारण पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महाकाव्य काल में एवं पुराण में वर्णित है कि यहां के राजा उत्तानपाद के पुत्र ध्रुव ने चंपारण की धरती पर ज्ञान प्राप्त किया था। इस अवसर पर महर्षि बाल्मीकि, माता सीता, महात्मा गौतम बुद्ध, सम्राट अशोक ,राजा जनक , गयासुद्दीन ऐबक, महाराजा हरेंद्र किशोर सिंह, महारानी जानकी कुंवर , राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ,कस्तूरबा गांधी, आचार्य कृपलानी ,बतख मियां, शेख गुलाब, शेख शेर मोहम्मद, प्रजापति मिश्र, पीर मोहम्मद मुनीश,अकलु देवान, केदार पांडे जैसे अनेक विभूतियों को याद करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की ।

छ लाख से ज्यादा सभी वर्गों में नौकरी दी नीतीश सरकार ने - महेश्वर हजारी सूचना एवं जनसंपर्क मंत्री

जंगल राज को खत्म कर बिहार में समाज को आगे बढ़ाने का बीड़ा उठाया नीतीश कुमार ने - केंद्रीय मंत्री

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)

बेतिया। चंपारण सहित बिहार में 2005 के बाद विकास का सभी श्रेय नीतीश कुमार को जाता है। उक्त बातें केंद्रीय मंत्री रामनाथ ठाकुर शनिवार को बेतिया के बड़ा रमना स्थित ऑडिटोरियम में जदयू के जिला सम्मेलन में बोल रहे थे। आगे कहा कि कार्यकर्ता पार्टी के अंग होते हैं। वर्ष 2005 के पहले बेतिया मोतिहारी समेत पूरे बिहार में जंगल राज कायम हुआ करता था। लेकिन नीतीश जी ने जंगल राज को खत्म कर बिहार में सभी समाज को आगे बढ़ाने का बीड़ा उठाया वह लगातार चल रहा है। बिहार के सूचना एवं जनसंपर्क मंत्री महेश्वर हजारी ने संबोधित करते हुए कहा कि बिहार के मुख्यमंत्री और आम लोगों के धड़कन नीतीश कुमार ने बिहार में छ लाख से ज्यादा सभी टपकों में नौकरी दी है और मुख्यमंत्री पर कोई आरोप भी नहीं है बिलकुल साफ छवि है। इसी बिहार में देखिए लालू प्रसाद को नौकरी के एवज में नौकरी पाने वाले से जमीन लिखाया है जिसका जीता जागता उदाहरण अभी बिहार के लोग देख रहे है। साथ ही सूचना एवं जनसंपर्क मंत्री ने कहा कि हम सभी को मिलकर पार्टी को और मजबूत करना है ताकि बिहार के लोगो को ढोंगियों से बचाया जा सके। जदयू के मुख्य प्रवक्ता नीरज कुमार अपने संबोधन में कहा मैनेरोटी समेत समाज के सभी वर्गों के बढ़ावा के लिए नीतीश जी ने जितना काम किया है। उतना काम अपने आप को सेकुलर कहने वाले नहीं किया। सम्मेलन की अध्यक्षता पश्चिम चंपारण अध्यक्ष शत्रुघ्न प्रसाद कुशवाहा ने की जबकि मंच संचालन पश्चिम चंपारण अल्पसंख्यक सेल के अध्यक्ष असलम खा हक्की कर रहे थे। मंच पर अन्य नेता भी मौजूद रहे।

महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय का द्वितीय दीक्षांत समारोह में पहुंचे उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)

चंपारण। महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा राजा बाजार स्थित महात्मा गांधी प्रेक्षागृह में द्वितीय दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया। दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि भारत गणराज्य के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में सूबे के राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर थे। सांसद सह पूर्व केंद्रीय कृषि व किसान कल्याण मंत्री राधा मोहन सिंह उपस्थित थे। इस दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलाधिपति महेश शर्मा ने की व विवि के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। दीक्षांत समारोह की शुरूआत शैक्षणिक शोभा यात्रा के साथ सशस्त्र सीमा बल की धुन पर हुआ। राष्ट्रगान के पश्चात विश्वविद्यालय की कुलगीत का गायन हुआ। मां सरस्वती की प्रतिमा व बापू की प्रतिमा पर माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम की शुरूआत की गई। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर संजय श्रीवास्तव के द्वारा उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़, सूबे के राज्यपाल राजेंदे विश्वनाथ आर्लेकर, सांसद राधामोहन सिंह, कुलाधिपति डॉ. महेश शर्मा एवं सांसद राधा मोहन सिंह को उत्तरीय, संकट मोचन की प्रतिमा व महात्मा गांधी का जीवन चक्र चरखा देकर सम्मानित किया गया। विश्वविद्यालय के कूलानुशासक प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने विवि के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव को उत्तरीय, संकट मोचन की प्रतिमा व महात्मा गांधी का जीवन चक्र चरखा देकर सम्मानित किया।

संविधान निर्माता को पुण्यतिथि पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया याद

■ कोंच

संविधान निर्माता डॉ भीमराव अंबेडकर की पुण्यतिथि पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें याद किया।

मुहल्ला गोखले नगर बूथ संख्या 471 में आयोजित पुण्यतिथि कार्यक्रम में उपस्थित विधायक मूलचंद्र निरंजन और पूर्व विधायक कालपी नरेंद्र सिंह जादौन सहित पार्टी कार्यकर्ताओं ने वहां स्थापित डॉ अंबेडकर की प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित कर उन्हें नमन किया। विधायक ने इस अवसर पर कहा कि डॉ भीमराव अंबेडकर ने दबे कुचले शोषित वंचित व पिछड़े समाज को उनका हक दिलाने और आगे बड़ने का अवसर दिया है जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है। नगर चुनाव प्रभारी पूर्व विधायक कालपी नरेंद्र सिंह जादौन ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय संविधान में डॉ साहब ने देश की आधी से अधिक आबादी को आवाज दी है और उन्होंने जो संविधान गड़ा है उसे अक्षुण बनाये रखने की हम सभी की जिम्मेवारी है। डॉ साहब ने ऊंच-नीच, छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब के बीच की खाई खत्म करने का काम किया है। वह देश के महान पुरुष हैं। इस दौरान जिला उपाध्यक्ष वीरेंद्र चमरसेना, जिला मंत्री अंजू अग्रवाल, ओपी कुशवाहा, आशुतोष मिश्रा, शैलेष सोनी, अमित उपाध्याय, नरेश वर्मा, शिवसिंह कुशवाहा, बृजेंद्र कुशवाहा, नरेंद्र विश्वकर्मा, धर्मेंद्र राठौर, कृष्णकुमार झा, मनीष नगरिया, सभासद विनोद सोनी आदि मौजूद रहे।

कैश देने जा रही बैन खंदक में गिरी

■ कोंच

आर्यावर्त बैंक कैलिया में कैश देने जा रही बैन खंदक में गिर गयी। जानकारी के अनुसार तहसील क्षेत्र के ग्राम कैलिया स्थित आर्यावर्त बैंक शाखा में कैश देने के लिए बैंक से जुड़ी एक चारपहिया गाड़ी शुक्रवार की शाम बैक जा रही थी। बैंक शाखा से करीब 4 किमी पहले ग्राम कुदईया के पास से निकली नहर किनारे अचानक सड़क पर सामने से एक बाइक आ गयी। बाइक को बचाने के चक्कर में गाड़ी अनियंत्रित होकर सड़क किनारे स्थित खंदक में जाकर पलट गयी। गनीमत रही कि गाड़ी में सवार किसी भी व्यक्ति को कोई चोट नहीं आयी। वहीं घटना की जानकारी मिलते ही बैंक शाखा प्रबंधक बैंक कर्मचारियों के साथ मौके पर पहुंचे और गाड़ी खंदक में से बाहर निकलवाई।

मार्निंगवॉक पर जाने वालों का सीओ ने हाल चाल जाना

■ कोंच

भोर सुबह मॉर्निंगवॉक के लिए निकलने वाली पुलिस महिलाओं और युवतियों से मिलकर क्षेत्राधिकारी ने उनसे उनकी परेशानी के बारे में जानकारी ली।बृह्ममुहूर्त में सीओ अर्चना सिंह ने प्रभारी निरीक्षक अरुण कुमार राय के साथ सरोजिनी नायडू पार्क, गल्ला मंडी परिसर, पंचानन चौराहा आदि स्थानों पर पहुंचकर वहाँ मॉर्निंगवॉक कर रहे पुरूष महिलाओं और युवतियों से जानकारी ली। सीओ ने कहा कि यदि कोई आते जाते समय रास्ते में परेशान करता हो तो उसकी जानकारी अवश्य दें ताकि पुलिस कार्यवाही कर सके। आम नागरिकों की सुरक्षा करना पुलिस का कर्तव्य है और किसी को भी सुरक्षात्मक दृष्टि से परेशान नहीं होने दिया जाएगा। सर्दी के मौसम को देखते हुए सीओ ने कहा कि सुबह सवेरे पीआरबी और मोबाइल बाइक पुलिस मॉर्निंगवॉक के सभी स्थानों पर मुस्तैद रहेगी। इस दौरान सीओ और कोतवाल ने मॉर्निंगवॉक कर रहे तमाम पुरुषों से भी जानकारी हासिल की तथा सभी को भरोसा दिया निडर होकर मॉर्निंगवॉक पर जाए किसी से डरने की जरूरत नही है।पुलिस आपकी सुरक्षा में तैनात है उन्होने यह भी कहा स्वस्थ रहने के लिया सुबह घूमना बहुत जरूरी है।

शुक्रवार को नई दिल्ली में संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान अडानी मुद्दे पर विरोध मार्च में शामिल हुए लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी और अन्य सांसद। ■ छाया : एजेंसी

सरकार बनी तो महिलाओं, वृद्धों और दिव्यांगों को मिलेंगे 1500 रुपए : तेजस्वी

● पटना/बेगूसराय, वार्ता

बिहार विधानसभा में प्रतिपक्ष के नेता तेजस्वी प्रसाद यादव ने अगले वर्ष होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले ही एक बड़ी राजनीतिक चाल चलते हुए शुक्रवार को कहा कि महिलाओं, वृद्धों और दिव्यांगों को हर महीने 1500 रुपए पेंशन के तौर पर दिया जाएगा ।

यादव ने शुक्रवार को अपनी पार्टी राष्ट्रीय जनता दल (राजद) की ओर से आयोजित जनता संवाद सह कार्यकर्ता दर्शन कार्यक्रम के दौरान कहा कि कई राज्यों में महिलाओं को एकमुश्त राशि मिल रही है। अब बिहार में भी उन्होंने ऐसी घोषणा की है। उन्होंने कहा कि वह महिलाओं को हर महीने 1500 रुपए देंगे। अगले वर्ष होने वाले विधानसभा के चुनाव को लेकर प्रतिपक्ष के नेता का यह बड़ा दांव माना जा रहा है। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि यदि वर्ष 2025 में राजद की सरकार

बनती है तो सभी वृद्ध, दिव्यांग और महिला को प्रत्येक महीने 1500 रुपए पेंशन के रूप में दिए जाएंगे। साथ ही हर परिवार को 200 यूनिट फ्री बिजली दी जाएगा। माना जा रहा है अपनी घोषणा से तेजस्वी ने अगले साल होने वाले चुनाव के लिए अपनी पहली चाल चल दी है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2025 का चुनाव उनकी पार्टी जीतेगी। उपचुनाव के नतीजे से मुख्य चुनाव के नतीजे को नहीं आंका जा सकता है। उपचुनाव के जो नतीजे हैं और मुख्य चुनाव का जो नतीजा होता है उसमें अंतर होता है। हम सबको जोड़ रहे हैं, जोड़ेंगे तभी तो वोट पड़ेगा।

नई दिल्ली में शुक्रवार को संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान संसद भवन के बाहर कुछ इस तरह सांसद रवि किशन। ■ छाया : एजेंसी

सार संक्षेप

अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी ने मुश्किलों से निपटने का तरीका बताया

मुंबई : बॉलीवुड अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी ने अपने प्रशंसकों को मुश्किलों से निपटने का तरीका बताया है। शिल्पा ने मुश्किलों से निपटने का तरीका अपनी इंस्टाग्राम पोस्ट पर साझा किया है। शिल्पा शेट्टी ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट के स्टोरी सेक्शन में एक पोस्ट की। जिसमें एक किताब का पन्ना उन्होंने साझा किया है। इस किताब के पन्ने पर मुश्किलों से निपटने का बहुत ही बेहतरीन तरीका बताया गया है। किताब के पन्नों में लिखा गया है कि यदि हमारे पास अपना और अपने जीवन में आने वाली परिस्थतियों का मजाक उड़ाने की क्षमता नहीं है तो यह दुनिया एक खराब जगह बन जाएगी। यदि हमारे साथ कोई बुरी घटना हो रही है तो हमें उसे हास्य के जरिए बेहतरीन किस्से और कहानी में बदल देना चाहिए। जब हम इन कहानियों को दोबारा सुनाएं या सुने तो हमें महसूस होना चाहिए कि जिदगी में जो भी परिस्थिति बनी, हमने उसका पूरी तरह से सामना किया।

बिहार के पूर्व पुलिस महानिदेशक डीपी ओझा का निधन

पटना: बिहार के पूर्व पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) डी. पी. ओझा का निधन हो गया। ओझा 1967 बैच के आईपीएस थे और एक फरवरी 2003 को डीजीपी का पदभार ग्रहण किया था। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान राज्य में कानून व्यवस्था को सुदृढ़ करने और राजनीति एवं अपराध के गठजोड़ के खिलाफ सख्त कदम उठाने के लिए ख्याति पाई थी।डीजीपी कार्यकाल के दौरान राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव और सीवान के सांसद मोहम्मद शहाबुद्दीन की नाक में दम कर देने वाले डीपी ओझा कुछ समय से बीमार चल रहे थे। स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से पीड़ित ओझा भारतीय पुलिस सेवा की नौकरी से वीआरएस लेने के बाद से पटना में ही रह रहे थे। लालू यादव ने मुख्यमंत्री राबड़ी देवी की सरकार में डीपी ओझा को डीजीपी बनाया था।

फिल्म 'पुष्पा- 2' ने पहले दिन दुनियाभर में 294 करोड़ कमाए

मुंबई: अल्लू अर्जुन की मोस्ट अवेटेड फिल्म पुष्पा- 2 सिनेमाघरों में ओपनिंग डे पर दुनियाभर में 294 करोड़ की कमाई की। इसमें इंडियन बॉक्स ऑफिस पर फिल्म का कलेक्शन 175.1 करोड़ रुपए रहा। पुष्पा-2 ने हिंदी वर्जन में 72 करोड़ रुपए की कमाई की है। हिंदी वर्जन में शाहरुख खान की फिल्म 'जवान' का रिकॉर्ड भी तोड़ दिया। जवान ने पहले दिन हिंदी बेल्ट में करीब 65 करोड़ का कलेक्शन किया था। वर्ल्डवाइड में कलेक्शन के साथ पुष्पा- 2 अब तक की सबसे बड़ी ओपनिंग करने वाली भारतीय फिल्म बन गई है। साल 2021 में पुष्पा ने भी बॉक्स ऑफिस पर कई रिकॉर्ड्स बनाए थे। इंडियन बॉक्स ऑफिस पर कलेक्शन के मामले में भी पुष्पा-2 ने एसएस राजामौली की फिल्म 'आरआरआर' के रिकॉर्ड को तोड़ दिया है।

बांग्लादेश ने डिप्लोमैट्स वापस बुलाए

दूतावास पर हुए हमले बाद लिया निर्णय

ढाका में भारतीय प्रोडक्ट्स का किया गया बहिष्कार

● ढाका, एजेंसी

भारत और बांग्लादेश के रिश्तों में नई खटास देखने को मिल रही है। कोलकाता और त्रिपुरा में बांग्लादेशी मिशन पर हुए हमलों और विरोध प्रदर्शनों के बाद ढाका ने अपने डिप्लोमैट्स वापस बुला लिए हैं। इसके साथ ही, बांग्लादेश में भारतीय प्रोडक्ट्स के बायकॉट की मांग जोर पकड़ रही है। ढाका में भारत से एक्सपोर्ट किए गए प्रोडक्ट्स का बायकॉट करने की अपील की गई।

कोलकाता में बांग्लादेश के एक्टिंग डिप्टी हाई कमिश्नर मोहम्मद अशरफुर रहमान ढाका पहुंच चुके हैं। उन्होंने बांग्लादेशी सरकार के फॉरेन एडवाइजर तौहीद हुसैन से मुलाकात भी की। अशरफुर ने तौहीद को अगरतला में हुए हमले और ताजा हालात की जानकारी दी। त्रिपुरा के बांग्लादेशी असिस्टेंट हाई कमिश्नर आरिफ मोहम्मद फिलहाल ढाका नहीं पहुंचे हैं। उधर, अगरतला-कोलकाता की घटना के जवाब में बांग्लादेश में भी प्रदर्शन हो रहे हैं। गुरुवार को बांग्लादेशी नेताओं ने ढाका में भारतीय साड़ी जलाकर इंडियन प्रोडक्ट्स को बायकॉट करने की अपील की।बांग्लादेश के विदेश मंत्रालय का आरोप है कि भारतीय हिंदुत्व संगठनों के समर्थकों

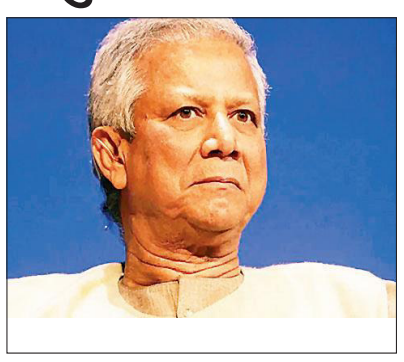

ने 2 दिसंबर को अगरतला के हाई कमीशन में बांग्लादेशी झंडे का अपमान किया था। उन्होंने परिसर पर हमला भी किया था। 3 दिसंबर को बांग्लादेश ने हाई कमीशन को बंद कर दिया था। बांग्लादेश सरकार की ओर से अभी बताया नहीं गया है कि दोनों डिप्लोमैट्स को वापस भारत कब भेजा जाएगा। अगरतला के हाई कमीशन को वापस शुरू करने को लेकर भी अभी कोई सूचना नहीं दी गई है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, दोनों डिप्लोमैट्स भारत में बांग्लादेश के खिलाफ हो रहे प्रदर्शन की स्थिति की रिपोर्ट पेश करेंगे।2 दिसंबर को बांग्लादेशी मिशन के आसपास कई लोगों ने बांग्लादेश इस्कॉन के पूर्व प्रमुख चिन्मय प्रभु की गिरफ्तारी के विरोध में रैली निकाली थी। इसी दौरान 50 से ज्यादा प्रदर्शनकारी अगरतला स्थित बांग्लादेशी असिस्टेंट हाई कमीशन के परिसर में घुस गए थे। इस मामले में 7 लोगों को गिरफ्तार किया गया था। प्रदर्शनकारियों के परिसर में घुसपैठ के मामले में तीन सब इंस्पेक्टरों को सस्पेंड कर दिया गया। एक ऊढ को ड्यूटी में लापरवाही के चलते पुलिस हेडक्वार्टर में रिपोर्ट करने के लिए कहा गया। भारतीय विदेश मंत्रालय ने भी कहा था कि उन्हें इस घटना को लेकर बहुत ही अफसोस है।चिन्मय कृष्ण दास ब्रह्मचारी का असली नाम चंदन कुमार धर है। वे चटगांव इस्कॉन के प्रमुख हैं। बांग्लादेश में जारी हिंसा के बीच 5 अगस्त 2024 को ढट शेख हसीना ने देश छोड़ दिया था। इसके बाद बड़े पैमाने पर हिंदुओं के साथ हिंसक घटनाएं हुईं। इसके बाद बांग्लादेशी हिंदुओं और अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा के लिए सनातन जागरण मंच का गठन हुआ। चिन्मय प्रभु इसके प्रवक्ता बने। सनातन जागरण मंच के जरिए चिन्मय ने चटगांव और रंगपुर में कई रैलियों को संबोधित किया। इसमें हजारों लोग शामिल हुए।25 अक्टूबर को चटगांव के लालदीघी मैदान में सनातन जागरण मंच ने 8 सूत्री मांगों को लेकर एक रैली की थी। इसमें चिन्मय कृष्ण दास ने भाषण दिया था। इस दौरान न्यू मार्केट चौक पर कुछ लोगों ने आजादी स्तंभ पर भगवा ध्वज फहराया था। इस ध्वज पर 'आमी सनातनी' लिखा हुआ था। रैली के बाद 31 अक्टूबर को बेगम खालिदा जिया की बीएनपी पार्टी के नेता फिरोज खान ने चिन्मय कृष्ण दास समेत 19 लोगों के खिलाफ चटगांव में राजद्रोह का केस दर्ज कराया।

एमएसपी गारंटी कानून इसी सत्र में लाए : सुरजेवाला

● नई दिल्ली,

कांग्रेस ने शुक्रवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनकी सरकार को आंदोलन कर रहे किसानों को बातचीत के लिए बुलना चाहिए और एमएसपी की कानूनी गारंटी देने की उनकी मांग मानते हुए संसद के इसी सत्र में इससे संबंधित विधेयक लाकर उसे पारित कराना चाहिए।

कांग्रेस महासचिव रणदीप सिंह सुरजेवाला ने आज यहां पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि श्री मोदी को किसानों से तत्काल वार्ता करनी चाहिए और उनकी मांग मानते हुए न्यूनतम समर्थन मूल्य-एमएसपी को कानूनी जामा पहनाना चाहिए। यह किसानों की जायज मांग है और मोदी ने उनसे यह वादा भी किया था।

उन्होंने कहा कि हमारी केंद्र सरकार से दो टूक मांग है कि वह किसानों पर दमनकारी रवैया छोड़कर उनके साथ सौहार्दपूर्ण ढंग से बातचीत करें और अपने पुराने वायदे के मुताबिक़ फसलों की एमएसपी की क़ानूनी गारंटी समेत सभी मांगों को स्वीकार करके लागू करने की घोषणा संसद में करें। उनका कहना है कि किसान अपनी जायज मांगों के लिए शांतिपूर्ण आंदोलन कर रहे हैं उन पर किया गया कोई भी दमन इस सरकार के

लिए आखिरी कील साबित होगी।

कांग्रेस नेता ने सरकार पर संसद में भी झूठ बोलने का आरोप लगाया और कहा कि कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान सदन में कहते हैं कि किसान को लाभ दिया जा रहा है और उसकी फसल पर्याप्त मात्रा में खरीदी जा रही है। उन्होंने यह भी कहा कि एमएसपी पर फसल खरीदी जाती है जबकि सच्चाई इसके विपरीत है। संसद में कृषि मंत्री कहते हैं कि किसान को लागत से 100 से 200 प्रतिशत अधिक एमएसपी दिया जा रहा है लेकिन वास्तविकता यह है कि किसान को फसल की लागत भी नहीं दी जा रही। उन्होंने कहा कि वक्त आ गया है कि प्रधानमंत्री खुद देश के किसानों को बुलाएं और एमएसपी की कानूनी गारंटी का विधेयक संसद के इसी सत्र में लेकर आएं।

विदेश सचिव सोमवार को जाएंगे बांग्लादेश

नई दिल्ली: बांग्लादेश में प्रधानमंत्री शेख हसीना की सरकार के तख्तापलट होने के बाद दोनों देशों के बीच पहली बार हो रही विदेश कार्यालय स्तर की परामर्श बैठक में शामिल लेने के लिये विदेश सचिव विक्रम मिस्री सोमवार को ढाका जायेंगे। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने शुक्रवार को यहां नियमित ब्रीफिंग में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि बंगलादेश के साथ विदेश कार्यालय स्तर की परामर्श बैठक (एफओसी) पर विदेश सचिव नौ दिसंबर को ढाका जाने वाले हैं। यह बंगलादेश पक्ष के साथ हमारी संरचित बातचीत का हिस्सा है। विदेश सचिव की यात्रा में बंगलादेश के साथ बातचीत में भारतीय हितों एवं अपेक्षाओं के बारे में एक सवाल पर जायसवाल ने कहा कि इस मुद्दे पर हम पहले भी बात कर चुके हैं।

सीएम मोहन यादव की 'काकी' का निधन

भोपाल: मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव शुक्रवार को अपनी 'काकी' के निधन के कारण अचानक गृहनगर उज्जैन पहुंचे और उन्हें अंतिम विदाई दी। डॉ यादव ने सोशल मीडिया एक्स पर इस संबंध में लिखा है कि ममता, वात्सल्य एवं अनुशासन की प्रतिमूर्ति, मां के समान सदैव स्नेह की वर्षा कर मुझे श्रम और समर्पण से सफलता के लिए प्रेरित करने वाली परम पूज्य काकी अन्नपूर्णा देवी यादव का देवलोकगमन अत्यंत ही दुखद है। उज्जैन स्थित निवास पर श्रद्धेय काकी जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके चरणों में कोटि कोटि प्रणाम किया। आपका अनुशासित जीवन हम सभी को सदैव प्रेरणा देता रहेगा। बाबा महाकाल से करबद्ध प्रार्थना है कि दिवंगत की परम पुण्य आत्मा को मोक्ष एवं शांति प्रदान करें। मुख्यमंत्री पोस्ट के साथ ही कुछ चित्र भी साझा किए हैं।

हुर्रियत अध्यक्ष मीरवाइज घर में नजरबंद

श्रीनगर: कश्मीर के मुख्य मौलवी एवं हुर्रियत के अध्यक्ष मीरवाइज उमर फारूक ने शुक्रवार को कहा कि उन्हें नजरबंद कर दिया गया और ऐतिहासिक जामिया मस्जिद में धर्मोपदेश देने से रोक दिया गया है। श्री मीरवाइज ने 'एक्स' पर लिखा कि मैं शुक्रवार को धर्मोपदेश और नमाज के लिए जामा मस्जिद जाने वाला था, तभी मुझे मौखिक रूप से बताया गया कि मुझे आज नजरबंद कर दिया गया है और मुझे जामा मस्जिद जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी। उन्होंने कहा कि क्या यह आज बाबरी मस्जिद विध्वंस की 32वीं वर्षगांठ से संबंधित है? अध्यक्ष ने कहा कि मस्जिद और दरगाह सर्वेक्षणों की लहर जिसके खिलाफ हमने आवाज उठाई थी, कोई भी अनुमान लगा सकता है? उन्होंने अपने आवास के बाहर पुलिसकर्मियों की तस्वीर भी पोस्ट की।

शुक्रवार को रांची के प्रोजेक्ट बिल्डिंग में कैबिनेट बैठक के बाद नवनियुक्त मंत्रिपरिषद के साथ शपथ ग्रहण करने के बाद झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन।

किसानों की आय बढ़ाने के लिए सरकार प्रतिबद्ध

● नई दिल्ली,

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने राज्यसभा में किसानों की आय बढ़ाने की प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा कि इस दिशा में छह सूत्री रणनीति पर काम किया जा रहा है।

चौहान ने सदन में प्रश्नकाल के दौरान एक पूरक प्रश्न के उत्तर में कहा कि किसानों को गुणवत्ता युक्त बीज, खाद और उर्वरक तथा सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसके लिए सरकार मुख्य फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य फसल लागत का कम से कम 50 प्रतिशत जोड़कर दे रही है। सरकार उन सभी फसलों का एमएसपी उपलब्ध कराती है, जिनका बाजार भाव लागत से कम होता है। उन्होंने विभिन्न आंकड़ों के हवाले से कहा कि सरकार का कृषि आवंटन लगातार

बढ़ रहा है और सरकार किसानों की आय बढ़ाने की लगातार प्रयास कर रही है। एक अन्य पूरक प्रश्न के उत्तर में चौहान ने कहा कि कांग्रेस की सरकारों ने किसानों की आय बढ़ाने के लिए स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को लागू करने से इंकार कर दिया था जबकि मोदी सरकार किसानों की लगातार लाभकारी मूल्य देने का प्रयास कर रही है। मौजूदा सरकार फसलों का शत प्रतिशत लाभकारी मूल्य दे रही है। चौहान ने कहा कि राज्यों के लिए कृषि में अलग-अलग आवंटन किया जाता है। किसानों को पूरे उर्वरकों की आपूर्ति की जाएगी। किसी राज्य के साथ भेदभाव नहीं किया जाएगा। किसानों का उर्वरकों पर सब्सिडी दी जा रही है, जिससे सस्ता खाद मिल सके। सरकार ने किसानों के लिए सब्सिडी जारी रहेगी।

एक अन्य प्रश्न के उत्तर में कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि देश में जैव उर्वरकों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। किसानों को जैव उर्वरकों के प्रयोग के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है। सरकार जैविक और प्राकृतिक खेती पर बल दे रही है। इसके लिए तीन योजनाएं लागू की जा रही है।

श्रीनगर में पारा शून्य से 4.1 डिग्री नीचे लुढ़का

पहलगाम, गुलमर्ग और कोनीबल जैसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में ठंड और भी अधिक रही

● श्रीनगर,

जम्मू-कश्मीर स्थित कश्मीर घाटी में लगातार जारी ठंड ने अपना शिकंजा और कस लिया है। अधिकारियों ने बताया कि शुक्रवार को श्रीनगर में इस मौसम की सबसे ठंडी रात दर्ज की गई, जहां तापमान शून्य से 4.1 डिग्री सेल्सियस नीचे दर्ज किया गया।

मौसम विभाग के कार्यालय ने बताया कि जम्मू-कश्मीर की ग्रीष्मकालीन राजधानी श्रीनगर में एक दिन पहले इस मौसम का सबसे कम तापमान शून्य से 2.1 डिग्री सेल्सियस नीचे दर्ज किया गया था, जो आज शून्य से 4.1 डिग्री सेल्सियस नीचे पहुंच गया। यह तापमान इस मौसम के दौरान सामान्य से 2.9 डिग्री सेल्सियस कम है। पहलगाम, गुलमर्ग

और कोनीबल जैसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में ठंड और भी अधिक रही, जहां पारा तेजी से गिरा और न्यूनतम तापमान क्रमशः शून्य से 6.5 डिग्री सेल्सियस, शून्य से 4.3 डिग्री सेल्सियस और शून्य से 6.0 डिग्री सेल्सियस नीचे दर्ज किया गया।

पहलगाम का पर्यटन स्थल न केवल पिछली रात की तुलना में अधिक ठंडा रहा, बल्कि इस अवधि के दौरान दक्षिण कश्मीर के लोकप्रिय हिल स्टेशन के लिए मौसमी औसत से 3.2 डिग्री सेल्सियस कम था। गुलमर्ग के प्रसिद्ध स्की रिसॉर्ट में पिछली रात के तापमान शून्य से 3.6 डिग्री सेल्सियस नीचे के मुकाबले शून्य से 4.3 डिग्री सेल्सियस नीचे तापमान दर्ज किया गया। यह इस अवधि के दौरान उत्तरी कश्मीर के बारामूला जिले में घास के मैदानों की घाटी के लिए सामान्य से 1.2 डिग्री सेल्सियस कम था। श्रीनगर-जम्मू राष्ट्रीय राजमार्ग पर कश्मीर के प्रवेश द्वार काजीगुंड में भी रात के तापमान में गिरावट देखी गई और शुक्रवार को तापमान शून्य से 4.4 डिग्री सेल्सियस नीचे दर्ज किया गया, जबकि पिछली रात शून्य से 2.7 डिग्री सेल्सियस नीचे दर्ज किया गया था और यह सामान्य से 3.2 डिग्री सेल्सियस कम था। कुपवाड़ा में न्यूनतम तापमान पिछली रात तापमान शून्य से 2.5 डिग्री सेल्सियस के मुकाबले 3.4 डिग्री सेल्सियस तक गिर गया। मौसम की इस अवधि के दौरान सीमांत कश्मीर जिले में तापमान सामान्य से 1.7 डिग्री सेल्सियस कम रहा। कोकरनाग में पिछली रात के शून्य से 1.4 डिग्री सेल्सियस कम तापमान के मुकाबले शून्य से 2.4 डिग्री सेल्सियस कम तापमान दर्ज किया गया, जो सामान्य से 1.8 डिग्री सेल्सियस कम रहा।

नई दिल्ली में शुक्रवार को संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान संसद भवन के बाहर खड़े सांसद।

संपादकीय

दोषियों को जमानत

मेरठ के 1987 के हाशिमपुरा कांड के 10 दोषियों को सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को जमानत दे दी। जस्टिस अभय एस ओका और जस्टिस ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की बेंच के सामने पेश सीनियर एडवोकेट अमित आनंद तिवारी ने दलील दी कि दिल्ली हाईकोर्ट ने गलत तथ्यों के आधार पर ट्रायल कोर्ट का फैसला पलटा था। ट्रायल कोर्ट ने घटना के करीब 28 साल बाद 2015 में फैसला सुनाते हुए सभी आरोपियों को सबूतों की कमी के आधार पर बरी कर दिया था। हालांकि, दिल्ली हाईकोर्ट ने 2018 में 16 लोगों को उम्रकैद की सजा सुनाई। एडवोकेट तिवारी ने तर्क दिया कि हाईकोर्ट के फैसले के खिलाफ याचिका सुप्रीम कोर्ट में लंबित है, लेकिन सभी 2018 से जेल में हैं। इस वजह से उन्हें जमानत दी जाए। हाशिमपुरा के दोषियों को 31 साल बाद सजा मिल थी, लेकिन छह साल बाद जमानत भी मिल गई। मेरठ का हाशिमपुरा कांड बेहद चर्चित रहा था। 1987 में मेरठ में सांप्रदायिक दंगा भड़क गया था। पीएसी ने तलाशी के नाम पर करीब 42-45 लोगों, जिनमें युवाओं की संख्या ज्यादा थी, को पकड़ा और उन्हें एक ट्रक में भरकर मुरादनगर गंगनहर पर ले गए और उन्हें गोली मार गंगनहर में फेंक दिया था। इस नरसंहार में कुछ लोग बच गए थे, जिन्होंने पूरी कहानी बयां की थी।

31 साल बाद 31 अक्टूबर, 2018 हाईकोर्ट ने ट्रायल कोर्ट के फैसले को पलटते हुए सभी 16 आरोपियों को उम्रकैद की सजा सुनाई थी। अब उन्हें जमानत दे दी गई।

2006 में दिल्ली की ट्रायल कोर्ट ने हत्या, आपराधिक साजिश, अपहरण, सबूत मिटाने और दंगा करने के अलावा अन्य मामलों में 19 आरोपियों के खिलाफ आरोप तय किए। हालांकि, लापरवाही यहां खत्म नहीं हुई। आरोपियों के बयान करीब 8 साल बाद मई, 2014 में दर्ज हुए। 2015 में सभी 16 आरोपियों को ट्रायल कोर्ट ने बरी कर दिया। कोर्ट ने कहा कि हत्या से आरोपियों को जोड़ने के लिए जरूरी सबूत गायब थे। ट्रायल कोर्ट के फैसले को पीड़ितों और उनके परिवारों ने दिल्ली हाईकोर्ट में चुनौती दी। आगे की जांच के लिए कोर्ट ने राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग को हस्तक्षेप करने की मंजूरी दी। हाईकोर्ट ने अतिरिक्त सबूत जोड़ने की भी अनुमति दी। हाईकोर्ट ने सभी को धारा 302 (हत्या), 364 (अपहरण), 201 (सबूत मिटाने), 120-इ (आपराधिक साजिश) के तहत दोषी माना। घटना के करीब 31 साल बाद 31 अक्टूबर, 2018 हाईकोर्ट ने ट्रायल कोर्ट के फैसले को पलटते हुए सभी 16 आरोपियों को उम्रकैद की सजा सुनाई थी। दोषियों ने हाईकोर्ट के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दे रखी है। शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट ने 10 दोषियों को जमानत दे दी।

पाठकवाणी

भगत सिंह के विचारों से डर क्यों?

'राख का हर एक कण मेरी गर्मी से गतिमान है, मैं एक ऐसा पागल हूं जो जेल में भी आजाद है'। भगत सिंह के विचार आज भी प्रासंगिक है। लेकिन सवाल यह है कि उनके विचार से भारतीयों को दूर क्यों रखा गया? कितनी हैरानी की बात है कि जो व्यक्ति अपने क्रांतिकारी चिंतन और बलिदान के कारण जन-जन में लोकिप्रय हुआ, उस पर इतना कम क्यों लिखा गया? और जो लिखा गया, उसमें उनके क्रांतिकारी विचार ही गायब कर दिए गए। उनकी छवि एक गबरू पंजाबी जवान की ही दिखायी गई है, जिसने हंसते-हंसते फांसी के फंदे को चूम लिया। एक क्रांतिकारी चिंतक के रूप में उन्हें बहुत कम दिखाया गया है। जरा सोचें, 23-24 साल की उम्र ही क्या होती है? जरा तुलना करें आज के नौजवानों की उस नौजवान से जो इस उम्र में जेल में डायरी लिख रहा था। सोच रहा था कि उसके सपनों का भारत कैसे बनेगा? बहुसंख्य जनता के अमानवीय शोषण का हल ढूंढ़ लिया था। भगत सिंह ने देश-दुनिया की क्रांतिकारी परंपराओं का गहन अध्ययन किया था। उनके द्वारा पढ़ी गई पुस्तकों की सूची हमें विस्मित करती है। आज के नौजवान क्या पढ़ रहे हैं? आज की पढ़ाई रातोंरात अमीर बनने की चाहत पैदा कर रही है। बच्चे धनलिप्सा में अपने बूढ़े मां-बाप को छोड़ विदेशों में जाकर बस रहे हैं। इसे रोकना होगा।

-संदीप कुमार, मधुपुर (झारखंड)

कुछ खास

जो लोग आजादी की लड़ाई में 13 साल जेल में रहने वाले जवाहरलाल नेहरू जी को देशद्रोही कह सकते हैं..जो पाकिस्तान के दो टुकड़े करने वाली इंदिरा जी को देशद्रोही कह सकते हैं, जो राजीव गांधी जी को देशद्रोही कह सकते हैं..वो अगर राहुल जी के लिए ऐसा कह रहे हैं, तो कोई नई बात नहीं है। -**प्रियंका गांधी**, कांग्रेस महासचिव

आज का ट्वीट

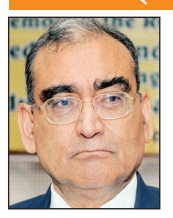

''सीजेआई खन्ना में इतनी हिम्मत नहीं कि वो 'प्लेसेज ऑफ वर्शिप एक्ट' लागू कर दें। इससे भाजपा नाराज हो जाएगी, रिटायरमेंट के बाद पद नहीं मिलेगा।''

-जस्टिस मार्कंडेय काटजू

साइबरवर्ल्ड

यह कैसा समाज बना दिया?

मोदी के 12 साल के शासन की सबसे बड़ी सफलता एक ऐसे समाज का निर्माण है जो अब स्वतः स्फूर्त इस्लामोफोबिया से भरा हुआ है। अब उसे किसी नेतृत्व या मोटिवेशन की जरूरत नहीं है। मुसलमानों के प्रति जो नफरत लोगों में पहले किसी कोने में दबी रहती थी, अब वो खुल कर सामने है। अब उनको सार्वजनिक रूप से इस नफरत के इजहार पर संकोच नहीं होता। अब लोग इस नफरत के सहारे निजी स्वार्थ साधने से लेकर राजनीतिक लक्ष्य प्राप्त करने में जोर शोर से लगे हुए हैं। मुसलमानों के प्रति यह नफरत समाज के सभी वर्गों और स्तरों पर समान रूप से पाई जाने लगी है। पुलिस, प्रशासन, न्यायपालिका, मीडिया, लेखक, कलाकार, खिलाड़ी, भूतपूर्व सैनिक, छात्र, गृहणी, व्यापारी, सरकारी अफसर और कर्मचारी, वकील आदि सभी लोग इस नफरत का इजहार करने में बढ़चढ़ कर आगे रहे हैं। कहीं कोई गुरेज या संकोच नहीं है, क्योंकि उनको इस बात का अब पूर्ण विश्वास हो चुका है कि न तो कानून उनका कुछ बिगाड़ सकता है और न ही पुलिस प्रशासन उनके खिलाफ कोई एक्शन लेगा। उन्हें पता है सत्ता और सरकार उनके साथ है और समाज में अब कहीं कोई उनका विरोध करने की स्थिति में नहीं है। इसके उलट इस नफरत पर उन्हें मीडिया, सेलिब्रेटी, राजनीतिज्ञों, सामाजिक संगठनों का व्यापक समर्थन भी मिलेगा। इसी का नतीजा है कि एक दशक पहले नफरत के इजहार का जो काम भीड़ के माध्यम से किया जाता था वह अब व्यक्तिगत स्तर पर होने लगा है। चाहे वोह ट्रेन में किसी दाढ़ी टोपी वाले बुजुर्ग से अभद्रता हो या आरपीएफ के जवान द्वारा गोली मार कर मुस्लिम यात्रियों की हत्या। ताजमहल में जल चढ़ाने की कोशिश हो या किसी मस्जिद पर चढ़ कर भगवा लहराने का वीरता भरा काम। मनोज मुंतशिर, सोनू निगम, कंगना रनौत, गौतम गंभीर, बबीता फोगाट जैसे सैकड़ों लोग हैं, सार्वजनिक रूप से मुसलमानों के प्रति अपनी नफरत का इजहार कर चुके हैं। इसका उन्हें राजनैतिक और सामाजिक समर्थन भी हासिल हुआ है। मुसलमानों का बॉयकॉट, सामाजिक बहिष्कार का आह्वान, उनको सार्वजनिक रूप से अपमानित करना अब रोजमर्रा का किस्सा है जो सुर्खियां भी नहीं बनता।

-**हयात उमर** की फेसबुक वॉल से

सेठ की साथी सरकार

सामयिक

शाहीन सबा

फिर एक बार अडाणी की इज्जत और देश की बेइज्जती आमने-सामने है। सबसे पहले हिंडनबर्ग ने अडाणी की कंपनियों पर दुनिया का सबसे बड़ा वित्तीय धोखा देने का आरोप लगाया था। जैसे ही हिंडनबर्ग की रिपोर्ट सामने आई, अडाणी कंपनी के एक आला अधिकारी ने वीडियो पर भारतीय झंडे के साथ खड़े होकर दुनिया को संदेश दिया कि अडाणी को बदनाम करने का मतलब भारत को बदनाम करना है ! मोदी सरकार ने हर तरह से इसका समर्थन किया। अब बाजी पलट गई है। अब अमेरिकी सरकार सामने है जो कह रही है कि अडाणी व उनके भतीजे सागर अडाणी ने घूस देने का अभियान चला रखा है। मोदी सरकार के भारत में भ्रष्टाचार कोई मुद्दा नहीं रह गया है। इसलिए उसे यह समझना मुश्किल हो रहा है कि भारत में किसी ठेके के एवज में, भारत की एक कंपनी ने, भारत सरकार और उसके अधिकारियों को घूस दी तो उसमें अमेरिका की अदालत को बीच में पड़ने की क्या जरूरत है? जब हमें कोई दिक्कत नहीं है तब अमेरिका के न्याय विभाग और अमेरिका की शेयर बाजार नियामक संस्था के पेट में क्यों दर्द हो रहा है? सरकार के सिपाहियों ने तुरंत मोर्चा संभाल लिया : अमेरिका भारत के विकास से चिढकर हमारे अंदरूनी मामलों में दखल दे रहा है!

अमेरिका के फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन (एफबीआई) द्वारा अडाणी पर लगाए गए भ्रष्टाचार के आरोपों ने अव्वल तो सरकार और सेठ के सर्वज्ञात निकट संबंधों को एक बार फिर उजागर कर दिया है। दूसरा और सर्वाधिक शर्मनाक खुलासा देश की सत्तारूढ राजनीतिक पार्टी द्वारा अडाणी को बचाने में की जा रही बेशर्म मशक्कत है।

चलिए, हम जरा इस मामले को समझ लें। अडाणी कंपनी के लगभग 75 प्रतिशत शेयर परिवार के पास ही हैं। बाकी 25 प्रतिशत शेयरों में सबसे बड़ा निवेश विदेशी कंपनियों का है। हिंडनबर्ग का पहला आरोप यह था बाजार में कृत्रिम अभाव खड़ा करके अडाणी कंपनी ने अपने शेयरों के भाव बढ़ाए हैं। अडाणी समूह की कंपनियों में सबसे बड़ी निवेशक कंपनी अमेरिका की जीक्यूजी पार्ट्नर्ज. है। इसका कुल एक्सपोजर 9.7 बिलियन डॉलर है जो अडाणी के कुल निजी निवेश का 6.1 प्रतिशत है।

अमेरिका में एक कानून है जिसे फॉरेन करप्ट प्रैक्टिसेज एक्ट कहते हैं। अमेरिकी कम्पनियों के लिए बने इस कानून में कहा गया है कि अमेरिका का निवेश, दूसरे देशों में भ्रष्टाचार के लिए इस्तेमाल करना कानूनी जुर्म है। बस, जोर-जोर से आवाज उठाई गई कि यह कानून अमेरिकी कंपनियों के लिए है तो इसके तहत अडाणी परिवार की किसी कंपनी को कैसे फंसा सकते हैं? कुछ नामी-गिरामी वकील भी अकारण इस फटे में टांग अड़ाते हुए मीडिया में आए। सब कहने लगे : अडाणी पर लगे सारे आरोप बे-बुनियाद हैं ! अडाणी ने, भारत सरकार ने और भारतीय मीडिया ने अपना फैसला सुना दिया : सब चंगा सी!

काश ऐसा होता कि शुतुर्मुर्ग रेत में सर घुसाता और आंधी खत्म हो जाती ! लेकिन ऐसा होता नहीं है। अमेरिका से आंधी उठी तो केनिया ने अडाणी के साथ के एयरपोर्ट और वैकल्पिक ऊर्जा के कई सौदे रद्द करने की घोषणा कर दी। श्रीलंका की नयी वामपंथी सरकार ने कहा कि वह अडाणी के साथ बंदरगाह और पवन ऊर्जा के अनुबंध का पुरावलोकन कर रही है। बांग्लादेश ने भी एक कमिटी का गठन किया है जो अडाणी के साथ हसीना सरकार के सारे सौदों की जांच करेगी। फ्रांस और जर्मनी जैसे देशों ने भी कहा है कि वे अडाणी कंपनियों में अपने निवेश पर फिर से विचार कर रहे हैं।

अडाणी और उसकी सहयोगी अमेरिकी कंपनी अजुर पर भारत में राज्य सरकारों को लगभग 2200 करोड़ रुपयों की घूस देने का आरोप है। घूस खाने वाले राज्यों में ओडिशा, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़, जम्मू-कश्मीर और आंध्रप्रदेश के नाम हैं। आंध्रप्रदेश को 2021-23 के बीच लगभग 1700 करोड़ रुपयों की घूस देने का आरोप है। मोदी सरकार की सहयोगी आंध्रप्रदेश की चंद्रबाबू नायडू सरकार इस बात की जांच कर रही है कि क्या अडाणी के साथ हुए महंगे ऊर्जा सौदों को रद्द किया जा सकता है? मतलब यह कि फाईनान्स व सरकार दोनों में हलचल मची है।

जनवरी 2023 में हिंडनबर्ग ने अपनी रिपोर्ट में अडाणी पर 'कारपोरेट इतिहास में सबसे बड़ा घोटाला' करने का आरोप लगाया था। कुछ लोग इसे लेकर सुप्रीमकोर्ट पहुंचे जिसने इन आरोपों की जांच की जिम्मेवारी सेबी को सौंपी। सेबी का हाल यह है उसकी प्रमुख एक ऐसी महिला है जिसे नौकरशाही की बजाए निजी क्षेत्र से लाकर वहां बिठाया गया है। ऐसा सेबी के इतिहास में कभी नहीं हुआ था। यह क्यों हुआ, सरकार कैसे इसका औचित्य सिद्ध करती है, सेबी प्रमुख की कुर्सी पर बिठाई गई श्रीमती माधवी बुच की ऐसी क्या योग्यता है, आदि महत्वपूर्ण सवालों को सुप्रीमकोर्ट ने नजरंदाज किया।

अगस्त 2024 में हिंडनबर्ग रिसर्च ने फिर एक विस्फोटक रिपोर्ट जारी की कि सेबी चीफ माधवी बुच को अडाणी समूह के सौदों की जांच सौंपना कैसे कॉनफि्लक्ट ऑफ इंटरेस्ट (स्वार्थ की टकराहट) का मामला बनता है। उसने बताया कि माधवी बुच का अडाणी समूह की कम्पनियों में निजी निवेश था। यह ऐसा आरोप था जिसके आधार पर कोई भी सरकार पहला काम यह करती कि माधवी बुच को सेबी प्रमुख के पद से हटा देती और सारे मामले की जांच शुरू करवा देती। ऐसा चलन भी रहा है कि राष्ट्रीय महत्व के ऐसे मुद्दों पर सुप्रीमकोर्ट स्वतः संज्ञान लेकर जांच का आदेश देता है, लेकिन यहां तो सुप्रीमकोर्ट ने चुप्पी साध ली। अब कौन कहे कि किसकी जांच किसे करनी है?

अमेरिकी नियामक संस्था ने यह भी आरोप लगाया कि अमेरिका में अडाणी के अफसरों पर पड़े छापों की जानकारी अडाणी ने सेबी को नहीं दी, जो कि कानूनन अपराध है। इन छापों की जानकारी अंतरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय अखबारों में छपी, फिर भी सेबी ने इसका संज्ञान लेना जरूरी नहीं समझा। अदालत, सरकार, सेबी जैसी संस्थाओं के रवैये से भारत सरकार और उसकी संस्थाओं की साख शक के घेरे में है।

भारतीय शेयर बाजार की दुनिया में अच्छी साख रही है। सेबी को प्रोफेशनल संस्थान माना जाता रहा है। यह सच है कि घोटाले सभी बाजारों में होते हैं, हमारे यहां भी हुए हैं, लेकिन सेबी की साख इससे बनती है कि इन घोटालों के बाद उसने क्या कानूनी कार्यवाही की और ऐसे घोटाले दोबारा न हों, इसकी क्या व्यवस्था बनाई? यहां तो सेबी ने सुप्रीमकोर्ट से कहा कि उसे अडाणी की कंपनियों में दुनियाभर से निवेश कर रही कंपनियों की कोई जानकारी मिल नहीं पा रही है। कोर्ट ने नहीं पूछा कि यदि सेबी को ऐसी जानकारी नहीं मिल पा रही है तो उसकी जरूरत क्या है?

इस घूसकांड के केंद्र में एक दूसरी भारतीय कंपनी भारतीय सौर ऊर्जा निगम (एसईसीआई) भी है जिसने अडाणी कम्पनी का महंगी सौर ऊर्जा का टेंडर पास किया है। एसईसीआई ने क्या इस टेंडर की व्यवहारिकता की जांच नहीं की? उसने कैसे माना कि इतनी महंगी बिजली का बोझ जनता पर डालना उचित है? फिर हुआ यह कि कुछ राज्यों ने अडाणी और अमेरिकी कंपनी अजुर से महंगी सौर ऊर्जा खरीदने से मना कर दिया, तो घूस को आजमाया गया। यह योजना खुले आम बनी। इसका पावर पोईंट प्रेजेंटेशन बनाया गया जो अमेरिकी अधिकारियों को छापों के दौरान मिला। यह भी हुआ कि घूस मिलते ही सभी राज्य सरकारें महंगी सौर ऊर्जा खरीदने के लिए राजी हो गयीं।

अमृतवाणी

कीमती वस्तु

महाराजा रणजीतसिंह राजसभा में बैठे थे। एक अंग्रेज व्यापारी कांच का फूलदान लाया। उसने कहा, 'महाराज! आप यह भेंट स्वीकार करें। मेरे पास ऐसी बहुत सामग्री है, आप उसको खरीदें।' रणजीत सिंह बड़े चतुर थे और सुलझे हुए राजा थे। उन्होंने वह कांच का फूलदान हाथ में लिया और फेंक दिया। कांच का वह फूलदान जमीन पर गिरते ही चूरा-चूरा हो गया। अब उसका मूल्य एक कौड़ी भी नहीं रहा। अंग्रेज देखता रह गया, सब लोग देखते रह गए, सोचा–इतना बढ़िया फूलदान था, महाराज ने यह क्या किया? महाराज ने तत्काल अपना फूलदान उठाया। वह पीतल का बना हुआ था। अपने सेवक से कहा, 'हथोड़ा लाओ।' सेवक हथोड़ा ले आया। महाराज ने निर्देश दिया, 'इस फूलदान को तोड़ो।' सेवक ने फूलदान को पीट-पीटकर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। महाराजा ने कहा, 'बाजार में जाओ और दोनों के टुकड़े बेचकर आओ।' आदमी बाजार में गया। उसे कांच के टुकड़ों का कोई मूल्य नहीं मिला। वह पीतल के टुकड़ों को बेचकर मूल्य ले आया। महाराज बोले, 'महाशय! हम उस चीज को नहीं चाहते, जो एक झटके में टूट जाए, फूट जाए और अपना मूल्य खो बैठे। हम ऐसी चीजें चाहते हैं, जिसका टूटने पर भी मूल्य समाप्त न हो। पीतल का मूल्य समाप्त कहां होगा? वह बिक जाएगा। हम ऐसी स्थाई वस्तु चाहते हैं, जिसका मूल्य सदा बना रहे।' इस प्रसंग से हम सीखते सकते हैं कि यदि हमारी एकाग्रता अच्छी बन जाती है, परिकर्म अच्छा हो जाता है तो ध्यान में स्थायित्व आएगा। अन्यथा कांच के फूलदान की तरह टूट-फूट कर वह अपना मूल्य गंवा देगा। ध्यान शिविर में ध्यान किया और घर जाकर भुला दिया तो स्थायित्व नहीं आएगा। भूल जाना ऐसे ही जैसे कांच का बर्तन टूट गया और कौड़ी का न रहा।

तीखी नजर

जान कर अनजान बनना

राजेंद्र बज

किसी भी मामले में जानकर अनजान बनने के चलते नए सिरे से मुद्दा पकड़ में आया करता है। कुछ नए तथ्य ऐसे भी सामने आते है, जिसका पता हमें पहले नहीं चल पाता। इस नाते जानकर अनजान बनने के बहुत फायदे हुआ करते हैं। अव्वल तो किसी भी मामले के अंतिम तह तक जाने में बहुत मदद मिला करती है। इसके अतिरिक्त मामले के हर पहलू से हम भलीभांति परिचित हो जाते हैं। दरअसल हम हर किसी मामले को अलग-अलग दृष्टिकोण से समझ कर ही किसी एक निश्चित बिंदु तक पहुंच पाते हैं। चतुर सुजान कहते हैं कि कोई भी बात ठोक बजा कर ही गले उतारना चाहिए।

वैसे भी अधूरा सच खतरनाक हुआ करता है, इसलिए पूरा सच जानने के लिए अलग-अलग लोगों से जाना हुआ मामला भी नए सिरे से समझने का प्रयास करना चाहिए। किसी एक के कथन पर अंधविश्वास करना ठीक नहीं। इसलिए जब कोई मामला संज्ञान में आए, भोले भंडारी बनकर जिज्ञासु भाव प्रदर्शित करना चाहिए। ऐसा करने से हम और किसी के मन में क्या चल रहा है, इसका पता बड़ी आसानी से लगा सकते हैं। एक प्रकार से हमारे सामने मामला बताने वाले बेनकाब हो जाते हैं। जो शख्सियत यह जाहिर करें कि यह उसे पहले से ही मालूम है, वह उस जानकारी से वंचित रह जाती है, जो मामले से सीधी जुड़ी होती है। इसके चलते कभी-कभी लेने के देने तक पड़ जाया करते हैं।

कुछ लोग खोद-खोद कर जानकारी बढ़ाने के आदी हुआ करते हैं। अनजान बनकर जानने की उत्कंठा कभी घाटे का सौदा नहीं होती। इसके चलते आदमी को सच्चे अर्थों में दुनियादारी की समझ आती है। व्यवहार में देखा गया है कि कोई बात एक ने दूसरे से कही, दूसरे ने तीसरे से और तीसरे ने चौथे से, यकीन मानिए जैसे-जैसे बात फैलती चली जाती है वैसे वैसे वह मिर्च मसाले से भरपूर होती जाती है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जिस मामले से हम पूरी तरह वाकिफ होते हैं, वह मामला भी नए रूप में सामने आया करता है। कोई-कोई तो अपनी कल्पना शक्ति के आधर पर मूल बात में अपनी मन माफिक बात का जोड़-घटाव करने से भी नहीं चूका करता।

बहुत से लोग एक ही फिल्म को एकाधिक बार देखा करते है। जाहिर है कि पहली बार फिल्म देखने की अपेक्षा दूसरी, तीसरी और चौथी बार देखने पर क्रमशः फिल्म और भी अधिक गहराई से समझ में आने लगा करती है। हर बार यह भान होता है कि इस बात पर तो पहले कभी ध्यान ही नहीं दिया था। गरज यह कि हर किरदार का हर बार अलग-अलग चरित्र नजर आने लगता है। पटकथा से लेकर फिल्मांकन तक और वेशभूषा से लेकर उच्चारण तक सब कुछ बहुत बारीकी के साथ समझ में आने लगता है। पांच दशक पूर्व शोले को 26 बार देखने के उपरांत चतुर सुजान यह देख पाए कि ठाकुर जब गब्बर को सबक सिखाता है, तो उसके हाथ कमर पर बंधे होते हैं।

नजरिया

आशावाद की पटरी पर अर्थव्यवस्था की गाड़ी

आतिफ रब्बानी

अर्थव्यवस्था में इस वक़्ती सुस्ती के पीछे दो बड़े कारण हैं। पहला शहरी क्षेत्र में खपत का कमजोर पड़ना, और दूसरा सार्वजनिक पूंजीगत व्यय में नरमी आना। खपत या मांग अर्थव्यवस्था के पहिये को गति देता है। जब खपत होती है तो उत्पादन होता है।

वर्तमान समय में तमाम विकसित अर्थव्यवस्थाएं सुस्ती के दौर से गुजर रही हैं। वैश्विक आर्थिक परिदृश्य पर जारी रपटें बताती हैं कि वैश्विक आर्थिक क्षितिज पर मंदी के बादल मंडरा रहे हैं। रूस-यूक्रेन युद्ध और मध्य-पूर्व में अशान्ति ने वैश्विक आर्थिक गतिविधियों और वित्तीय स्थिरता को धक्का पहुंचाया है। आईएमएफ ने वैश्विक आर्थिक संवृद्धि को स्थिर लेकिन निराशाजनक बताया है। ऐसे माहौल के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था आशाजनक दौर से गुजर रही है। कोविड महामारी के बाद के तीन वर्षों में लगातार आर्थिक वृद्धि दर्ज की गई है। वित्त वर्ष 2023-24 में तो यह दर 8.2 प्रतिशत तक जा पहुंची थी। मौजूदा वित्त-वर्ष की पहली तिमाही में भी यह दर 7.2 प्रतिशत थी। अनुमान था कि पूरे वर्ष के लिए यह दर 7 प्रतिशत के थोड़ा ऊपर ठहरेगी। लेकिन गत शुक्रवार को राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा जारी वित्तीय वर्ष 2024-25 की द्वितीय तिमाही के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के आंकड़ों ने चौंका दिया। इस तिमाही जीडीपी ने 5.4 फीसदी की वृद्धि दर प्राप्त किया। यह पिछली सात तिमाहियों का सबसे निम्नतम स्तर है। जारी आंकड़ों ने विशेषज्ञों को अपने अनुमान पर फिर से विचार करने के लिए बाध्य कर दिया। अनुमान था कि इस तिमाही में वृद्धि दर में थोड़ी कमी जरूर आएगी, लेकिन इतनी कमी अप्रत्याशित थी।

अर्थव्यवस्था की रफ़्तार पकड़ती गाड़ी में झटके लगने का सबसे बड़ा कारण है कि मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर का कमजोर पड़ना। आंकड़े बताते हैं कि वित्त वर्ष 2024-25 की दूसरी तिमाही में विनिर्माण की वृद्धि दर 2.2 प्रतिशत पर ठहर गई। जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में इस क्षेत्र में 14.3 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई थी। खनन और उत्खनन क्षेत्र में कमी दर्ज की गई जो कि ऋणात्मक 0.1 प्रतिशत रही, जबकि पिछले वर्ष के लिए यह आंकड़ा 11.1 प्रतिशत का था। लगभग ऐसा ही हाल कृषि क्षेत्र का भी रहा। कृषि में 3.5 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई, जो पिछली चार तिमाहियों में सबसे न्यूनतम स्तर है। वहीं वित्तीय सेवाओं, रियल एस्टेट और पेशेवर सेवाओं का प्रदर्शन तुलनात्मक रूप से बेहतर रहा। ज्यादा बेहतर प्रदर्शन लोक प्रशासन, रक्षा और दूसरी सेवाओं में रहा, इस सेक्टर में 9.2 प्रतिशत की दर से वृद्धि दर्ज की गई। गत वर्ष इसी अवधि में इस क्षेत्रने 7.7 फीसदी की वृद्धि दर्ज की थी।

अर्थव्यवस्था में इस वक़्ती सुस्ती के पीछे दो बड़े कारण हैं। पहला शहरी क्षेत्र में खपत का कमजोर पड़ना, और दूसरा सार्वजनिक पूंजीगत व्यय में नरमी आना। खपत या मांग अर्थव्यवस्था के पहिये को गति देता है। जब खपत होती है तो उत्पादन होता है। उत्पादन बढ़ने से रोजगार बढ़ता है और नतीजे में आय बढ़ती है। खपत या मांग, उत्पादन, रोजगार और आय-सब एक-दूसरे पर निर्भर हैं। इधर कई तिमाहियों से खपत में नरमी देखी गई थी। पिछले दिनों नेस्ले इंडिया के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक सुरेश नारायणन ने कहा था कि शहरी इलाकों में रहने वाले मध्यवर्ग ने अपने खर्चों में कटौती की है। वहीं बढ़ती खाद्य मुद्रास्फीति ने भी उपभोक्ता खर्च पर असर डाला है। खुदरा खाद्य मुद्रास्फीति अक्टूबर में बढ़कर 10.87 के ऊंचे स्तर तक पहुंचगई, जिससे उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति कमजोर हो गई। गौरतलब है कि देश के जीडीपी में लगभग 60 प्रतिशत का योगदान निजी खपत से आता है। इसलिए खपत में कमी के नतीजे में जीडीपी कि रफ़्तार सुस्त पड़गई । पहली तिमाही में आम चुनाव थे तो जाहिर है कि इस तिमाही में सरकार नेपूंजीगत व्यय वअन्य खर्चों से हाथ रोके। जिसका असर दूसरी तिमाही पर जाहिर हुआ। सरकार के कुल कैपिटल एक्पेंडीचर में 15.4 प्रतिशत की कमी दर्ज हुई। अर्थव्यवस्था की रफ़्तार में वक़्ती कमी या बढ़ोत्तरी होना सामान्य है। थोड़ा-बहुत उतार-चढ़ाव होता रहता है। अगर गिरावट लगातार बनी रही तो चिंताजनक होता है। भारतीय अर्थव्यवस्था विस्तार लेने की स्थिति में है। पिछले तीन वर्षों में 8 प्रतिशत वृद्धि दर का रास्ता तय किया गया।

विनिर्माण ने झटका दिया तो वहीं से वृद्धि की उम्मीदें भी हैं। इसके दो कारण हैं। पहला, तमाम रेटिंग एजेंसियां इस आशाजनक माहौल की गवाही दे रही हैं। एस एण्ड पी ग्लोबल के अनुसार भारत का परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स पिछले चार महीनों से 56 से 60 के बीच बना हुआ है। 50 से ऊपर का इंडेक्स बताता है कि विनिर्माण के क्षेत्र में आशा का माहौल है। दूसरे यह कि, पहली तिमाही में वृद्धि दर का स्तर ऊंचा था। विनिर्माण में सुस्ती की एक वजह बेस इफेक्ट यानी आधार प्रभाव भी है। अब जब आधार कम हो गया है तो इसमें वृद्धि की संभावना अधिक बढ़ गई है। गौरतलब है कि इस साल मॉनसूनी बारिश अच्छी हुई है। खरीफ फसल की बुआई पिछले साल की तुलना में 14.10 प्रतिशत बढ़ी है। इसलिए अगली दो तिमाहियों में कृषि क्षेत्र की संवृद्धि अच्छी रह सकती है। वहीं फसल अच्छी होने पर खाद्य कीमतों पर दबाव कम होगा और मुद्रास्फीति में कमी की आशा है। क्रय शक्ति बढ़ेगी और मांग में इजाफा होगा। कृषि क्षेत्र रिकवरी की राह पर बढ़ेगा। सरकार की आकांक्षा है कि 2047 तक भारत विकसित राष्ट्र बने। इसके लिए मुल्क को उच्च आय वाला देश बनाने का लक्ष्य रखा गया है। यह तभी मुमकिन होगा जब 8 प्रतिशत की औसत से जीडीपी वृद्धि हासिल करे। इसके लिए अर्थव्यवस्था में निवेश दरकार है। सरकार को पूंजीगत व्यय बढ़ाना होगा साथ ही निजी पूँजी निवेश को भी बढ़ावा देना होगा। आगामी वर्ष में वैश्विक वातावरण अनिश्चित रहने की संभावना है। अमेरिका में डोनाल्ड ट्रम्प की सरकार टैरिफ नीतियां लेकर आएगी जिससे वाह्य सेक्टर का प्रभावित होगा।

एडिलेड में पहले दिन स्टार्क का जलवा

मिचेल स्टार्क ने झटके छह विकेट, ऑस्ट्रेलिया ने भारत को पहली पारी में 180 रन पर समेटा

ऑस्ट्रेलिया ने पहली पारी में एक विकेट खोकर बनाए 86 रन, अभी भी 94 रन पीछे

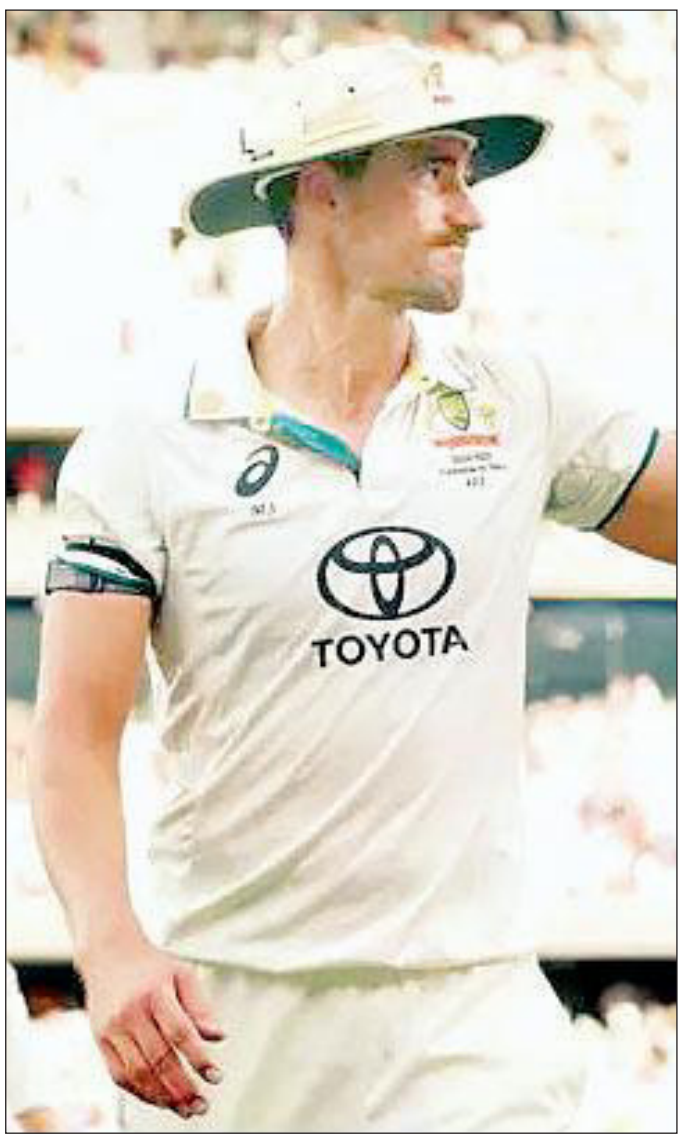

● एडिलेड,

मिचेल स्टार्क (छह विकेट) की अगुवाई में ऑस्ट्रेलिया गेंदबाजों ने शुक्रवार को दूसरे टेस्ट मैच के पहले दिन भारत को पहली पारी में 180 रन के स्कोर पर समेटने के बाद एक विकेट पर 86 रन बना लिये है। दिन का खेल समाप्त होने के समय नेथन मैकस्वीनी (नाबाद 38) और मार्नस लाबुशेन (नाबाद 20) क्रीज पर थे।

भारत के 180 रनों के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी उस्मान ख्वाजा और नेथन मैकस्वीनी की ऑस्ट्रेलियाई सलामी जोड़ी धीमी शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिये 24 रन जोड़े। उस्मान ख्वाजा को जसप्रीत बुमराह ने रोहित शर्मा के हाथों कैच आउट कराकर भारत को पहली सफलता दिलाई। उस्मान ख्वाजा ने 35 गेंदों में 13 रन बनाये। भारत ने आज पांच गेंदबाज मैदान में उतारे लेकिन सफलता केवल बुमराह को मिली। आज दिन का खेल समाप्त होने के समय ऑस्ट्रेलिया ने 33 ओवर में एक विकेट पर 86 रन बना लिये है। इससे पहले चायकाल के बाद 82 के स्कोर में महज पांच रन के इजाफा कर भारत ने कप्तान रोहित शर्मा (03) का विकेट गवां दिया। उन्हें बोलैंड ने पगबाधा आउट किया। पैट कमिंस ने ऋषभ पंत (21) को आउट किया। इसके बाद नीतीश कुमार रेड्डी और आर अश्विन ने पारी को संभालने का प्रयास किया। लेकिन मिचेल स्टार्क ने अश्विन (22) को पगबाधा आउट कर पवेलियन भेज दिया। हर्षित राणा और जसप्रीत बुमराह दोनों ही शून्य पर आउट हुये। भारत का आखिरी विकेट नीतीश कुमार रेड्डी के रूप में गिरा। उन्होंने 54 गेंदों में तीन चौके और तीन छक्के लगाते हुए 42 रनों की पारी खेली। इससे पहले बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम को मैच की पहली ही गेंद पर झटका लगा था। स्टार्क ने यशस्वी (00) को पगबाधा कर पवेलियन भेज दिया। इसके बाद शुभमन गिल और केएल राहुल ने पारी को संभाला और दूसरे वकेट के लिए 68 रन जोड़े। लेकिन इसके बाद भारत ने केएल राहुल (37), विराट कोहली (सात) के बाद शुभमन गिल (31) का भी विकेट गवां दिया। गिल को स्कॉट बोलैंड ने पगबाधा आउट किया। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा छठे नंबर पर बल्लेबाजी करने उतरे। चायकाल तक भारत ने 82 रन पर चार विकेट गवां दिये थे। ऑस्ट्रेलिया की ओर से मिचेल स्टार्क ने छह विकेट लिये और स्कॉट बोलैंड और पैट कमिंस को दो-दो विकेट मिले। वहीं जसप्रीत बुमराह ने ख्वाजा का विकेट लेते ही साल 2024 में 50 टेस्ट विकेट पूरे कर लिये।

वह इस साल टेस्ट में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले खिलाड़ी हैं। बुमराह ने एक कैलेंडर ईयर में पहली बार 50 टेस्ट विकेट लिये। इससे पहले 2018 में उन्होंने 48 विकेट लिये थे।

स्कोर बोर्ड

भारत पहली पारी	रन	गेंद	4	6
यशस्वी पगबाधा बो स्टार्क	00	1	0	0
राहुल का मैकस्वीनी बो स्टार्क	37	64	6	0
गिल पगबाधा बो बोलैंड	31	51	5	0
कोहली का स्मिथ बो स्टार्क	07	8	1	0
पंत का मार्नस बो कमिंस	21	35	2	0
रोहित शर्मा पगबाधा बो बोलैंड	03	23	0	0
नीतीश का हेड बो स्टार्क	42	54	3	3
अश्विन पगबाधा बो स्टार्क	22	22	3	0
हर्षित राणा बो स्टार्क	00	3	0	0
बुमराह का ख्वाजा बो कमिंस	00	8	0	0
मोहम्मद सिराज नाबाद	04	3	1	0

अतिरिक्त : 13 रन

कुल : 44.1 ओवर में 180 रन पर ऑलआउट

विकेट पतन: 1-0, 2-69 , 3-77, 4-81, 5-87, 6-109, 7-141, 8-141, 9-176, 10-180

गेंदबाजी	ओवर	मेडन	रन	विकेट
मिचेल स्टार्क	14.1	2	48	6
पैट कमिंस	12	4	41	2
स्कॉट बोलैंड	13	0	54	2
नाथन लायन	1	0	6	0
मिचेल मार्श	4	0	26	0

ऑस्ट्रेलिया पहली पारी	रन	गेंद	4	6
ख्वाजा का शर्मा बो बुमराह	13	35	2	0
नाथन मैकस्वीनी नाबाद	38	97	6	0
मार्नस लाबुशेन नाबाद	20	67	3	0

अतिरिक्त : 15 रन

कुल : 33 ओवर में एक विकेट पर 86 रन

विकेट पतन: 1-24

गेंदबाजी	ओवर	मेडन	रन	विकेट
जसप्रीत बुमराह	11	4	13	1
मोहम्मद सिराज	10	3	29	0
हर्षित राणा	8	2	18	0
नितीश कुमार रेड्डी	3	1	12	0
रविचंद्रन अश्विन	1	1	0	0

यूपी स्टेट सब जूनियर कराटे चैंपियनशिप आज से

लखनऊ : कराटे एसोसिएशन ऑफ यूपी के तत्वावधान में कराटे एसोसिएशन ऑफ लखनऊ द्वारा यूपी स्टेट सब जूनियर कराटे चैंपियनशिप-2024 का आयोजन सात से 8 दिसंबर तक लखनऊ के चौक स्टेडियम में किया जाएगा। इस चैंपियनशिप में मेजबान लखनऊ सहित 24 जिलों के 400 खिलाड़ी दांव पर लगे 78 स्वर्ण पदकों के लिए अपने-अपने वर्गों में चुनौती पेश करेंगे। चौक स्टेडियम के लालजी टंडन बहुउद्देश्यीय हाल में होने वाली चैंपियनशिप की पूर्व संध्या पर शुक्रवार को विभिन्न टीमों में शामिल प्रतिभागी खिलाड़ियों का वजन किया गया। दो दिवसीय इस चैंपियनशिप के बारे में कराटे एसोसिएशन ऑफ यूपी के अध्यक्ष टीपी हवेलिया व महासचिव जसपाल सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि चैंपियनशिप में 78 स्वर्ण, 78 रजत व 156 कांस्य पदकों के लिए प्रतिस्पर्धा होगी।

जीवनदान का फायदा नहीं उठ पाए केएल राहुल

एडिलेड, वार्ता : 8वें ओवर में स्कॉट बोलैंड की गेंद पर केएल राहुल को दो जीवनदान मिले। पहली गेंद पर राहुल कैच आउट हो गए। फील्ड अंपायर ने आउट करार दे दिया, राहुल लौटने लगे थे, विराट बल्लेबाजी के लिए ग्राउंड की ओर आने लगे थे। तभी थर्ड अंपायर ने बोलैंड की गेंद को नो बॉल करार दे दिया और राहुल आउट होने से बच गए। इसी ओवर की पांचवीं गेंद पर उनका कैच उस्मान ख्वाजा से छूट गया। बोलैंड ने फुल लेंथ की गेंद फेंकी। गेंद राहुल के बल्ले के बाहरी किनारे से लग कर स्लिप में खड़े उस्मान ख्वाजा के हाथों में गई, लगा कि यह कैच हो जाएगा, लेकिन गेंद ख्वाजा के हाथों से छूट कर नीचे गिर गई। जीवनदान के वक्त राहुल खाता भी नहीं खोल सके थे, उन्होंने 37 रन बनाए। ऑस्ट्रेलियाई पारी के 18वें ओवर में फ्लडलाइट्स बंद हो गई। इसी समय सभी फैंस ने अपने मोबाइल की टॉर्च चालू कर कर ली। हर्षित राणा के ओवर की पांचवीं बॉल के बाद ग्राउंड्स की फ्लड लाइट्स बंद हो गई, जिसके बाद कुछ समय के लिए खेल को रोकना पड़ा। 9वें ओवर में मिचेल स्टार्क बॉलिंग करने आए। इस ओवर की तीसरी बॉल उन्होंने ऑफ स्टंप के बाहर डाली। यहां राहुल ने स्क्वेयर कट खेला और बॉल चौके के लिए चली गई। शॉट खेलते समय राहुल के बैट से स्टिकर निकल गया, जो पिच के सामने गिर गया।

बुमराह के 2024 में 50 विकेट पूरे

एडिलेड, वार्ता : जसप्रीत बुमराह ने ख्वाजा का विकेट लेते ही साल 2024 में 50 टेस्ट विकेट पूरे कर लिए। वह इस साल टेस्ट में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले खिलाड़ी हैं। बुमराह ने एक कैलेंडर ईयर में पहली बार 50 टेस्ट विकेट लिए। इससे पहले 2018 में उन्होंने 48 विकेट लिए थे। वहीं विराट ने स्टंप्स की बेल्स बदली ऑस्ट्रेलिया की बैटिंग में 29वां ओवर खत्म होने के बाद विराट कोहली ने स्टंप्स की गिल्लियां बदल दीं। यहां मार्नस लाबुशेन और नाथन मैकस्वीनी के बीच अच्छी साझेदारी हो रही थी। जिसके बाद विराट ने गिल्लियां बदल दीं। हालांकि, इसका कुछ फायदा नहीं हुआ और दोनों नॉटआउट ही लौट गए। इससे पहले भारत की बैटिंग के 42वें ओवर में 21 रन आए। स्कॉट बोलैंड के इस ओवर की दूसरी बॉल पर रिवर्स स्कूप शॉट खेलते हुए नीतीश ने थर्ड मैन के ऊपर से सिक्स लगा दिया। उन्होंने फिर अगली ही बॉल पर कवर्स की दिशा में चौका भी लगा दिया। इस ओवर की तीसरी बॉल पर उन्होंने डीप मिडविकेट के ऊपर से सिक्स भी लगाया। इससे पहले 41वें ओवर में नीतीश ने स्टार्क को कवर्स के ऊपर से सिक्स भी लगाया था। वहीं ऑस्ट्रेलिया की पारी के तीसरे ओवर में ऋषभ पंत की आंख में कीड़ा आ गया।

सार संक्षेप

डी गुकेश और लिरेन के बीच नौवीं बाजी भी रही ड्रा

सिंगापुर : भारतीय ग्रैंडमास्टर डी गुकेश और गत चैंपियन चीन के डिंग लिरेन के बीच शुक्रवार को खेली विश्व शतरंज चैंपियनशिप की नौवीं बाजी भी ड्रा रही। विश्व शतरंज चैंपियनशिप 2024 के फाइनल में भारत के डी गुकेश और चीन के डिंग लिरेन के बीच 14 बाजी होनी थी। जिसमें से दोनों के बीच नौ बाजियां खेली जा चुकी हैं। इन नौ बाजियों के बाद दोनों का स्कोर 4.5-4.5 है। खेले गये मुकाबले में दोनों खिलाड़ी 54 चालों के बाद ड्रॉ पर सहमत हुए। विश्व चैंपियनशिप में अब सिर्फ पांच बाजियां खेली जानी शेष है।

फाइनल में गुडविल का मुकाबला द ड्रीम टीम से

नई दिल्ली : डीएसए विमेंस चैंपियंस लीग का फाइनल द ड्रीम टीम और गुडविल फुटबाल क्लब के मध्य खेला जाएगा। यहां जानकी देवी कॉलेज मैदान पर खेले गए रोमांचक सेमीफाइनल मुकाबलों में द ड्रीम टीम ने जगुआर फुटबाल क्लब को टाई ब्रेकर में 4-3 से और गुडविल फुटबाल क्लब ने विक्ट्री एफसी को 3-1 से परास्त किया। फाइनल मुकाबला 11 दिसंबर को अम्बेडकर स्टेडियम पर खेला जाएगा। गुडविल के लिए हेमलता, गीतिका नेगी और नैना मखीजा ने गोल जमाए। पराजित विक्ट्री के लिए सोनिया ने तीसरे मिनट में बढ़त वाला गोल किया लेकिन गुडविल ने जल्दी ही खेल पर पकड़ बना ली और बेहतर तालमेल से खेलते हुए जीत पाई। द ड्रीम टीम और जगुआर के बीच खेला गया मैच कांटे का रहा। 3-3 गोल की बराबरी के बाद फैसला टाई ब्रेकर से हुआ और द ड्रीम टीम 4-3 से विजयी रही।

पहले खो-खो विश्व कप के लिए तैयारी पूरी

नई दिल्ली : आगामी 13 जनवरी से शुरु होने वाले खो-खो विश्व कप के पहले संस्करण की मेजबानी करने के लिए तैयारी लगभग पूरी कर ली गयी है। 19 जनवरी तक चलने वाले विश्वकप की तैयारी के लिये भारतीय खो-खो महासंघ (केकेएफआई) दस दिसंबर से 11 जनवरी, 2025 के बीच दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में एक प्रशिक्षण शिविर आयोजित करेगा। शिविर में 60 पुरुष और 60 महिला खिलाड़ी अपने कौशल का प्रदर्शन करेंगे। केकेएफआई विश्व स्तरीय तैयारी सुनिश्चित करने के लिए महासंघ कोई कसर नहीं छोड़ रहा है। वह इस टूर्नामेंट के लिए खिलाड़ियों को शीर्ष-स्तरीय सुविधाएं, उच्च-तीव्रता वाले प्रशिक्षण सत्र और रिकवरी प्रोग्राम प्रदान कर रहा है। ट्रेनिंग प्रोग्राम में खिलाड़ियों के परफॉरमेंस और स्वास्थ्य की कंडीशनिंग करने के लिए अत्याधुनिक स्पोर्ट्स साइंस तकनीकों को भी शामिल किया गया है। यह खिलाड़ियों को शरीर की संरचना, खंडीय मांसपेशियों, आंत की चर्बी और हाइड्रेशन के स्तर पर सटीक डेटा प्रदान करेगा।

श्रीलंका को हराकर भारत फाइनल में

अंडर-19 एशियाकप: भारत ने श्रीलंका को सात विकेट से शिकस्त

शारजाह, वार्ता : गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के बाद वैभव सूर्यवंशी (67) और आयुष म्हात्रे (34) की बेहतरीन आतिशी बल्लेबाजी के दम पर शुक्रवार को एकदिवसीय अंडर-19 एशिया कप के दूसरे सेमीफाइनल मुकाबले में भारत ने श्रीलंका को सात विकेट से करारी शिकस्त देते हुए फाइनल में जगह बना ली है।

श्रीलंका के 173 स्कोर के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी वैभव सूर्यवंशी और आयुष म्हात्रे की सलामी जोड़ी ने बेहतरीन शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिये 91 रनों की आतिशी साझेदारी करते हुए भारत की जीत की नींव रखी। नौवें ओवर में विहास थेवमिका ने आयुष म्हात्रे को आउट कर श्रीलंका को पहली सफलता दिलाई। आयुष ने 28 गेंदों में सात चौके लगाते हुए (34) रन बनाये। इसके बाद 14वें ओवर में प्रवीण मनीषा ने वैभव सूर्यवंशी को बोल्ड कर पवेलियन भेज दिया। वैभव ने 36 गेंदों में छह चौके और पांच

छक्के लगाते हुए (67) रनों की तूफानी पारी खेली। आंद्रे सिद्धार्थ (22) रन बनाकर आउट हुये। कप्तान मोहम्मद अमान (25) और केपी कार्तिकेय (11)रन बनाकर नाबाद रहे। भारत ने 21.2ओवर में तीन विकेट पर 175 रन बनाकर मुकाबला जीत लिया। श्रीलंका की ओर से विहास थेवमिका, विरन चामुदिता और प्रवीण मनीषा ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले श्रीलंका ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी श्रीलंका की शुरुआत बेहद खराब रही और उसने महज आठ रन के स्कोर पर अपने तीन विकेट गवां दिये। पुलिंदु परेरा (06), दुलनित सिगेरा (02) और विमत दिनसारा (00) पर आउट हुये। इसके बाद शरुजन शंमुगनथन और लकविन अभयसिंघे ने श्रीलंकाई पारी को संभाला। दोनों बल्लेबाजों ने चौथे विकेट के लिये 93 रन जोड़े। 29वें ओवर में आयुष म्हात्रे ने शरुजन शंमुगनथन (42) को बोल्ड आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। इसके बाद कविजा गमागे (10) भी म्हात्रे का शिकार बने। कप्तान विहास थेवमिका (14), विरन चामुदिता (आठ) रन बनाकर आउट हुये। लकविन अभयसिंघे ने 110 गेंदों में तीन चौके और दो छक्के लगाते हुये (69) रनों की पारी खेली। प्रवीण मनीषा (पांच) और न्यूटन रंजीतकुमार (पांच) रन बनाकर आउट हुये। भारतीय गेंदबाजी आक्रमण के आगे श्रीलंका की टीम 46.2 ओवर में 173 रन पर सिमट गई। भारत की ओर से चेतन शर्मा ने तीन विकेट लिये। किरण चोरमाले और आयुष म्हात्रे ने दो-दो विकेट लिये। युद्धजीत गुहा और हार्दिक राज ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

बांग्लादेश ने पाक को हराकर फाइनल में बनाई जगह

● दुबई,

इकबाल हसन (चार विकेट) के बाद कप्तान अजीजुल हकीम (नाबाद 61) की अर्धशतकीय पारी की बदौलत बांग्लादेश ने शुक्रवार को अंडर-19 एशिया कप के पहले सेमीफाइनल मुकाबले में पाकिस्तान को सात विकेट से हराकर फाइनल में जगह बना ली है। जहां उसका फाइनल में भारत से मुकाबला होगा।

पाकिस्तान के 116 रनों के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी बांग्लादेश की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने 28 के स्कोर पर अपने दो विकेट गवां दिये। कलाम सिद्दीकी (00) और जवाद अबरार (17) रन बनाकर आउट हुये। इसके बाद कप्तान अजीजुल हकीम और मोहम्मद शिहाब जेम्स ने पारी को संभाला। 17वें ओवर में नवीन अहमद खान ने मोहम्मद शिहाब जेम्स (26) को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। अजीजुल हकीम (61) और रिजान हसन (पांच) रन बनाकर नाबाद

खिताबी मुकाबले में अब भारत से होगा सामना

रहे। बांग्लादेश ने 22.1 ओवर में तीन विकेट पर 120 रन बनाकर मुकाबला सात विकेट से जीतकर फाइनल में प्रवेश किया। पाकिस्तान की ओर से अली रजा, अब्दुल सुभान और नवीद अहमद खान एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले बांग्लादेश की अंडर-19 टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी पाकिस्तान शुरुआत बेहद खराब रही और उसने सात रन के स्कोर पर अपने दो विकेट गवां दिये। उस्मान खान और शाहजेब खान दोनों ही (00) पर आउट हुये।

इसके बाद मोहम्मद रियाजुल्लाह ने कुछ देर संघर्ष किया लेकिन इकबाल हसन ने उन्हें विकेट के पीछे फरीद हसन के हाथों कैच आउट करा दिया।

हैरी ब्रूक के शतक से इंग्लैंड ने कसा शिकंजा

इंग्लैंड ने पहली पारी में बनाए 280 रन, न्यूजीलैंड ने मात्र 86 रन पर गवाएं पांच विकेट

● वेलिंग्टन,

हैरी ब्रूक (123) बेहतरीन शतकीय, ऑली पोप (66) की अर्धशतकीय पारियों और गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन की बदौलत इंग्लैंड ने दूसरे टेस्ट के पहले दिन 280 के स्कोर के बाद न्यूजीलैंड के पहली पारी में 86 रन पर पांच विकेट झटक कर मैच पर अपनी पकड़ बना ली है।

इंग्लैंड के 280 के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी न्यूजीलैंड की शुरुआत अच्छी नहीं रही और छठे ओवर में गस ऐटकिंसन ने डेवन कॉन्वे (11) को आउट कर इंग्लैंड को पहली सफलता दिलाई। 15वें ओवर में बेन स्टोक्स ने टॉम लेथम (17) को बोल्ड कर न्यूजीलैंड को दूसरा झटका दिया। इसके बाद रचिन रविंद्र (03), केन विलियमसन (37) और डैरिल मिचेल (06) रन बनाकर आउट हुये। दिन का खेल समाप्त होने के समय न्यूजीलैंड ने 86 रन पर पांच विकेट गवां दिये थे और विलियम ओरूर्क (नाबाद 00) और टॉम ब्लंडल (नाबाद 07) क्रीज पर मौजूद थे। न्यूजीलैंड अभी इंग्लैंड की

पहली के आधार पर 194 रन पीछे है। इंग्लैंड की ओर से ब्राइडन कार्स ने दो विकेट लिये। क्रिस वोक्स, गस ऐटकिंसन और बेन स्टोक्स ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले यहां न्यूजीलैंड ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी इंग्लैंड की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने 43 के स्कोर तक अपनी चार विकेट गवां दिये थे। बेन डकेट (00), जैक क्रॉली (17), जो रूट (03) और जेकब बेथेल (16) रन बनाकर आउट हुये। इसके बाद हैरी ब्रूक और ऑली पोप ने मोर्चा संभाला और पांचवें विकेट के लिये 173 रन जोड़े। विलियम ओरूर्क ने ऑली पोप (66) को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। कप्तान बेन स्टोक्स (02) रन बनाकर आउट हुये। 53वें ओवर में नेथन स्मिथ ने हैरी ब्रूक (123) को रनआउट कर इंग्लैंड को बड़ा झटका दिया। इसके बाद न्यूजीलैंड के गेंदबाजी आक्रमण के आगे इंग्लैंड बल्लेबाज अधिक देर नहीं टिक पाये। गस ऐटकिंसन (04), क्रिस वोक्स (18) और ब्राइडन कार्स (09) रन बनाकर आउट हुये। न्यूजीलैंड की ओर से नेथन स्मिथ ने चार विकेट लिये। विलियम ओरूर्क को तीन विकेट मिले। मैट हेनरी ने दो बल्लेबाजों को आउट किया।

युवराज और कुशल के सैकड़ों से यूपी संभला

ग्वालियर, वार्ता : कप्तान युवराज (100) और कुशल यादव (103 नाबाद) के शतकीय प्रहार की मदद से उत्तर प्रदेश ने विजय मर्चेंट अंडर 16 ट्रॉफी के पहले मुकाबले में कमजोर शुरुआत से उबरते हुये गुजरात के खिलाफ शुक्रवार को पहली पारी में 303 रनो का सम्मानजनक स्कोर खड़ा कर लिया। कैप्टन रूप सिंह स्टेडियम पर दिन का खेल खत्म होने के समय गुजरात ने दो विकेट पर 70 रन बना लिये थे और निहाल पटेल दस और समीर भंडारी सात रन बना कर क्रीज पर मौजूद थे। गुजरात के कृतज्ञ शर्मा ने शानदार गेंदबाजी का मुजाहिरा करते हुये अपने पहले स्पेल में उत्तर प्रदेश की सलामी जोड़ी को बगैर खाता खोले पवेलियन पहुंचा दिया था,ऐसे नाजुक समय में रितिक सिंह (25) और युवराज ने स्कोरबोर्ड को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी ली। युवराज ने आक्रामक अंदाज में खेलते हुये गुजरात के गेंदबाजों की लाइन लेंथ बिगाड़ दी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सैयद ज़की हैदर के लिए इरानीयन आर्ट प्रिंटर्स 1534 कासिमजान स्ट्रीट दरियागंज नई दिल्ली 11006 से मुद्रित कराकर, 2684 गली काले खां कूचा चलान दरियागंज नई दिल्ली 02 से प्रकाशित किया।
संपादक : सैयद ज़की हैदर- हैड ऑफिस :- एफ19/4 सेकेंड फ्लोर नफीश रोड जामिया नगर दिल्ली- 110025., सम्पर्क सूत्र :- 9911371802, 9810383593
जितेन्द्र कुमार बिस्वाल ब्यूरो चीफ उड़ीसा/ गोविंद कनोडिया/ पटना/ सैय्यद यूसुफ अली नक़वी-पॉलिटिकल एडिटर। ई-मेल:- dailyloktantra@gmail.com

किसी भी प्रकार के विवाद हेतु निपटारे के लिए केवल दिल्ली न्यायालय ही मान्य होगी।
नोट- किसी भी समाचार/आलेख पर दावा प्रति दावा/आपत्ति समाचार प्रकाशन के 15 दिनों के अन्तराल तक ही मान्य होगा। समाचार पत्र में प्रकाशित आलेख से संपादक/प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

क्षेत्रीय कार्यालय अनवार मंजिल नया टोला गंज नंबर 01 बेतिया/ बिहार/ पिन नंबर 84 5438/>> संवाददाता, सना खान/(डॉ. अमानुल हक) स्थानीय संपादक/बिहार)